सत्यमेव जयते

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

वन्दे मातरम्

अर्धवार्षिक हिंदी गृह - पत्रिका

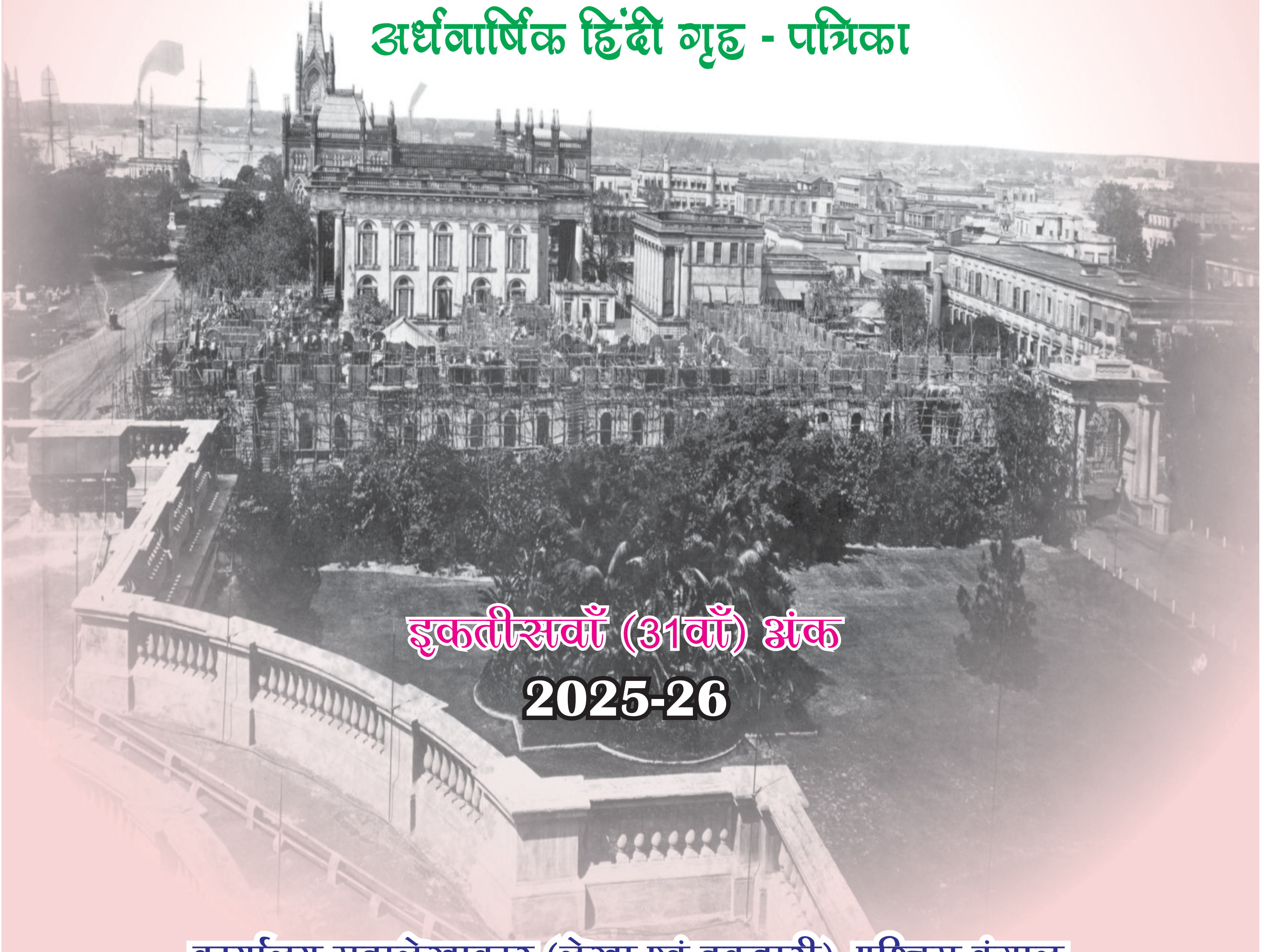

इकतीसवाँ (31वाँ) अंक

2025-26

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल,
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता- 700 001

ऐतिहासिक ट्रेजरी बिल्डिंग्स के एजी बंगाल कार्यालय परिसर में भारतीय लेखापरीक्षा &
लेखा विभाग के प्रमुख भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री के. संजय मूर्ति, विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ।

सत्यमेव जयते

हिन्दी गृह - पत्रिका

‘वन्दे मातरम्’

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अर्धवार्षिक हिन्दी गृह-पत्रिका 'वन्दे मातरम्'

इकतीसवाँ (31 वाँ) अंक

(2025-26)

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता– 700 001

पत्रिका परिवार

संरक्षक

श्री अनिंघ दासगुप्ता, महालेखाकार

परामर्शदातृ समिति

श्रीमती शैलजा खरे
वरिष्ठ उप महालेखाकार
(प्रशासन)

श्री शम्भु दयाल
उप महालेखाकार (निधि)

श्री रितेश कुमार
उप महालेखाकार
(पेंशन, लेखा एवं वीएलसी)

श्री रेबती रंजन पोद्दार
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

संपादक

श्री अरुण कुमार, सहायक निदेशक (राजभाषा)

सह-संपादक

श्री आशीष कुमार, कनिष्ठ अनुवादक

सहायक

श्री अतुल कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

श्री राकेश भारती
वरिष्ठ अनुवादक

श्री अमित कुमार
वरिष्ठ लेखाकार

श्री सचिन प्रसाद
कनिष्ठ अनुवादक

श्रीमती सुनीता राउत, एमटीएस

रचनाकारों के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है क्योंकि वे उनके निजी विचार होते हैं।

श्री अनिंद्य दासगुप्ता
महालेखाकार
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक), पश्चिम बंगाल

संदेश

हिंदी गृह-पत्रिका 'वन्दे मातरम्' के विगत 30 वें अंक की भाँति 31वाँ अंक भी राजभाषा हिंदी के प्रति सभी कार्मिकों की निष्ठा को प्रदर्शित करता है। इस अंक में शामिल रचनाओं के अनुशीलन से ये बात स्पष्ट होती है कि परस्पर सहयोग के माध्यम से कार्यालय में राजभाषा हिंदी में कामकाज को राजभाषा विभाग और मुख्यालय की अपेक्षानुसार व्यवहार में लाया जा सकता है।

इस अंक की रचनाएँ अलग-अलग व्यक्तिगत अनुभवों, सामाजिक पहलुओं और वर्तमान परिवेश की जटिलताओं को सामासिक रूप से प्रस्तुत करती हैं। 'वन्दे मातरम्' के 31 वें अंक के प्रकाशन हेतु सभी रचनाकारों और सम्पादक-मंडल को ढेर सारी बधाई।

आशा करता हूँ कि ये अंक राजभाषा हिंदी की प्रगति में सहायक सिद्ध होगा। आगामी अंकों की उत्कृष्टता हेतु आप सभी की टिप्पणियों और सुझावों का स्वागत है।

सभी को शुभकामनाएँ!

अनिंद्य दासगुप्ता
महालेखाकार

श्रीमती शैलजा खरे
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक.), पश्चिम बंगाल

संदेश

कार्यालय की हिंदी गृह-पत्रिका 'वन्दे मातरम्' के 31वें अंक का प्रकाशन राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में कार्यालय के कार्मिकों की सहभागिता से संभव हो सका है। भारतीय संस्कृति की विरासत में हिंदी भाषा एवं साहित्य का एक महत्वपूर्ण स्थान है।

राजभाषा हिंदी के उत्तरोत्तर उन्नयन में 'वन्दे मातरम्' के 31वें अंक का प्रकाशन एक सराहनीय प्रयास है। आशा है कि यह अंक भी राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन को गति देगा।

पत्रिका को राजभाषा के प्रति अधिक केंद्रित और उत्कृष्ट बनाने के लिए आप सभी पाठकों की टिप्पणियों और सुझावों का हार्दिक स्वागत है।

सभी को बधाई और शुभकामनाएँ।

शैलजा

शैलजा खरे
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

श्री शम्भु दयाल
उप महालेखाकार (निधि)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक़दारी), पश्चिम बंगाल

संदेश

अत्यंत ही हर्ष का विषय है कि कार्यालय की हिंदी गृह-पत्रिका 'वन्दे मातरम्' के 31वें अंक का प्रकाशन हो रहा है। हिंदी की सेवा एक देश सेवा है। इस दिशा में किया गया कोई भी कार्य देश को गौरवान्वित होने की दिशा में एक कदम है।'वन्दे मातरम्' पत्रिका का प्रकाशन इस दिशा में एक छोटा सा कदम है।

हिंदी भाषा अपने आदिकाल से ही देश की सांस्कृतिक एकता और सामाजिक सौहार्द्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती आई है। भक्तिकाल के महान संत जैसे कबीर, सूरदास, तुलसीदास आदि की वाणी को धारण करने वाली हिंदी आज पूरे विश्व में भारतीय संस्कृति और सभ्यता की पहचान बन चुकी है।

हिंदी भाषा ने स्वाधीनता आंदोलन के दौरान देश के कोने-कोने में संपर्क भाषा का कार्य किया जिससे राष्ट्रीय आकांक्षाओं को पूरा करने में महत्वपूर्ण सहयोग मिला। इस दौरान प्रायः सभी स्वतंत्रता सेनानियों ने पत्रकारिता और साहित्य के माध्यम से हिंदी भाषा की अखिल भारतीय भूमिका को सशक्त किया। यही कारण था कि संविधान सभा ने भारत गणतंत्र की राजभाषा का गौरवशाली और जिम्मेदार पद हिंदी भाषा को प्रदान किया।

सुखद अनुभूति हो रही है कि 'वन्दे मातरम्' के 31वें अंक के लिए प्राप्त सभी रचनाएँ अलग-अलग सामाजिक परिप्रेक्ष्य को पाठकों के सम्मुख लाती हैं। ये सभी रचनाएँ हमारे जीवन-अनुभव से सार्थक संवाद करती हैं। 'वन्दे मातरम्' के ३१वें अंक के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मण्डल और सक्रिय भूमिका के लिए सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ।

आप सभी पाठकों की टिप्पणियों और सुझावों का हार्दिक स्वागत है जिससे पत्रिका के आगामी अंक अधिक समृद्ध और गुणवत्तापूर्ण बन सकें।

सभी को बधाई और शुभकामनाएँ।

शम्भु दयाल
उप महालेखाकार (निधि)

अरुण कुमार
सहायक निदेशक (राजभाषा)

संपादकीय

सम्पादक की कलम से...

प्रसन्नता की बात है कि हमारे कार्यालय की अर्धवार्षिक हिंदी गृह-पत्रिका 'वन्दे मातरम्' के 31 वें अंक का प्रकाशन हमारे कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रयास से किया जा रहा है। राजभाषा के प्रचार-प्रसार एवं इसके उत्तरोत्तर विकास में पत्रिका का महत्वपूर्ण योगदान है। अधिकारी एवं कर्मचारी सरल एवं सुबोध भाषा में स्वरचित रचना का प्रयास करते हैं। इस प्रकार उनमें सृजनात्मक क्षमता बढ़ती है और वे अपने दैनिक कार्यालयीन कार्य में अपनी लेखनी क्षमता का प्रयोग करते हैं। राजभाषा विभाग द्वारा विकसित अनुवाद टूल कंठस्थ-2.0 का भी अधिकाधिक उपयोग किया जा रहा है। हमारे कार्य़ालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपने आप में गर्व महसूस होता है कि हम हिंदीतर भाषी क्षेत्र में होकर भी वर्ष में गृह-पत्रिका के दो अंक का सतत प्रकाशन करने में सफल हो पा रहे हैं।

पत्रिका के प्रकाशन में राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष, सभी सदस्यों एवं सहायक सम्पादक एवं हमारे राजभाषा सहयोगियों का परामर्श उल्लेखनीय रहा है। पत्रिका में अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा सरल एवं सुबोध भाषा में स्वरचित विविध प्रकार की रचनाएँ शामिल की गई हैं। इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि राजभाषा के प्रचार-प्रसार में पत्रिका का अतुलनीय योगदान है। अधिकारियों एवं कर्मचारियों में सृजनात्मक क्षमता विकसित करने में, कुछ लिखने के लिए प्रेरित करने में पत्रिका का निश्चित रूप से महत्वपूर्ण स्थन है।

कोलकाता नहीं, कलकत्ता एक ऐसा शहर है जहाँ आज भी विदेशी शासकों द्वारा निर्मित अनेक पुराने भवन, देखने को मिलते हैं। हमारा कार्यालय भवन भी उन्हीं भवनों में से एक है जो आज भी ट्रेजरी बिल्डिंग्स के नाम से जाना जाता है। इसी संदर्भ में वर्तमान अंक के आवरण पृष्ठ पर निर्माणाधीन ट्रेजरी बिल्डिंग्स एवं इसके आस-पास के पुराने दृश्यों को प्रमुखता से सम्मिलित किया गया है जो आज भी कलकत्ता के विक्टोरिया मेमोरियल में देखा जा सकता है। गृह-पत्रिका को सुन्दर एवं आकर्षक बनाने का पूरा प्रयास किया गया है। इसमें रचनाओं का चयन भी विवेकपूर्ण किया गया है। व्याकरणिक शुद्धि का भी पूरा प्रयास किया गया है।

हमारे कार्यालय की स्मारिका के रूप में भी पत्रिका का अतुलनीय स्थान है। पत्रिका आप सभी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। पाठकों के बहुमूल्य सुझाव का हृदय से स्वागत है। पत्रिका इसी तरह अपने प्रगति पथ पर दिनोदिन अग्रसर रहे, हमारी यही कामना है।

जय हिंद, जय भारत।

अरुण

अरुण कुमार
सहायक निदेशक (राजभाषा)

अनुक्रमणिका

क्र.स.	रचना का नाम	रचनाकार का नाम	पदनाम	विधा	पृष्ठ संख्या
1.	एक दास्ताँ: भारत-रूस संबंध	अनिल कुमार	लेखाकार	लेख	1
2.	आइंस्टीन: एक भुलक्कड़ जीनियस	पंकज कुमार	वरिष्ठ लेखाकार	लेख	5
3.	जीवन से भरी तेरी आँखें	रेबती रंजन पोद्दार	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	लेख	7
4.	कभी धूप कभी छाँव	आस्था गुप्ता	लेखाकार	कहानी	10
5.	ठहरी हुई कश्तियाँ	आशीष कुमार	कनिष्ठ अनुवादक	कहानी	13
6.	अधूरी ख्वाहिशें	धनेश कुमार	डी.ई.ओ.	कहानी	17
7.	राजस्थान यात्रा	सुभाष चन्द्र मंडल	लेखाकार	यात्रा-वृत्त	20
8.	नेपाल यात्रा	कौशल कुमार	सहायक लेखा अधिकारी	यात्रा-वृत्त	25
9.	जलवायु परिवर्तन: समस्या और समाधान	सोनू कुमार-II	सहायक लेखा अधिकारी	लेख	30
10.	आम जनमानस और पर्यावरण	सुमीत कुमार वर्णवाल	लेखाकार	लेख	34
11.	भारत की वैश्विक अंतरिक्ष में बढ़ती भूमिका	अंशुबाला	सहायक लेखा अधिकारी	लेख	36
12.	लाइक्स की दुनिया	सुस्मिता सरकार	वरिष्ठ लेखाकार	कहानी	39
13.	अम्मा ताई	आरती शर्मा	लेखाकार	कहानी	42
14.	अपरिचित	तापसी आचार्य बसाक	सहायक लेखा अधिकारी	कहानी	46
15.	पितृत्व की यात्रा: एक परिवर्तनकारी अनुभव	मो. सरफराज अहमद	लेखाकार	लेख	49
16.	गलत सूचनाओं का खतरा: एक गंभीर समस्या	अतुल कुमार	सहायक लेखा अधिकारी	लेख	51
17.	क्या इतना बुरा हूँ मैं माँ	श्रीजिता नाग	सहायक लेखा अधिकारी	कहानी	54
18.	संयोग	सचिन प्रसाद	कनिष्ठ अनुवादक	कहानी	57
19.	कर्म लौट कर आया	गौरव कुमार	लेखाकार	कहानी	60
20.	साइबर फ्रॉड से बचना है, तो शक करना सीखिए	अनुज साव	लेखाकार	लेख	63
21.	नचिकेता-यम संवाद	संजय कुमार	डीईओ	लेख	66
22.	बेरोजगारी- एक अभिशाप	शिवम सिन्हा	आशुलिपिक	निबंध	68
23.	मायका	राकेश भारती	वरिष्ठ अनुवादक	कहानी	71
24.	भरोसा	अमित कुमार	वरिष्ठ लेखाकार	कहानी	75
25.	दीघा जगन्नाथ धाम के दर्शन	सुनीता राउत	एमटीएस	यात्रा-वृत्त	78
26.	जीवन एक यात्रा, शरीर एक वाहन	नीरज कुमार पाण्डेय	सहायक लेखा अधिकारी	कविता	80
27.	आपके पत्र				81-82

एक दास्ताँ: भारत-रूस संबंध

अनिल कुमार, लेखाकार

मित्रता एक महत्वपूर्ण बंधन है, जो हमारे जीवन को समृद्ध बनाता है। मित्रता में विश्वास, सहयोग और समर्थन की भावना होती है जो जीवन की चुनौतियों का सामना करने में मदद करती है। मित्रता हमें संतुष्टि और खुशी प्रदान करती है और जीवन को अधिक अर्थपूर्ण बनाने में मदद करती है। भारत का दूसरे देशों के साथ अच्छे संबंधों का वर्षों पुराना इतिहास रहा है। भारत का प्रयास रहा है कि दूसरे देशों के साथ मित्रतापूर्ण भाव रखते हुए, आपसी सहयोग के माध्यम से सबका साथ, सबका विकास सुनिश्चित करना, एक-दूसरे के साथ व्यापार-नीति को बढ़ावा देना इत्यादि जो सभी को विकास के पथ पर अग्रसर करे। भारत का उद्देश्य है– आत्मनिर्भर, स्वावलंबी, सक्षम और सामर्थ्यवान बनना।

रूस भारत का प्रमुख मित्र देश है। रूस के साथ अच्छे संबंध बनाए रखने में भारत ने कभी कोई कमी नहीं की है। भारत द्वारा किए गए प्रयासों का सकारात्मक प्रयास भी दिखाई पड़ता है। भारत-रूस द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत बनाने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग करते हैं। इन संबंधों की शुरूआत सोवियत संघ के दौर से ही हो गई थी जो कि बाद में रूस के साथ भी जारी रहा। भारत रूस को एक महत्वपूर्ण रणनीतिक भागीदार मानता है। दोनों देश अंतरराष्ट्रीय मंचों पर एक दूसरे का समर्थन करते हैं। भारत के रक्षा-आयात का सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता रूस ही है। भारत की सैन्यशक्ति का 60% हिस्सा रूसी उपकरणों से निर्मित है। भारत और रूस नियमित रूप से सैन्य अभ्यास भी करते हैं। दोनों देशों के बीच वैज्ञानिक और तकनीकी सहयोग भी है। संस्कृति, शिक्षा और कला के क्षेत्र में भी दोनों देशों का व्यापक सहयोग होता है।

भारत और रूस के आपसी संबंध परस्पर लाभ और सहयोग पर आधारित हैं। आपसी सहयोग को बढ़ाने के लिए समय-समय पर दोनों देशों ने कई पहलें की हैं और भविष्य में इसमें वृद्धि की संभावना है। दोनों देश के आपसी सहयोग ने वैश्विक स्थिति को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। रूस भारतीय विदेश नीति के सबसे भरोसेमंद साझीदार की भूमिका रखता है। वर्ष 2000 में रूस के राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन की भारत यात्रा से दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों में तेजी देखने को मिली। आज भारत-रूस रक्षा, नागरिक सहयोग, परमाणु ऊर्जा, अंतरिक्ष, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, हाइड्रोकॉर्बन, व्यापार एवं निवेश आदि जैसे क्षेत्रों में व्यापक सहयोग करते हैं।

भारत-रूस सहयोग के प्रमुख क्षेत्र

1. **वार्षिक शिखर सम्मेलन:** भारत के प्रधानमंत्री और रूसी संघ के राष्ट्रपति के बीच वार्षिक शिखर सम्मेलन व्यवस्था पारस्परिक संबंधों की सबसे महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। इसकी बैठकें बारी-बारी से दोनों देशों में आयोजित की जाती हैं। वर्ष 2000 से अब तक 10 शिखर सम्मेलन आयोजित किए जा चुके हैं जिसने दोनों देशों के संबंधों को सशक्त बनाया है।

2. **रक्षा सहयोग:** भारत, रूस के रक्षा संबंधित उपकरणों और प्रणाली का सबसे बड़ा आयातक है। अब इस क्षेत्र का सहयोग क्रेता-विक्रेता से आगे बढ़कर निर्माण सहयोग एवं तकनीक स्थानांतरण तक पहुँच चुका है। इसमें रक्षा डिजाइन से संबंधित प्रौद्योगिकी का उत्पादन व विपणन आदि शामिल है।

3. **परमाणु ऊर्जा:** इस क्षेत्र में रूस लंबे समय से भारत का विश्वसनीय भागीदार है। कुडनकुलम परमाणु ऊर्जा परियोजना एक ज्वलंत उदाहरण है। वर्ष 2009 में भारत सरकार ने हरिपुर (पश्चिम बंगाल) को रूसी सहयोग से नए परमाणु ऊर्जा स्थल के रूप में विकसित करने का निर्णय लिया है। मार्च 2010 में रूसी राष्ट्रपति पुतिन की भारत

यात्रा के दौरान शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए परमाणु ऊर्जा सहयोग हेतु समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए थे।

4. अंतरिक्ष: भारत ने रूस के साथ विभिन्न अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी आधारित सहयोग परियोजनाओं पर मिलकर काम किया है। भारत की मानवरहित अंतरिक्षयान परियोजना, चंद्रयान मिशन, मानव मिशन परियोजना और भारत-रूस छात्र उपग्रह आदि जारी परियोजनाओं में रूस का निरंतर सहयोग प्राप्त हो रहा है

आज हमें इस बात का गर्व है कि हम विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हैं। मई 2025 की रिपोर्ट के अनुसार हम जापान से भी आगे निकल गए हैं। उम्मीद है कि भारत जल्द ही जर्मनी को पीछे छोड़कर दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा।

वर्ष 1971 के भारत-पाक युद्ध में भारत की जीत ने भारत-सोवियत संघ के सहयोग के लिए रास्ते खोल दिए। इस युद्ध में सोवियत संघ ने दृढ़तापूर्वक भारत का साथ दिया। इससे दोनों देशों के आपसी सहयोग का आधार और अधिक व्यापक बन गया। यह वह युद्ध था जब भारत का साथ हर महाशक्ति ने छोड़ दिया था। अमेरिका और यूके जैसी महाशक्तियाँ खुलकर पाकिस्तान के पक्ष में थीं। भारत के रणनीतिक सहयोगी रूस ने जिस तरह से भारत का साथ दिया उसकी मिसाल आज भी दी जाती है। वर्तमान में जारी रूस-यूक्रेन युद्ध में भारत की सुलझी हुई कूटनीतिक दृष्टि ने रूस के साथ संबंधों को प्रगाढ़ किया है।

वर्ष 1971 के युद्ध में भारत के पास बीस हजार टन क्षमतावाला आईएनएस विक्रांत वायुयान वाहक था जिसपर 20 लड़ाकू विमान ही थे। इसी दौरान ब्रिटेन ने भी अरब सागर में अपना एयरक्राफ्ट करियर एचएमएस ईगल तैनात कर दिया था। अमेरिका और ब्रिटेन की योजना भारत को बंगाल की खाड़ी और अरब सागर की ओर से घेरने की थी। ऐसे में चीन के हमले की आशंका भी बन गई थी। भारत को अब रूस (तत्कालीन सोवियत संघ) से ही उम्मीद थी। भारत ने रूस से अपने सुदृढ़ रक्षा-सहयोग पर भरोसा किया। रूस ने परमाणु हथियारों से लैस बेड़े को 3 दिसंबर 1971 को ब्लाडीवास्ताक से रवाना कर दिया। इस बेड़े में अच्छी संख्या में परमाणु जहाज, मिसाइलें और पनडुब्बियाँ थीं। रूस से मिली इस सहायता ने अमेरिका और ब्रिटेन को चौंका दिया। रूस ने ब्रिटिश कमांडर एडमिरल डिमॉन गॉर्डन का एक संदेश इंटरसेप्ट किया था जिसमें वह 7 वें बेड़े के कमांडर से कह रहे थे- "सर, हमारे आने में देरी हो गई है। आस-पास रूसी परमाणु पनडुब्बियाँ हैं और कई युद्धक विमान मौजूद हैं"। ब्रिटिश जहाजों को मेडागास्कर में रोक दिया गया और अमेरिकी टास्कफोर्स को बंगाल की खाड़ी में पहुँचने का अवसर ही नहीं मिला।

रूस की इस सहयोग की भावना ने न केवल भारत को सुरक्षा प्रदान की बल्कि यह भी दर्शाया कि भारत वैश्विक स्तर पर अकेला नहीं है। 02 अप्रैल 1971 को राष्ट्रपति पॉडगॉर्नी ने भारत को संदेश जारी किया कि भारत के प्रति रूस का रवैया रूखा नहीं हैं बल्कि वह चाहता है कि पूर्वी पाकिस्तान (वर्तमान बांग्लादेश) में नरसंहार तुरंत समाप्त हो। पूर्वी पाकिस्तान की स्थिति सोवियत संघ के लिए चिंताजनक है। सोवियत संघ के लोग इस तरह की हिंसक घटनाओं के कारण होने वाली असंख्य मौतों, कष्टों और अभावों से बहुत चिंतित हैं। वे बहुमत प्राप्त मुजीबुर्रहमान और अन्य नेताओं की गिरफ्तारी और उत्पीड़न का विरोध करते हैं। पाकिस्तानी लोगों के लिए मुश्किल भरे इन दिनों में हम सच्चे मित्र बिना कुछ कहे नहीं रह सकते। हम आश्वस्त हैं कि पाकिस्तान में हाल में उपजी जो जटिल समस्याएं हैं उनका समाधान राजनीतिक रूप से किया जाना चाहिए। दमन और हिंसा से समस्याओं का समाधान और भी मुश्किल हो जाएगा। और इससे पाकिस्तानी लोगों का हित बहुत बुरी तरह प्रभावित हो सकता है। हम सोवियत संघ की ओर से आपको संबोधित करते हुए अपील करते हैं कि पूर्वी पाकिस्तान में रक्तपात और दमन को रोकते हुए शांतिपूर्ण राजनीतिक समाधान करें। इसी में सभी पाकिस्तानी लोगों का हित निहित है। उत्पन्न हुई समस्याओं का शांतिपूर्ण समाधान सोवियत संघ के लोगों द्वारा स्वीकार किया जाएगा। आपसे अपील करते समय हम मानवाधिकारों की सार्वभौम घोषणा में दर्ज सामान्य मानवीय सिद्धांतों और पाकिस्तान की मैत्रीपूर्ण जनता के हितों के प्रति चिंतित थे। हम आशा करते हैं कि आप उन

उद्देश्यों की सही व्याख्या करेंगे। हमारी हार्दिक इच्छा है कि पूर्वी पाकिस्तान में यथाशीघ्र शांति और न्याय स्थापित हो। यह वक्तव्य भारत और रूस के उस संयुक्त प्रयास को दर्शाता है जिसने बांग्लादेश की स्वाधीनता को निर्णायक समर्थन दिया।

2025 में कश्मीर के पहलगाम में हुए पाकिस्तान प्रायोजित त्रासदीपूर्ण आतंकी हमले के दौरान भारत को रूस का समर्थन मिला। रूसी राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन ने पहलगाम में हुए आतंकी हमले की कड़ी निंदा करते हुए मारे गए निर्दोष लोगों के प्रति संवेदना व्यक्त की। उन्होनें आतंकवाद के विरुद्ध लड़ाई में भारत के प्रयासों के प्रति एकजुटता व्यक्त की। इस हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान के प्रति कड़ी कार्रवाई करते हुए सिंधु जल समझौते को स्थगित कर दिया है, साथ ही पाकिस्तानी नागरिकों को जारी होने वाले वीजा को भी रद्द कर दिया है। भारत में पाकिस्तानी दूतावास को बंद करने और पाकिस्तानी राजनयिकों को 48 घंटे के भीतर भारत छोड़ने का निर्देश दिया गया। विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने कहा- इस आतंकवादी हमले की गंभीरता को समझते हुए सुरक्षा मामलों की कैबिनेट समिति ने निम्नलिखित निर्णय लिया है-

1. 1960 की सिंधु जल संधि को तत्काल प्रभाव से स्थगित किया जाएगा।

2. एकीकृत चेकपोस्ट अटारी को तत्काल प्रभाव से बंद कर दिया गया।

3. पाकिस्तानी नागरिकों को सार्क वीजा छूट योजना के तहत भारत की यात्रा करने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

इस आतंकी हमले के प्रतिकार में भारत ने 'आपरेशन सिंदूर' के तहत कड़ी कार्रवाई करते हुए पाकिस्तान और पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में कई आतंकी ठिकानों पर लक्षित हवाई हमले करते हुए उन्हें नष्ट कर दिया। इस कार्रवाई में कई आतंकियों को भी निशाना बनाया गया। हमले में बहवालपुर, मुरीदके, और सियालकोट जैसे शहरों में कुख्यात आतंकी संगठनों लश्करे-तैयबा और जैशे-मोहम्मद आदि के ठिकानों को निशाना बनाया गया। 'आपरेशन सिंदूर' नाम इस हमले में मारे गए परिवारों के प्रति श्रद्धांजलि और भारतीय प्रतिरोध को दृढ़ता से उजागर करता है।

एक ओर पाकिस्तान और चीन जैसे देश भारत के प्रति दुराग्रह रखती हैं वहीं दूसरी ओर रूस अपनी सच्ची दोस्ती निभा रहा है। वर्ष 2025 में रूस ने फिर साबित किया कि वह भारत का एक सच्चा साथी है। रूस ने वर्षों पुराने भरोसे को कायम रखा। रूस के सहयोग और समर्थन ने दर्शाया कि वह आतंकवाद के विरोध में भारत के प्रयासों के साथ दृढ़तापूर्वक खड़ा है। पाकिस्तान को भी आभास है कि वह प्रत्यक्ष युद्ध नहीं जीत सकता इसलिए आतंकवाद और चरमपंथ को बढ़ावा देकर भारत को अस्थिर करने का प्रयास करता है लेकिन हर बार उसे पराजित और अपमानित होना पड़ा है।

यह स्पष्ट है कि रूस भारत का परीक्षित साझीदार और सहयोगी रहा है। भारत-रूस संबंध, भारतीय विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण स्तम्भ रहा है। भारत और सोवियत संघ के औपचारिक संबंधों की शुरूआत अप्रैल 1947 में हुई थी जब भारत स्वाधीनता की अंगड़ाई ले रहा था। कई दशकों के इस संबंध में सहयोग के साथ तनाव के दौर भी रहे हैं। 1947-55 के दौरान स्टालिन शासन भारतीय स्वाधीनता आंदोलन को संदेह की दृष्टि से देखता था। 1955 में प्रधानमंत्री नेहरू की सोवियत यात्रा से भारत और रूस के संबंधों में तेजी आई। भिलाई और बोकारो स्टील प्लांट की स्थापना इन यात्राओं का प्रत्यक्ष परिणाम था।

शीतयुद्ध के दौर में 1955-91 के दौरान जैसे संबंध विकसित हुए उसने सोवियत संघ को भारत का सबसे बड़ा हथियार आपूर्तिकर्ता बना दिया। रूस ने भारत-चीन युद्ध और भारत-पाक युद्ध के दौरान महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1971 की संधि दोनों देशों के बीच ऐतिहासिक सबंधों को महत्वपूर्ण आकार देती है। शीतयुद्ध की समाप्ति और सोवियत संघ के विघटन के बाद बदलती आर्थिक चुनौतियों और वैश्विक परिदृश्य के कारण भारत-रूस संबंधों थोड़े कमजोर हुए लेकिन 1993 की संधि ने सहयोग को नए सिरे से परिभाषित किया। वर्ष 2000 में भारत-रूस ने रणनीतिक साझेदारी पर घोषणापत्र के हस्ताक्षर से द्विपक्षीय संबंधों को नया आयाम दिया। इस घोषणापत्र ने राजनीति, सुरक्षा, रक्षा, व्यापार, अर्थव्यवस्था,

विज्ञान, प्रौघोगिकी और संस्कृति में सहयोग को बढ़ावा दिया।

भारत में टी-90 टैंक, एसयू-30 एमकेआई विमानों का लाइसेंस प्राप्त उत्पादन, एस-400 मिसाइल रक्षा प्रणाली, मिग-29 विमान उन्नयन समझौते, ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल का संयुक्त विकास और उत्पादन, मेक इन इंडिया पहल के तहत एके-203 राइफल उत्पादन के लिए भारत-रूस राइफल प्राइवेट लि. की स्थापना आदि में रूस की महपूर्ण भूमिका है।

भारत और रूस के अच्छे संबंधों की दास्ताँ प्रशंसनीय है। यह आशा करना कि भविष्य में भी दोनों देशों का सबंध घनिष्ठ और मित्रतापूर्ण रहेगा, गलत नहीं है। हम भारतवासी उम्मीद करते हैं कि जल्दी ही रूस के साथ मिलकर भारत आतंकवाद का खात्मा करते करते हुए विकसित राष्ट्र बन जाएगा।

*****

"राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है।"
- महात्मा गांधी

आइंस्टीन: एक भुलक्कड़ जीनियस

पंकज कुमार, वरिष्ठ लेखाकार

महान वैज्ञानिक, गणितज्ञ व दार्शनिक अल्बर्ट आइंस्टीन का हमारे देश से रिश्ता इस मायने में प्रगाढ़ रहा है कि वे महात्मा गांधी के मुक्त-कंठ प्रशंसक थे। उन्होंने कहा था कि आने वाली पीढ़ियों का कदाचित यह विश्वास होगा कि महात्मा गांधी जैसा हाँड-माँस का कोई व्यक्ति कभी इस धरती पर आया था। आइंस्टीन के जन्मदिवस (14 मार्च, 1879) को दुनिया के अधिकतर देश 'जीनियस दिवस' के रूप में मानते हैं। उन्होंने निरंतर चिंतन-मनन और शोध करके दुनिया को ऐसे सिद्धांत दिए जिन्होंने दुनिया की दिशा बदल दी। ब्रह्मांड के बारे में हमारे ज्ञान को कल्पना से परे बढा दिया। आइंस्टीन की कई समाजशास्त्रीय स्थापनाएं भी उनकी पहचान का हिस्सा हैं। उदाहरण के लिए उनका मानना था कि कल्पना, ज्ञान से अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि ज्ञान सीमित है जबकि कल्पना दुनिया को घेर लेती है।

दुनिया के बारे में सबसे अबूझ बात यह है कि प्रतिभा की अपनी सीमाएं होती हैं जबकि मूर्खता की कोई सीमा नहीं है। हम अपनी समस्याओं का समाधान उसी सोच से नहीं कर सकते जिस सोच का प्रयोग हमने उन समस्याओं को उत्पन्न करने में किया था। आइंस्टीन को अपने जीनियस होने का कोई घमंड नहीं था। उन्होंने कहा था कि मुझे अपने व्यक्तित्व में इसके अलावा जीनियस होने का कोई लक्षण नजर नहीं आता कि मैं अपनी समस्याओं के साथ उसके समाधान के लिए अधीर हुए बगैर उसके साथ ज्यादा देर तक बना रहता हूँ। मेरे पास यदि किसी समस्या को हल करने के लिए यदि एक घंटा है तो 55 मिनट उसके बारे में और 5 मिनट समाधान के बारे में सोचने पर बिताता हूँ और कोई भी ऐसा करके जीनियस हो सकता है।

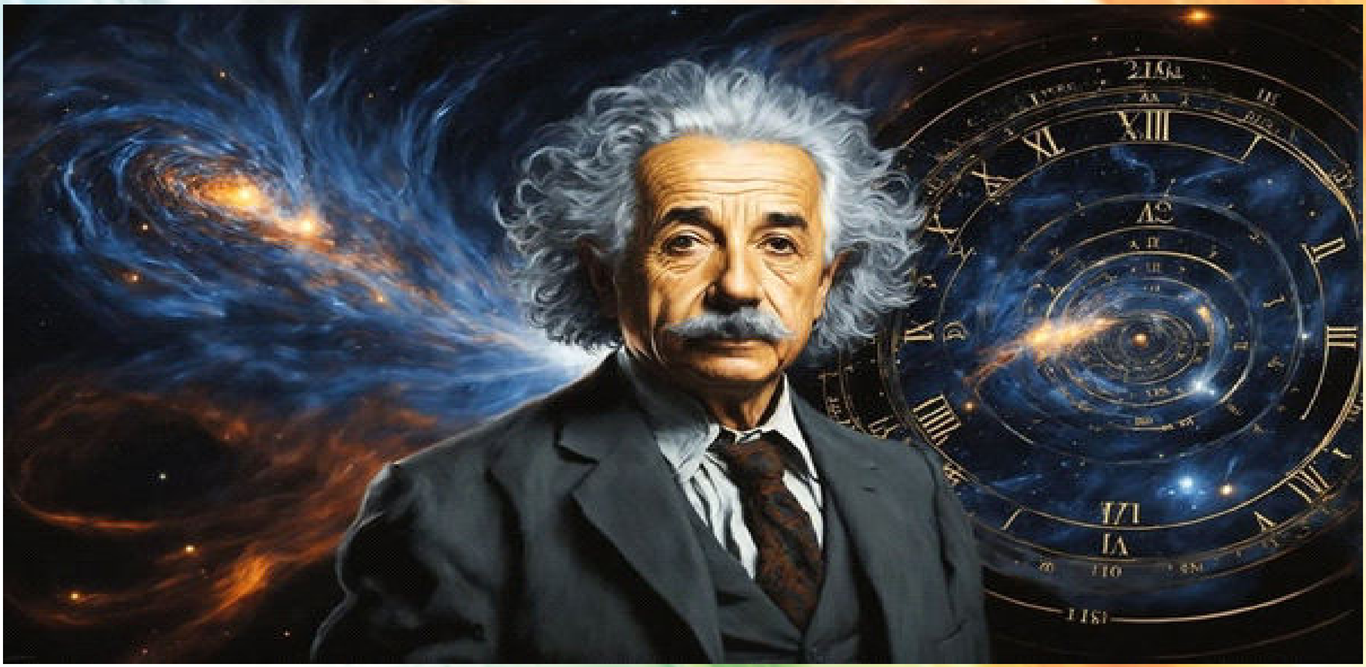

जीनियस कहलाने वालों के बारे में एक आम धारणा है कि उनकी याददाश्त बहुत अच्छी होती है पर आइंस्टीन इसके अपवादस्वरूप बहुत भुलक्कड़ थे, इतने कि एक बार ट्रेन में यात्रा के दौरान वह इसलिए टिकट-परीक्षक को अपना टिकट नहीं दिखा पाए थे कि उन्हें याद ही नहीं रहा कि उन्होंने उसे कहाँ रख दिया है। उन्हें टिकट खोजने में बेचैन देख टिकट-परीक्षक ने कहा कि कोई बात

नहीं, वह उन्हें पहचानता है और उसे विश्वास है कि उन्होंने टिकट खरीद होगा। आइंस्टीन ने बड़ी मासूमियत से उत्तर दिया कि मुझे कैसे पता चलेगा कि मैं कहाँ जा रहा हूँ? भुलक्कड़पन की हद यह थी कि वह लोगों के फोन नंबर भी भूल जाते थे, यहां तक कि अपना खुद का नंबर भी। एक बार किसी ने इसपर आश्चर्य जताया था तो उन्होंने यह कहा कि मैं कोई ऐसी चीज क्यों याद रखूँ जो किताब, नोटबुक में खोजने से मिल सकती है।

एक दिन प्रिन्सटन यूनिवर्सिटी में, जहां वे कार्यरत थे, (1933-1955) से घर लौटते हुए वह टैक्सी में बैठे तो अपने घर का पता ही भूल गए। टैक्सी के ड्राइवर से उन्होंने पूछा कि क्या उसे आइंस्टीन के घर का पता मालूम है? ड्राइवर ने कहा कि उनका घर भला कौन नहीं जानता है? आप चाहें तो मैं उनके घर पहुँचा सकता हूँ। तब उन्होंने बताया कि वे आइंस्टीन हैं और अपने घर का पता भूल गए हैं। ड्राइवर ने उन्हें घर पहुंचाया और उनके बार-बार कहने पर भी किराया नहीं लिया। सरल जीवन-शैली और वेशभूषा भी उनकी एक विशेषता थी। एक बार उनकी पत्नी ने उनसे कहा कि ढंग के कपड़े पहनकर यूनिवर्सिटी जाया करें। इसपर उनका उत्तर था- वहाँ बन-ठनकर भला क्या जाना, वहाँ तो सब वैसे भी जानते हैं कि मैं कौन और क्या हूँ। लेकिन अपने पहले बड़े सम्मेलन में जाने से पहले उनकी पत्नी ने जब उनसे अच्छे कपड़े पहनने को कहा तो उनका जवाब था कि क्या फायदा, वहाँ मुझे कौन जानने वाला बैठा है।

प्रारम्भिक शिक्षण के समय में भी उनकी भुलक्कड़ी के कारण उनके गणित के शिक्षक ने 'लेजी डॉग' की संज्ञा दी थी। कई अन्य लोग उनकी इस कमजोरी का मजाक उड़ाया करते थे। शुरूआती शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात वे एक कॉलेज की प्रवेश परीक्षा में गणित और विज्ञान को छोड़कर सभी विषयों में बुरी तरह फेल हो गए थे। एक बार अध्ययन के प्रति अपनी लगन को जगाने के बाद उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। विज्ञान और गणित की परीक्षाओं की में तो वे बाल्यकाल से ही प्रवीणता प्रदर्शित करते थे।

उनकी दूरदर्शी वैज्ञानिक प्रतिभा का एक बड़ा उदाहरण यह भी है कि स्मार्टफोन और सोशल मीडिया के आगमन से काफी पहले ही वे मानव जीवन पर टेक्नॉलॉजी के बढ़ते असर पर चिंतित थे। उन्हें डर था कि एक दिन ऐसा आएगा जब प्रौद्योगिकी हमारी मानवीय अंतःक्रिया को पीछे छोड़ देगी और दुनिया में मूर्खों की पीढ़ी होगी।

*****

"वास्तव में भारतवर्ष में अंतर-प्रांतीय व्यवहार के लिए उपयुक्त राष्ट्रीय भाषा हिंदी ही है।"

- गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर

जीवन से भरी तेरी आँखें

रेबती रंजन पोद्दार, वरिष्ठ लेखा अधिकारी

इस अंक में मैं उन दो संगीतकारों के बारे में चर्चा करूंगा जो मुंबई की फिल्मी दुनिया में अपनी संगीत-दक्षता और योगदान के लिए प्रसिद्ध हैं। कल्याणजी-आनंदजी की जोड़ी में दो भाई कल्याणजी वीरजी शाह और आनंदजी वीरजी शाह मुंबई की फिल्मी दुनिया के प्रसिद्ध भारतीय संगीतकार थे। कल्याणजी वीरजी शाह का जन्म 30 जून 1928 को एवं देहांत 24 अगस्त 2000 को हुआ था और आनंदजी वीरजी शाह का जन्म 02 मार्च 1933 में हुआ था। वे कच्छ के एक व्यापारी की संतान थे जो कच्छ के कुंडरोड़ी गाँव से बॉम्बे (वर्तमान मुंबई) को स्थानांतरित हो गए थे।

कल्याण जी ने अपनी संगीत-यात्रा एक नए इलेक्ट्रॉनिक वाघयंत्र से प्रारंभ की जिसे क्लेविओलाइन कहा जाता है, जिसे 'नागिन बीन' की धुन के लिए 1954 की फिल्म 'नागिन' में संगीतकार हेमंत द्वारा प्रयोग में लाया गया था और उस बीन को उस समय कल्याणजी ने बजाया था। कल्याणजी ने अपने भाई आनंदजी के साथ 'कल्याणजी वीरजी & पार्टी' के नाम से अपना आर्केस्ट्रा ग्रुप बनाया जिसके द्वारा मुंबई एवं अन्य जगहों पर कई संगीत कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। यह भारत में प्रत्यक्ष संगीत कार्यक्रमों के आयोजन का प्रारम्भिक प्रयास था। मुंबई फिल्म उद्योग में कल्याणजी-आनंदजी का आगमन एक परिवर्तनकारी क्षण था। उस समय हिंदी फिल्म उद्योग पर एस.डी.बर्मन, हेमंत कुमार, मदन मोहन, नौशाद, शंकर-जयकिशन एवं ओपी नैय्यर जैसे दिग्गज संगीत-निर्देशकों का गहरा प्रभाव था और वह समय संगीत की दुनिया का स्वर्ण-युग था। ऐसे दिग्गजों के बीच अपना स्थान बनाना निश्चय ही चुनौतीपूर्ण कार्य था। कल्याणजी-आनंदजी की जोड़ी ने इस चुनौती के बावजूद प्रतिस्पर्धा में सफलता पाई।

अपनी संगीत-यात्रा के लंबे काल में कल्याणजी-आनंदजी ने उस समय के शिखर के गायकों जैसे लता मंगेशकर, आशा भोंसले, मन्ना डे, मुकेश, महेंद्र कपूर, मोहम्मद रफी, किशोर कुमार आदि के लिए बहुत सारे गीतों के लिए संगीत दिया। (1000 से अधिक गीतों के लिए)। इस अंक में मैं उन हजार से अधिक गीतों में से कुछ सुपरहिट गीतों की चर्चा करूंगा जिनका संगीत-संयोजन कल्याणजी-आनंदजी ने किया है।

वर्ष 1965 में प्रदर्शित की गई प्रसिद्ध फिल्म 'जब जब फूल खिले' में कल्याणजी-आनंदजी के संगीत से सजे और आनंद बक्शी द्वारा रचित गीत को लता मंगेशकर ने अपनी आवाज दी थी। वह गीत बहुत ही प्रसिद्ध हुआ। वह गीत था-**ये शमा, शमा है ये प्यार का।**

वर्ष 1967 में राजेश खन्ना एवं बबीता अभिनीत फिल्म 'राज' प्रदर्शित की गई। इस फिल्म में कल्याणजी-आनंदजी के संगीत से सजा और मोहम्मद रफी के द्वारा गाया एक प्रसिद्ध गीत था। हसरत जयपुरी द्वारा लिखा गया यह गीत था - **अकेले हैं चले आओ, जहां हो।**

वर्ष 1968 में प्रदर्शित फिल्म 'उपकार' में कल्याणजी-आनंदजी ने गुलशन बावरा के लिखे दो गानों के लिए संगीत दिया था। इस फिल्म में अभिनेता प्राण, मनोज कुमार और अभिनेत्री आशा पारेख ने अभिनय किया था। फिल्म बहुत हिट हुई।

फिल्म का एक गीत महेंद्र कपूर ने गाया था- **मेरे देश की धरती सोना, उगले-उगले हीरे मोती, मेरे देश की धरती।** https://www.youtube.com/watch?v=-5ef7epnR60

ii) महान गायक मन्ना डे के स्वर में गाया गया गीत **'कसमें वादे प्यार वफ़ा सब, बातें हैं बातों का क्या'** ने फिल्म को एक अलग ही ऊंचाई पर पहुँचा दिया था।

वर्ष 1968 में कल्याणजी-आनंदजी के संगीत संयोजन में मुकेश द्वारा गाया गया फिल्म 'सरस्वती चंद्र' का एक गीत बहुत ही लोकप्रिय हुआ। वो गीत है- **चंदन सा बदन, चंचल चितवन।**

वर्ष 1968 में ही प्रदर्शित फिल्म 'हसीना मान जाएगी' में कल्याणजी-आनंदजी के संगीतबद्ध किए गए युगल-गीत को मोहम्मद रफी और लता मंगेशकर ने गाया था। वह गीत था- बेखुदी में सनम, उठ गए जो कदम। यह गीत भी बहुत सुपरहिट हुआ।

राजेश खन्ना एवं शर्मिला टैगोर अभिनीत वर्ष 1970 में प्रदर्शित सुपरहिट फिल्म 'सफर' में इंदीवर द्वारा रचित दो गीत बहुत ही लोकप्रिय हुए जिसे किशोर कुमार ने गाया था।

i) **जिंदगी का सफर, है ये कैसा सफर।**

ii) **जीवन से भरी तेरी आँखें..।**

iii) इसी फिल्म का एक हिट गीत लता मंगेशकर ने गाया था- **हम थे जिनके सहारे।** कल्याणजी-आनंदजी के संगीत ने इन गानों को जीवंत और सुपरहिट बना दिया।

वर्ष 1970 में ही प्रदर्शित फिल्म 'जॉनी मेरा नाम' में देव आनंद और हेमा मालिनी प्रमुख भूमिका में थे। इस फिल्म के लिए इंदीवर द्वारा लिखे गए और कल्याणजी-आनंदजी के संगीतबद्ध निम्नलिखित गाने बहुत प्रसिद्ध हुए।

i) एक था किशोर कुमार द्वारा गाया **'पल भर के लिए कोई हमें प्यार कर ले'**

https://www.youtube.com/watch?v=rXDP6Pe9MPs&list=RDrXDP6Pe9MPs&start_radio=1

ii) और दूसरा था लता मंगेशकर द्वारा गाया **'ओ बाबुल प्यारे..'**

कल्याणजी-आनंदजी के अपने संगीत-संयोजन ने इन गानों को हिट बना दिया।

वर्ष 1970 में ही एक और फिल्म प्रदर्शित की गई जो की बहुत हिट हुई। इस फिल्म 'गीत' में अभिनेता राजेन्द्र कुमार और अभिनेत्री माला सिन्हा प्रमुख भूमिका में थे। फिल्म के लिए आनंद बक्शी ने गीत लिखे और कल्याणजी-आनंदजी ने संगीत दिया। इस फिल्म में मोहम्मद रफी द्वारा गाया गया **'मेरे मितवा, मेरे मीत रे.... आ जा तुझको पुकारे मेरे गीत रे..'** गीत आज भी दिल को भावविभोर कर देता है।

https://www.youtube.com/watch?v=wZaWTjSF2Wg&list=RDwZaWTjSF2Wg&start_radio=1

वर्ष 1970 में एक और फिल्म सुपरहिट हुई जिसमें राजेश खन्ना और मुमताज प्रमुख भूमिकाओं में थे। फिल्म का नाम था सच्चा-झूठा। इस फिल्म के लिए इंदीवर के लिखे गए तीन गीत बहुत लोकप्रिय हुए। इनमें से दो गाने किशोर कुमार और एक मोहम्मद रफी एवं लता मंगेशकर ने गाया था। कल्याणजी-आनंदजी ने इसका संगीत संयोजन किया था।

i) किशोर कुमार का गाया गीत था- **मेरी प्यारी बहनिया, बनेगी दुल्हनिया & दिल को देखो चेहरा न देखो।**

ii) मोहम्मद रफी और लता मंगेशकर द्वारा गाया गीत था- **यूँही तुम मुझसे बात करती हो।**

वर्ष 1973 में कल्याणजी-आनंदजी ने फिल्म 'जंजीर' के लिए संगीत दिया था। इस फिल्म में अभिनेता प्राण, अमिताभ बच्चन और अभिनेत्री जया भादुड़ी ने अभिनय किया था। इस फिल्म के लिए गुलशन बावरा ने गीत लिखे थे। इस फिल्म में मन्ना डे का गाया हुआ एक गीत बहुत लोकप्रिय हुआ था। वह गीत था- यारी है ईमान मेरा

यार मेरी जिंदगी'

इसी तरह वर्ष 1974 भी कल्याणजी-आनंदजी के लिए बहुत ही सफल रहा। इस वर्ष उन्होंने तीन फिल्मों के लिए संगीत संयोजन किया। पहली फिल्म थी 'कोरा कागज', दूसरी 'ब्लैकमेल' और तीसरी 'हाथ की सफाई'।

i) फिल्म 'कोरा कागज' में एम. जी. हशमत द्वारा लिखे गए और किशोर कुमार एवं लता मंगेशकर द्वारा गाए गए गीत लोकप्रिय हुए। लता मंगेशकर ने **'रूठे-रूठे पिया, मनाऊँ कैसे'** और किशोर कुमार ने **'मेरा जीवन कोरा कागज, कोरा ही रह गया'** गीत को अपनी आवाज दी। ये गीत आज भी उतना ही सुपरहिट है और भाव-विभोर करता है।

ii) फिल्म 'ब्लैकमेल' में किशोर कुमार ने **'पल पल दिल के पास, तुम रहती हो'** गीत को अपना स्वर देकर सुपरहिट बना दिया।
https://www.youtube.com/watch?v=AMuRRXCuy-4&list=RDAMuRRXCuy-4&start_radio=1

iii) विनोद खन्ना और सिमी अभिनीत फिल्म 'हाथ की सफाई' में गुलशन बावरा के लिखे गीत को कल्याणजी-आनंदजी ने संगीतबद्ध किया था। मोहम्मद रफी और लता मंगेशकर द्वारा गाया गया **'वादा करले साजना, तेरे बिना मैं ना रहूँ'** गीत सुपरहिट हुआ।

वर्ष 1978, संगीतकारों की इस जोड़ी के लिए सबसे सफल वर्ष रहा। अमिताभ बच्चन अभिनीत दो फिल्में बहुत बड़ी हिट हुईं। वे दो फिल्में थीं- मुकद्दर का सिकंदर और डॉन। इन फिल्मों के सभी गाने बहुत ही लोकप्रिय और हिट हुए।

'मुकद्दर का सिकंदर' फिल्म में किशोर कुमार का गाया हुआ गीत **'रोते हुए आते हैं सब'** और **'ओ साथी रे, तेरे बिना भी क्या जीना'**
https://www.youtube.com/watch?v=Wy6ec9YTO8g&list=RDWy6ec9YTO8g&start_radio=1

ii) एवं डॉन फिल्म का गीत **'अरे दीवानों, मुझे पहचानो'** भी किशोर कुमार ने गाया जो की आज भी लोकप्रिय हैं।

दो युगल-गीत बहुत प्रसिद्ध हुए जिसे किशोर कुमार और लता मंगेशकर ने गाया और कल्याणजी-आनंदजी ने उसके लिए संगीत दिया था। वह गीत था- **सलामे इश्क़ मेरी जान** ('मुकद्दर का सिकंदर') **और जिसका मुझे था इंतजार** (डॉन)।

कल्याण जी-आनंदजी के मनोहर संगीत संयोजन में महान गायक मुकेश के गाए गए निम्नलिखित कुछ गीत बहुत ही सुपरहिट हुए।

i) वर्ष 1965 में प्रदर्शित की गई हिट फिल्म 'हिमालय की गोद में' अभिनेता मनोज कुमार और अभिनेत्री माला सिन्हा ने प्रमुख भूमिका में अभिनय किया था। इस फिल्म में आनंद बक्शी का लिखा हुआ एक गीत बहुत ही लोकप्रिय हुआ- **चाँद सी महबूबा हो मेरी, कब ऐसा मैंने सोचा था**। यह गीत आज भी बहुत लोकप्रिय है।

ii) वर्ष 1971 में सुपरहिट फिल्म 'पूरब और पश्चिम' प्रदर्शित हुई। इस फिल्म में अभिनेता मनोज कुमार और अभिनेत्री शायरा बानो प्रमुख भूमिका में थे। इस फिल्म के गीत इंदीवर ने लिखे थे और संगीत कल्याणजी-आनंदजी ने दिया था। इस फिल्म में मुकेश का गाया गीत **'कोई जब तुम्हारा हृदय तोड़ दे'** बहुत ही लोकप्रिय हुआ। यह संबल भरा गीत आज भी लोकप्रिय है।

iii) वर्ष 1975 में प्रदर्शित सुपरहिट फिल्म 'धर्मात्मा' में गीतकार इंदीवर का लिखा हुआ एक गीत बहुत लोकप्रिय हुआ। इस गीत को मुकेश ने गाया था और कल्याणजी-आनंदजी ने उसका संगीत दिया था वह गीत था- **क्या खूब लगती हो, बड़ी सुंदर दिखती हो।**

फिल्म-जगत और संगीत की दुनिया कल्याणजी-आनंदजी के योगदान की हमेशा ऋणी रहेगी।

*****

कभी धूप कभी छाँव

आस्था गुप्ता, लेखाकार

साल 1990 की बात है। मनोज गाँव में अपने संयुक्त परिवार के साथ रहता था। उसके परिवार में माँ, बाबा और उससे बड़े चार भाई अपने-अपने परिवार के साथ सुखपूर्वक रहते थे। उसके पिता मनीराम जी गाँव के मुखिया थे। मनोज अपने परिवार के साथ खेती-बारी का काम करता था। जमीन जायदाद की कोई कमी नहीं थी। काफी सम्पन्न परिवार था उसका। सभी भाई मेहनती थे। सभी की शादी हो चुकी थी, केवल मनोज ही कुँवारा था। उसकी भाभियाँ उसे अपने बेटे जैसा दुलार करती थीं। उम्र हो जाने के कारण मनोज के पिता अब बीमार चल रहे थे। उनकी इच्छा थी कि इस दुनिया को अलविदा कहने से पहले वो मनोज के भी हाथ पीले करा दें, ताकि वो चैन से अपनी आखिरी साँसें ले सकें। पर उन्हें अपने होनहार बेटे एवं परिवार को जोड़कर रखने वाली लड़की अभी तक मिल नहीं पायी थी।

कुछ दिनों के बाद किसी दूर के गाँव के एक व्यक्ति अचानक उनके घर आए। उनका नाम सुरेश सिंह था। देखने में वो किसी इज़्ज़तदार घर के पढ़े-लिखे व्यक्ति लग रहे थे। सूट-पैंट पहने वो व्यक्ति गाँव की वेश-भूषा से अलग नज़र आ रहे थे। उनको मनोज के पिता ने इज्ज़त से बिठाया और खातिरदारी की और उनके आने का मकसद पूछा। उन्होंने बताया कि वो पीडब्ल्यूडी बिभाग में इंजीनियर हैं और मनोज के परिवार के बारे में काफी तारीफ़ें सुनी थीं, उसी से मनोज के बारे में भी पता चला कि वह अभी शादी के लायक है। इसीलिए वो मनोज के लिए अपनी छोटी बेटी सुमन का रिश्ता लेकर आए थे। ये कह कर उन्होने अपने बैग में से सुमन की तस्वीर निकाली और मनीराम जी को दी। सुमन की तस्वीर देखते ही मनीराम जी के चेहरे पर एक संतुष्टि आ गयी। उन्हें ऐसा लगा कि जैसे उनकी तलाश अब पूरी हुई। उन्होने तस्वीर घर में सभी को दिखाने के लिए भिजवाई। सुरेश जी ने बताया कि सुमन स्नातक में पढ़ाई कर रही है और घर के काम-काज में भी काफी कुशल है। परिवार की एकता की बातों को सुनकर ही वो अपनी बेटी का रिश्ता लेकर यहाँ आए थे। मनीराम जी मन ही मन काफी खुश हो गए। उन्होंने अपने परिवार से इस बारे में मशवरा करने के लिए कुछ समय की इजाजत मांगी। सुरेश जी ने अपने घर का पता देते हुए मनीराम जी को सपरिवार अपने घर आने के लिए आमंत्रित किया और विदा ली।

शाम को जब मनोज घर वापस आया तो भाभियां अपने देवर को छेड़ने लगीं। मनोज को कोई सुमन की तस्वीर ही नहीं दिखा रहा था। सब तस्वीर एक दूसरे को देते जा रहे थे और मनोज को परेशान करके खूब हँस रहे थे। कुछ देर के बाद आखिर मनोज के हाथ तस्वीर लग ही गयी। सुमन देखने में काफी सुंदर थी। अपने परिवार को खुश देखकर मनोज भी काफी खुश हो गया। अब सुमन के घर जाने के दिन का इंतज़ार होने लगा। सभी लोग तैयारियों में लग गए। मनीराम जी सपरिवार सुमन को देखने के लिए आए। सुरेश जी ने उनका स्वागत ज़ोर-शोर से किया। सभी काफी प्रसन्न थे। लेकिन मनोज और सुमन सबसे ज़्यादा प्रसन्न थे। सुमन भी मनोज के सरल स्वभाव से काफी प्रभावित थी। उसने अपने लिए जैसे वर की कल्पना की थी, मनोज वैसा ही था। सभी के मन मिल गए। मनोज के माता-पिता ने सुमन के हाथ में शगुन देकर रिश्ता पक्का कर दिया और सुमन के माता-पिता ने मनोज को शगुन देकर रिश्ते को स्वीकार किया। गाँव के पंडित जी को बुलवा कर शादी की तिथि तय कर ली गयी। शादी की तारीख चार महीने के बाद की थी। वहाँ से विदा लेकर वे सभी अपने घर वापस आ गए।

बेटे की शादी पक्की होने की खुशी में ऐसा लग रहा था मानो मनीराम जी स्वस्थ हो गए थे। खुशी के मारे उनके पैर ज़मीन पर नहीं टिक रहे थे। अब बस वो अपने बेटे की शादी होते देखना चाह रहे थे। सभी ने अपनी-अपनी ज़िम्मेदारी संभाल ली कि किसे क्या काम करना है, शादी की तैयारियों में। भाभियाँ शहर जाकर कपड़े, गहनों की खरीददारी में लग गईं। भाइयों ने शादी की सजावट, खाने-पीने एवं मेहमानों की लिस्ट बनानी शुरू कर दी। घर की आखिरी शादी थी तो गलती से भी किसी भी मेहमान को न्योता देना छूट न जाए

इसलिए किसी गलती की गुंजाइश नहीं थी। धीरे-धीरे शादी का समय नजदीक आ रहा था। इधर सुमन की भी तैयारी चल रही थी। एक तरफ नए घर जाने की खुशी तो दूसरी तरफ अपने मायके से जाने का दुख था लेकिन हर लड़की के जीवन में ऐसा समय आता है जब उसे अपना मायका छोड़ ससुराल जाना पड़ता है। दोनों की शादी का दिन भी आ गया। शादी धूम-धाम से संपन्न हुई। सुमन को पाकर मनोज और उसके घर वाले काफी खुश थे। सुमन भी ऐसा सुखी-सम्पन्न ससुराल पाकर बहुत खुश थी।

धीरे-धीरे दिन बीतते गए। सुमन अपने ससुराल के तौर-तरीकों में काफी अच्छे से ढल गई। इतने लोगों से भरा-पूरा परिवार उसे बहुत अच्छा लगता था, मानो हर दिन एक त्योहार जैसा हो। एक वर्ष के पश्चात सुमन और मनोज को एक सुंदर सी बेटी हुई। सभी लोगों ने घर में लक्ष्मी का स्वागत बड़े धूम-धाम से किया। उसका नाम वर्षा रखा गया। सुमन और मनोज अपनी संतान पाकर फूले नहीं समा रहे थे। प्रसव-अवस्था में सबने सुमन का खूब साथ दिया। ये सब देखकर सुमन ईश्वर का शुक्रिया करते नहीं थकती थी। लेकिन कुछ समय के पश्चात ही मनोज की माता जी का देहान्त हो गया। गाँव में तत्काल इलाज कराने की भी सुविधा नहीं थी, जिससे कोई भी समस्या होने पर पास के शहर जाना होता था। माँ के अचानक गुज़र जाने से सब लोगों में उदासी छा गयी।

सब एक-दूसरे का सहारा बने हुए थे। सबने मिलकर मनीराम जी को संभाला। अब मनीराम जी का सारा दिन अब अपने पोते-पोतियों के साथ ही बीतता था। वो सबको स्कूल ले जाने, ले आने और बाहर के कुछ काम करके अपना दिन बिताया करते थे। मनोज और सुमन की बेटी वर्षा का दाखिला अब स्कूल में हो गया था। वो घर में सभी की प्रिय थी, क्योंकि वह अभी सबसे छोटी थी। एक वर्ष के पश्चात सुमन को एक और बेटी हुई। लेकिन अब सब लोगों में उतनी खुशी नहीं थी। चूँकि मनोज के सभी भाइयों के पुत्र थे। सभी की इच्छा था कि इस बार तो लड़का होना चाहिए, लेकिन लड़की के हो जाने से सभी कहीं न कहीं निराश हो गए थे। गाँव में लड़कियों को बोझ ही समझा जाता था। उनको पढ़ाया-लिखाया ही इसलिए जाता था, ताकि उनकी शादी अच्छे घर में करवा सकें।

वर्षा के बाद पीहू का हो जाना किसी के गले उतर नहीं रहा था। भाभियाँ भी अब सुमन का उतने अच्छे से खयाल नहीं रख रही थीं। लेकिन मनोज खुश था। किसी ने घर में मिठाई भी नहीं लायी, जश्न तो दूर की बात थी। वर्षा पहली संतान थी, इसीलिए सबने उसे खुशी-खुशी अपना लिया, लेकिन दूसरी संतान तो लड़का ही चाहिए था। मनीराम जी अपने घर में फैली इस खटास से वाकिफ थे। वो पीहू को भी उतना ही प्यार करते थे जितना कि बाकी सभी बच्चों को। धीरे-

धीरे सभी घरवालों ने सुमन और मनोज को खुद से जैसे अलग कर दिया। अब भाई भी मनोज को ज़रूरी फैसलों में शामिल नहीं करते थे। भाभियाँ सुमन को अब ताना मारने लगीं थीं। पुत्र ना होने का दोष सुमन को ही दिया जाता था। अब हर बात में सुमन को ये अहसास दिलाया जाता था कि वो उनसे अलग है। वो हर चीज में उनसे कम है। मनीराम जी ने इस बात पर घर में सबसे बात कि लेकिन सभी ने अपने बर्ताव में परिवर्तन की बात को नहीं स्वीकारा। सुमन ने ये बात अपने पिताजी से भी बताई कि कैसे ससुराल में उनका रहना मुश्किल हो गया है। पीहू को कोई पसंद नहीं करता। भाभियों ने अपने बच्चों को भी पीहू के साथ खेलने से माना कर दिया। सब पीहू की उपेक्षा करते थे। अपनी संतान के साथ ऐसा व्यवहार देख कर मनोज और सुमन काफी आहत थे।

इसी बीच मनोज और सुमन ने मनीराम जी से बात करके शहर में शिफ्ट होने की बात की। घर का ऐसा नकारात्मक माहौल देख कर मनीराम जी उन्हे मना नहीं कर पाए। कुछ दिनों के बाद दोनों अपने बच्चों के साथ शहर के लिए रवाना हो गए। सुमन के पिताजी ने शहर में अपनी जान-पहचान की जगह में एक किराए का घर दिलवा दिया। साथ ही मनोज को एक किराने की दुकान खोलने में मदद की। मनोज मेहनत और अनुशासन से अपने व्यवसाय पर ध्यान देने लगा। सुमन अपनी दोनों बेटियों का पालन लाड-दुलार से करने लगी। कुछ समय पश्चात पीहू भी स्कूल जाने लगी। मनोज के पिताजी की तबीयत खराब होने के कारण उन्हे शहर बार-बार आना पड़ता था। मनोज के कहने पर वो अब उसके साथ ही रहने लगे थे। बार-बार आना-जाना उनके लिए कष्टदायी था।

मनीराम जी ने अपनी बहू सुमन को भी कुछ काम कर लेने का सुझाव दिया। उन्हें पता था कि उनकी बहू काफी समझदार और बुद्धिमान है। मनोज ने भी पिताजी की बात का समर्थन किया। सुमन आस-पास किसी नौकरी की तलाश करने लगी। उसे अंग्रेज़ी की अच्छी जानकारी होने के कारण वर्षा और पीहू के स्कूल में ही टीचर की नौकरी मिल गयी। मनोज को सुमन पर बहुत गर्व हो रहा था। दोनों पति-पत्नी अपने बच्चों को अच्छी परवरिश देने के लिए काफी मेहनत कर रहे थे।

मनीराम जी दिन भर मनोज के साथ उसकी दुकान पर बैठते थे

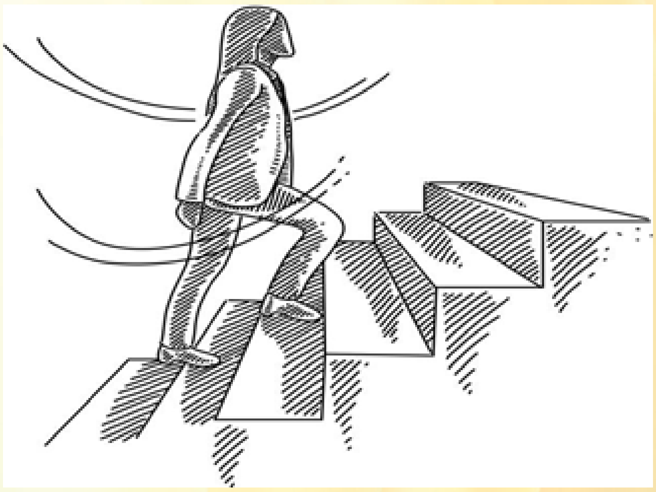

और दोपहर में बच्चों की छुट्टी के बाद उन्हें घर लेकर आ जाते थे। कुछ समय पश्चात ही सुमन भी घर वापस आ जाती थी। मनोज भी दोपहर में घर आकर सुमन का हाथ बँटाता था। उनका हँसता-खेलता परिवार देख मनीराम जी मन ही मन खूब खुश होते थे लेकिन कहीं ना कहीं उन्हें अपने गाँव के परिवार की भी याद आती थी। दिन, महीने और वर्ष ऐसे ही बीतते गए। जब पीहू सात बर्ष की हुई तब मनीराम जी भी दुनिया से चल बसे। उनका क्रिया-कर्म गाँव के पैतृक घर से ही किया गया। उनकी अपने बच्चों को एक साथ देखने की इच्छा उनके साथ ही चली गयी।

इतने वर्ष अपने भाई से अलग रहने के बाद अब मनोज के भाई उसे याद करने लगे थे। मनोज के बच्चों को देखने के बाद उनके मन से सारी कड़वाहट दूर हो गई। अब वो मनोज और सुमन से अपने व्यवहार के लिए माफी मांगना चाहते थे। भाभियाँ भी शर्मिंदा थीं। उन्हें अपने दुर्व्यवहार और सुमन को दिये हुए तानों पर शर्म आ रही थी। मनोज और सुमन ने सभी को फिर से अपना लिया, लेकिन अब वो शहर में अपना छोटा सा बसेरा बसा चुके थे। गाँव वापस आना अब उनके लिए संभव नहीं था। बच्चे भी अब शहर में पढ़ाई कर रहे थे। लेकिन हर छुट्टी पर सुमन और मनोज गाँव आ जाया करते थे। अब सब पहले जैसा हो गया था। अब शायद अपने बच्चों को एक साथ देख कर मनीराम जी की आत्मा को शांति मिली होगी।
पीहू अब अपने पैरों पर खड़े हो गए। दोनों ने खूब मेहनत की। मनोज और सुमन के त्याग और परिश्रम का ही नतीजा था कि वर्षा अब एक डॉक्टर और पीहू एक सीए बन गई। उन्हें अपनी दोनों बेटियों पर गर्व हो रहा था।

*****

ठहरी हुई कश्तियाँ

आशीष कुमार, कनिष्ठ अनुवादक

मयंक तक़रीबन ग़ुस्से में सर झटकता हुआ ऑफिस से बाहर निकल आया था। ऐसा नहीं कि आज जो हुआ वह पहली बार हुआ है। पिछले दो साल से चीजें जैसे हाथ से निकलती ही जा रही हैं। लगभग संज्ञाशून्य स्थिति में उसने झटके से सड़क पार की। जब वह चेतना में होता है तो इसी सड़क को पार करने में वह बहुत सावधानी बरतता है क्योंकि कलकत्ते की भीड़ भरी सड़कों पर भी यूनियन की बसें सरपट भागती जाती हैं। कभी बस का कंडक्टर चिल्लाता है, कभी बगल में चलने वाला कोई राहगीर या साथ में सिगरेट फूंकने वाला साथी टोंक देता है पर आज उसे किसी ने नहीं टोका। वह कब सड़क पार करके बी.बी.डी बाग स्थित लाल दीघी पहुँच गया उसे पता ही नहीं चला......किसी भी सिग्नल की उसने उपेक्षा की। सर में दर्द नहीं है, पेट में कब्ज़ नहीं है और बदन में दर्द नहीं है फिर भी वह बहुत परेशान है। एक क्षण के लिए उसे लगा जैसे कि उसका सर रूई के फाहे जैसा हलका हो गया है और शून्य में विलीन होता जा रहा है।

बीबीडी बाग में लाल दीघी एक ऐतिहासिक छोटा चौकोर तालाब है जिसका प्रबंधन ठीक से नहीं किया जाता है यद्यपि यह शहर की उबासी और सन्त्रासपूर्ण वातावरण, बेतहाशा भागदौड़ से त्रस्त लोगों और रोजगार ढूंढते, अपनी समस्याओं से दो-चार होते बेबस लोगों के तनाव को दूर करने और बिना मतलब की आफ्टर मील वॉक का एक उपयुक्त स्थल सा रहा है। अगल-बगल के कई कार्यालयों के कर्मी, स्कूल बंक करके आए टीनएजर्स, थके हुए मजदूर, हताश वकील और उनके मुवक्किल भी कभी-कभी लाल दीघी पर पहुँचे रहते हैं। कभी-कभी यूरोपीय टूरिस्ट आत्मगौरव की भावना में सीना ताने हुए या फोटोग्राफी करते हुए दिख जाते हैं। अगर सरकार को यह महसूस हो कि इस तालाब का इतना परिवेशीय महत्व है तो वह इसके संरक्षण का प्रयास बढ़ा देती......मयंक जब कभी फुरसत में लाल दीघी जाता था तो, वो भी उसका अपना लम्हा नहीं होता था। एक कस्टमर डीलिंग एजेंट के लिए ऐसी स्थिति तकलीफदेह हो जाती थी लेकिन ऐसी जगहें ही उसकी सो काल्ड जॉब का आधार थीं। उसके ज्यादातर कस्टमर ऐसी जगहों पर मिलते थे। क्रेडिट कार्ड बाँटना, लोन दिलवाना या अकाउंट्स ओपन करके स्कीम से लोगों को जोड़ने का टारगेट उसे पूरा करना होता था। सैलरी क्या होगी, प्रमोशन कब मिलेगा आदि जैसे प्रश्नों के उत्तर उसके टार्गेट्स पूरा करने पर ही निर्भर थे।

चटर्जी उससे रोज उलझता था- तुम इतने भी स्मार्ट नहीं हो मयंक....नॉट इनफ़...सी पास्ल.... हमेशा टारगेट से आगे रहती है....वेरी सून शी विल बी योर बॉस मिस्टर.....। मयंक एक उखड़ी हुई क्रुद्ध मुस्कान होंठों से चिपकाकर रह जाता था। बॉस भी उसे झिड़कियाँ देता था...ऊपर से दो महीने की सैलरी भी नहीं मिली थी। मिस्टर मयंक,...ओ हो, नो टाइटल.. मयंक इज ओके ...और बॉस सिगरेट के छल्ले बनाने में जुट जाता था..। चटर्जी का जलनशील चेहरा देखकर न जाने क्यों मयंक को थोड़ा सुकून मिलता था। ऐसा बंदा जो कि कभी-कभी कल्पना से परे ख़ुराफ़ाती लगता था। उसको हर किसी के टाइटल को जानने की पड़ी रहती थी। वह बंगाल का ही था, उसे अच्छी अंग्रेजी भी आती थी और बांग्ला का तो उस्ताद बना फिरता था, ऐसा कि सामने वाले को तो घंटे भर में बांग्ला सिखा ही देगा। लाल दीघी के तालाब में ठहरी पड़ी नौकाओं की बात करते हुए एक दिन मयंक से वह बुरी तरह लड़ पड़ा था। एक जैसा रंग, अभी तो सात हैं, कभी और अधिक रही होंगी..ठहरी हुईं, जिंदगी की स्वाभाविक गति के विपरीत स्थिर......जैसे कि गतिमान धरती, या फिर भावशून्य व्यक्ति की तरह ठिठुरी हुईं। मयंक ने उनके नाम भी रखे थे और चटर्जी ने उसके टाइटल पूछ लिए.....बस इतनी सी बात थी, चटर्जी ने बाद में कहा था लेकिन मयंक जानता था कि उसकी कास्ट को जानने को लेकर ये टिप्पणी की गई और वह गुस्से से लाल हो गया था.....चटर्जी ने मयंक का ये रौद्ररूप पहले कभी नहीं देखा था। उसे लगा कि जैसे लाल दीघी के उस ठहरे हुए तालाब में मछलियों की हलचल बढ़ गई हो...या उस तालाब में जैसे भावनाओं का ज्वार

आ गया हो। एक बार तो ऐसा भी लगा कि सारी नौकाएँ अपनी जगह से ग़ायब हो गईं हैं। चटर्जी ने बात को टालने की कोशिश की लेकिन इस बार मयंक का क्रुद्ध स्वर सुनकर वह सन्न रह गया, होंठ जैसे फ्रीज हो गए...रिश्ता ढूँढने निकले हो क्या? मयंक ने जैसे तमाचा मार दिया हो......हर किसी की टाइटल पूछते रहते हो..हर चीज की टाइटल ढूँढते फिरते हो..परिवार का साथ है तो कास्ट दिखाई पड़ती है...भूख का मतलब भी जानते हो कि केवल उपवास रखते हो.......कभी भूख के बारे में जानोगे तो उपवास भूल जाओगे और ये सिगरेट के छल्ले फेफड़ों में सदा के लिए समा जाएँगे। चटर्जी ने कभी सोचा न होगा कि मयंक इस तरह से गुस्से में उसे जवाब देगा। वह हक्का-बक्का रह गया था।

अक्सर चटर्जी मयंक के साथ आता था लेकिन इसका ये मतलब कतई न था कि दोनों बहुत अच्छे दोस्त हों....चटर्जी तो केवल सिगरेट का तलबगार था, गप्पेबाज़ी उसे पसंद थी। ऑफिस का बोरिंग रूटीन उसे अच्छा नहीं लगता था। लाल दीघी की ठंडी में हवा में एक अलग तरह का खुमार होता था- एक अनमना सा अपनापन, सिगडी पर पकने वाली चाय या फिर स्टोव पर मिट्टी के तेल से पकने वाली चाय जिसका अलग ही टेस्ट होता था........उस टेस्ट से भी ज़्यादा ख़तरनाक संज्ञाशून्य बनाती थी उसकी स्ट्राँग स्मेल..जस्ट टू स्ट्राँग। मयंक की अपनी दुनिया में घर की अलग टेंशन थी, घर से दूर रहकर। यहाँ टुटपुँजिया नौकरी में शरीर खपा रहा था वह। दोहरी मेहनत करता था फिर भी टारगेट्स

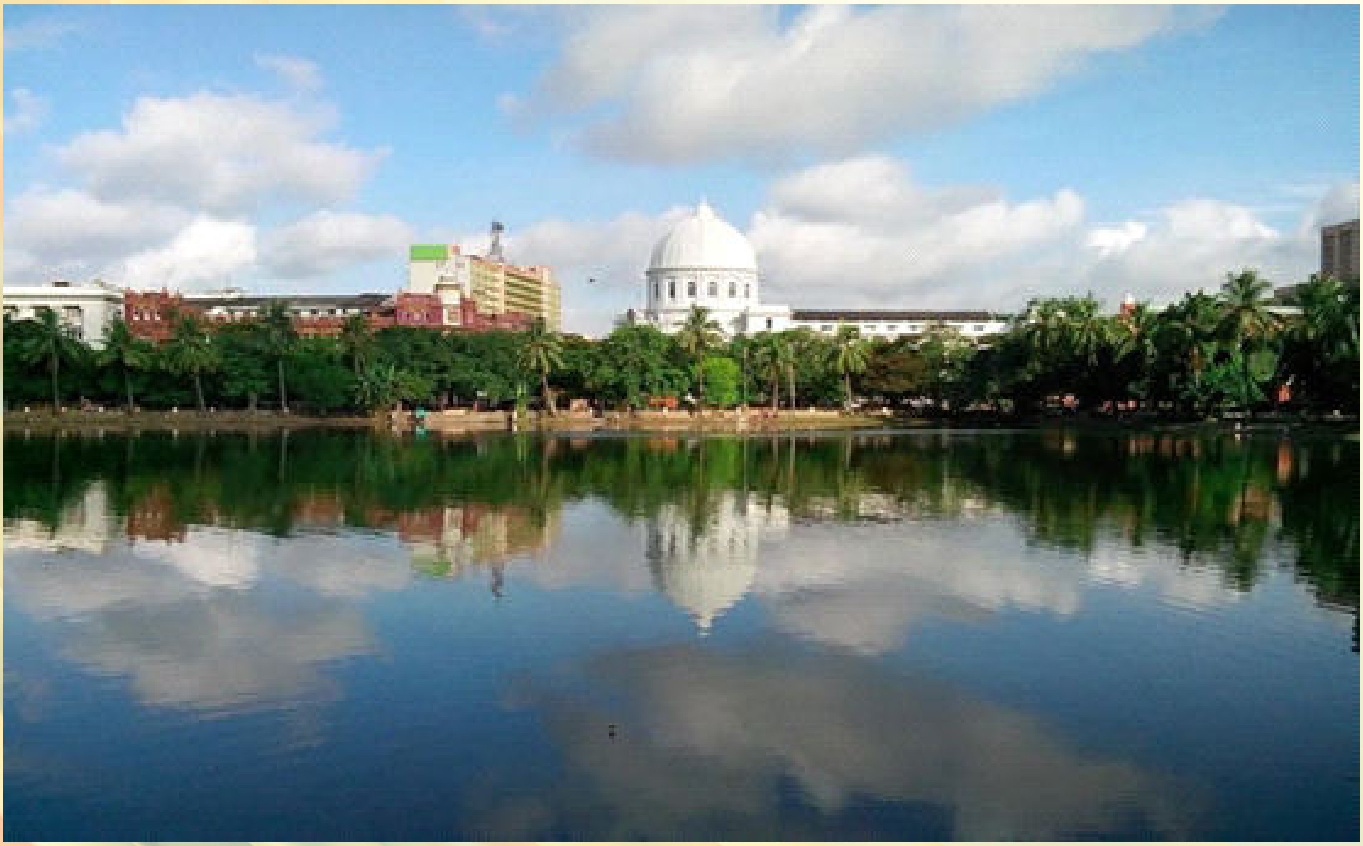

पूरे नहीं होते थे....कभी किसी महीने सौभाग्यशाली रहा तो अच्छे कस्टमर भी मिल जाते थे और ग्राफ ओवरऑल बेहतर हो जाता था लेकिन सच्चाई तो यह थी कि उसका ग्राफ उसकी जिंदगी की तरह अनिश्चित था.......उसकी जिंदगी में निश्चित था तो बस सेल्फ-रिस्पेक्ट, आत्मसम्मान, बिल्कुल उसी तरह जैसे लाल दीघी की सात नौकाएँ स्थिर थीं.....वर्तुल लहरों से भरे छोटे से तालाब में, कभी-कभी हिलती सी। इसी सेल्फ-रिस्पेक्ट की वजह से अपना रिज़ाइन रेडी रखता था वह। कितनी मुश्किल से नौकरी लेता है और कितनी आसानी से छोड़ देता है, उसके दोस्त ऐसा ही सोचते होंगे। हर बार जब वह किसी नई जॉब के लिए इंटरव्यू देता था तो स्वाभाविक सा सवाल होता था उसके लिए- व्हाई यू लेफ्ट योर प्रीवियस जॉब? यू गॉट फ़ायर्ड? सो अनरियल....कांट

रिकमेंड....ऐसे शब्दों से शुरूआत में मयंक को चिढ़ होती थी लेकिन धीरे-धीरे उसने भी अपना एक पैटर्न बना लिया था।

पिछले डेढ़ साल से एक बैंकिंग कंपनी के लिए वह काम करना कोई नया अनुभव नहीं था। डेटा, फॉर्म्स, मैट्रिक्स और फ़ाइल्स में झूलने वाली दुनिया...उसे ऐसा लगता था कि उसके काम का प्रेशर उसके दिमाग़ी धागों को चूहे की तरह कुतर रहा हो...ढेर सारा पेपरवर्क अब तो गुज़रे ज़माने की बात बनने वाला था....एआई की दुनिया में चीजें तेज़ी से बदल रही थीं। वह कस्टमर से डीलिंग करते हुए उन्हें बताता था कि अब फिजिकल कार्ड्स की ज़रूरत नहीं रही है, सब बिल्कुल आसान हो गया है। पिन भूलने वाली प्रॉब्लम भी अब नहीं रहेगी। आपका आधार नंबर, आपका बायोमेट्रिक, आपका पैन बस इतना ही और आप डिजिटल दुनिया की सैर कर सकते हैं।

मयंक जानता था कि कस्टमर को भरोसे में लेना आसान काम नहीं था। उसने नौकरीशुदा वेतनभोगी, बिजनेसमैन और सामान्य दुकानदारों में अपना कस्टमर ढूँढने की कोशिश की जो कि लाल दीघी के चारों ओर फैले कार्यालयों में कार्यरत होते थे। ऐसा प्रायः होता था कि ढेर सारा इंटरेस्ट दिखाने के बाद भी कोई कस्टमर कोई प्लान लेने, क्रेडिट कार्ड या अकाउंट ओपन करने से मना कर दे। कभी-कभी कुछ कस्टमर जो कि वास्तव में कोई इंटरेस्ट नहीं रखते थे, बस फिरकी लेने के लिए उसे परेशान करते थे। उसके लंबे साँवले चेहरे पर शिकन न आती थी, बस एक खीझ रहती जिसे वह निगल जाता था। उसे लगातार चक्कर लगाना होता था, लाल दीघी, रायटर्स बिल्डिंग्स, महाकरण या कहें तो एस्प्लेनेड से लेकर पूरा डलहौज़ी स्क्वायर। कभी-कभी मेट्रो स्टेशन पर अपने साथियों के साथ वह कैम्प लगा लेता था, उसकी भी बड़ी लंबी और चिड़चिड़ी कहानी हो जाती थी, परमिशन लेने से लेकर सारी तैयारियाँ करने तक में।

गुस्से से बाहर आना जैसे एक अदावत सी हो गई थी जिसे मयंक का बॉस जस्ट एक रूटीन फ्रस्ट्रेटेड रिएक्शन मात्र मानता था। उसका भी पंगा ऐसे अलग-अलग स्वभाव के लोगों से पड़ता रहता था लेकिन संभवतः उसने मयंक को समझने में गलती कर दी, ऐसा उसे चटर्जी ने कहा था......उस दिन के कुछ दिनों बाद जिस दिन मयंक से उसकी बहस हुई थी। ऐसा लग रहा था जैसे कि मयंक को आभास हो गया था कि दृश्यमान शीशों के भापनुमा वातावरण में कोई सन्नाटे भरी साज़िश की जा रही हो। उस बैंकिंग ऑफिस का दो फ्लोर वाला दफ्तर जुआरियों का अड्डा सा लगता था जहाँ सभी के एक टारगेट के रूप में मयंक ख़ुद को पाता था। ब्रिटिश ज़माने की इन बिल्डिंगों की बनावट अब आउटडेटेड हो चुकी थी और दीमक, कीड़े और कड़वी यादें इसे खोखला बना चुकी थीं और उसे तो अब हेरिटेज के नाम पर घसीटा जा रहा था।

ऑफिस के दूसरे तल से हुगली नदी के विस्तार का, उसकी चंचल धारा और ज्वारीय प्रवाह का सुकूनदायी दृश्य दिखता था लेकिन अफ़सोस कि उसके बाद भी उन सभी का दिमाग़ झन्नाया हुआ रहता था। मयंक जानता था कि बॉस को नदी के प्रवाह और उसमें बहते जलयान नहीं दिखते होंगे....... सिगरेट के धुएँ में उसे नदी के तल से बस भाप निकलती हुई दिखती होगी जो उसकी भावनाओं की तरलता को अधिक शुष्क बना देती होगी......कुंठा और द्वेष से भरी हुई नीरस भावनाएँ जो कि बैंकिंग की दुनिया में बहुत ही साधारण बात है। वह जब लाल दीघी या अन्य जगहों पर अपने कस्टमर से मिलता था तो कई कस्टमर ऐसे भी मिलते थे जो कि उसपर दया दिखाते हुए उसकी किसी स्कीम का हिस्सा बनते थे या कार्ड ले लेते थे या फिर एकाउंट्स ओपन कर लेते थे। ये सबसे त्रासद स्थिति थी जिसे बर्दाश्त कर पाना मयंक के लिए बहुत मुश्किल होता था। उसे लगता था जैसे उसके श्रम का कोई मूल्य नहीं है......कि जैसे उसने नौकरी जॉइन करके बहुत बड़ी गलती कर दी है....कभी रूम पर आने के बाद वो इसके बारे में सोचता था उसे लगता था कि वह एक तरह की भीख ही है......फिर इसी नेटवर्किंग और कस्टमर डीलिंग को बड़ी कला माना गया है......उसे लगता था कि उसका स्वाभिमान बैंक के टारगेट्स और कस्टमर की फिरकी के बीच पिस रहा था, कोई हिस्सा अलग नहीं, सब बस एक ट्रेजडी थी.......अपना जीवन कहाँ था? वेल सेक्योर्ड सेल्फ रिस्पेक्ट जिसे रूई की तरह धुन दिया जाता था......उसे कॉर्पोरेट कल्चर आर्ट कहती है जिसके बदले पैसेवाला बना जा सकता है...।

मयंक लाल दीघी तक बढ़ ही आया था। बसंत में गुलमोहर की लालिमा जैसे से भरे एक वृक्ष के नीचे जमीन पर ही वह बैठ गया, पैर फैलाए हुए। उसे यही लगता था कि ऐसी चतुराई और कलाबाजियाँ, बारीक धोखाधड़ी सब कुछ केवल पैसे के लिए नहीं होती

होंगी.........फेमस होने का चक्कर, लाइफ़ में सक्सेसफुल होने का मंत्रा जिसका प्रचार सोशल मीडिया के रील्सबाज़ करते थे, अख़बारों के विज्ञापन सफलता की झूठी कहानियों से भरे रहते थे आदि सब कुछ के पीछे क्या सिर्फ़ पैसे का मायाजाल था? हाँ शायद, एक कड़वी सच्चाई जिसे वह पचा नहीं पा रहा था। अच्छी सैलरी के बाद भी चटर्जी को शेयर मार्केट में झूले झूलने का बड़ा शौक है.....भला किसलिए? क्यों करता है वह ऐसा ? अब तो ऑनलाइन सट्टेबाजी भी करता है.....क्या उसको जीवन जीने के लिए सच में इतने पैसे चाहिए? अच्छे घर से आता है, वेल एजुकेटेड, वेल सेटल्ड....बट ही नीड मोर....क्यों चाहिए भाई?

यहाँ उसकी अपनी ज़रूरतें पूरी करना ही भारी हो रहा है, थोड़े ही पैसे चाहिए उसे बस। लेकिन मायाजाल तो ऐसा कि पैसे वाले के चेहरे पर धुएँ के ग़ुबार के अलावा उसे कुछ नहीं दिखता था। मयंक ने महसूस किया कि जब वह ख़ुद तनाव में होता है तो उसे अपने कस्टमर पर कोई गुस्सा नहीं होता। वे आज भी आएँ हैं, उसी तरह वॉक कर रहे हैं, अभी कोई आएगा, उसकी फिरकी लेगा और निकल जाएगा लेकिन शायद ही कोई ऐसा होगा जो समझे कि लाल दीघी के ठहरे हुए जल की सतह पर हवा के हल्के बहाव से उभरी वर्तुल लहरों की तरह उसकी भावनाएं रेंग रहीं हैं...पूरा शरीर जैसे अकड़ा हुआ सा महसूस हो रहा था....माँ-बाप के जिन सपनों के लिए वह इस शहर की खाक छान रहा था, वे यही थे क्या? यहाँ युवाओं, युवतियों की बेतकल्लुफ़ी में लिपटे दंश को भी वह देख रहा था.....कौन उस पर भरोसा करेगा? उसका ठहरा हुआ जीवन जैसे कि सपाट रास्ता हो और वह एक ही गति से आगे बढ़ता जा रहा हो......या फिर लाल दीघी तालाब के किनारे उगे उन निरर्थक, छोटे घास-फूस के पौधों जैसा निस्सार.....सफ़ाई करने वाले भी उसे साफ़ नहीं करते......या फिर वे ठहरी हुई सात कश्तियाँ जो बस दिखती भर थीं...हमेशा भ्रम पैदा करती थीं कि वो चल रही हों......पर मयंक भी जानता था वो ठहरी हुई थीं......फिर भी, एक बात तो सही थी कि ठहरेपन में भी वे वक्त का पीछा कर रही थीं.....अनाम सी, प्रमेय लाल दीघी के तालाब में।

*****

· “भाषा के माध्यम से संस्कृति सुरक्षित रहती है। चूँकि भारतीय एक होकर सामान्य सांस्कृतिक विकास करने के आकांक्षी हैं, अतः सभी भारतीयों का अनिवार्य कर्तव्य है कि वे हिंदी को अपनी भाषा के रूप में अपनाएँ।”

- डॉ. भीमराव अम्बेडकर

अधूरी ख़्वाहिशें

धनेश कुमार, डी.ओ.ई

कुमार और रानी की पहली मुलाकात रानी के मामा घर पर हुई थी। दोनों की नज़रें बस एक पल के लिए टकराईं। उस पल में कुछ ऐसा था जो दोनों को अपनी ओर आकर्षित करता गया। रानी पढ़ी-लिखी ग्रेजुएट छात्रा थी और कुमार संविदा पर राज्य सरकार में कार्यरत था।

समय बीतता गया और एक दिन रानी के घर कुमार के बड़े भाई पहुंच गए। रानी के घरवाले आश्चर्यचकित हो गए। कुमार के बड़े भाई ने रानी के रिश्ते की बात की। रिश्ते की बात सुनते ही रानी के माता-पिता को विश्वास नहीं हो रहा था कि यह रिश्ता रानी के लिए आया है पर कुमार के बड़े भाई ने बिना किसी शर्त अपने तरफ से रिश्ता पक्का कर दिया और कहा- अब आपको अपनी तरफ से रिश्ते को आगे बढ़ाना है।

अभी बातें हो ही रही थीं कि रानी के माता-पिता बिना किसी संकोच के रिश्ते को आगे बढ़ाने की हामी भरते हुए, हाथ जोड़कर कहा- आप लोगों का आदेश हो तो हम आपके घर आकर रीति-रिवाज के अनुसार लड़के-लड़की की सगाई कर दी जाए और उसी दिन पंडित जी से शादी का शुभ मुहूर्त भी निकलवा लिया जाए। कुमार के बड़े भाई ने कहा- शुभ कार्य में देरी क्यों ...! आपका ही घर है, जब मर्जी आइये।

वक्त के साथ कुमार और रानी का प्यार और गहरा होता जा रहा था, मानो दोनों एक दूसरे के बिना अधूरे थे। एक दिन कुमार ने रानी से फोन पर कहा- “आपके घर के लोग रिश्ता लेकर कब आयेंगे ?” रानी ने उसे समझाया और शरमाते हुए कहा- इंतजार का फल मीठा होता है। इतना कहकर रानी हंसने लगी। कुमार ने भी मजाकिए अंदाज में कहा- फिर मैं ही आ जाता हूं आपके घर। रानी घबराई और बात बदलते हुए बोली- ओ...हो... आप समझें नही, मेरा मतलब है कि मां तो पिता जी से बात कर रही थी कि जल्द ही पिता जी आपके घर रिश्ता लेकर जाने वाले हैं। कुछ महीनों बाद रानी के पिता जी रिश्ता लेकर पहुंचे। बातें हुई और रीति-रिवाज के अनुसार दोनों परिवार ने आपस में मिल कर रिश्ता पक्का किया। अन्ततः पंडित जी को बुलाया गया और शादी का शुभ मुहूर्त निकलवाया गया।

"मिलने की आश हो रही थी पूरी
फिर भी न जाने क्या थी मजबूरी,
उनके बगैर महसूस हो रही थी उनकी कमी
मानो जीवन की सांसें हो अधूरी-अधूरी "

दोनों तरफ शादी की तैयारियां शुरू हो गई। समय बीतता गया और तिलक का दिन आ गया। रानी के घर से सभी तिलक लेकर कुमार के घर पहुंचे, पर कुमार के घर पर कुछ पारिवारिक अनबन के कारण तिलक की व्यवस्था में कुछ कमियां रह गई थीं जिसको लेकर कुमार बहुत नाराज़ था और गुस्से में उसने तिलक चढ़वाने से मना कर दिया। यह सुनकर दोनों पक्षों में अफरातफरी मच गयी और रानी के घर वाले परेशान हो गए। न जाने अब क्या होगा? फिर धीरे-धीरे रात बीतती गई। मान-मनौव्वल शुरू हुआ पर इतना सब कुछ होने के बाद भी रानी के घर वाले शांतिपूर्वक कुमार को समझाने में लगे थे और रश्म को आगे बढ़ाने के लिए कह रहे थे। कुमार का गुस्सा धीरे-धीरे कम हुआ। चूंकि गलतियां कुमार के तरफ़ से हुई थी इसलिए कुमार अफसोस करते हुए आगे की रस्मों को आगे बढ़ाने के लिए हामी भर दी। आगे तिलक समारोह शांति-पूर्वक संपन्न हुई और दोनों पक्षों के परिवार हंसी-खुशी मिले। सुबह रीति-रिवाज के अनुसार रानी के घरवालों की बिदाई कर दी गई।

अगले दिन कुमार ने रानी को कॉल किया। उधर से कुछ दबी हुई आवाज में हैलो की आवाज आई। कुमार को समझते देर न लगी और उसने प्यार से सॉरी कहते हुए बात की। इतना सुनते ही रानी खुद को संभालते हुए बोली- सभी के जीवन में कभी न कभी ऐसा होता है, जब हम जो चाहते हैं, वो हमारे साथ नहीं होता। खैर, जो हुआ उसे भूलकर बारात लाने की तैयारियां शुरू कीजिए। ऐसी समझदारी भरी बातें सुनकर कुमार एक बार फिर रानी का मुरीद हो गया।

शादी के दिन, कुमार बारातियों के साथ बारात लेकर रानी के घर पहुंचा। बारात पहुंचते ही रीति-रिवाज के अनुसार बारातियों का

स्वागत किया गया। चूंकि रानी कुमार के विचारों को पहले से जानती थी कि किसी प्रकार की कमी या बदनामी उन्हें पसंद नहीं है, इसी बात का खास ध्यान में रखते हुए रानी ने अपने सभी घर वाले को पहले ही हिदायत दे रखी थी कि मेहमानों को किसी भी तरह की कोई दिक्कत न हो।

रीति-रिवाज के अनुसार कुमार और रानी की शादी संपन्न हुई। सुबह बिदाई का काम शुरू होने में देरी हो रही थी, तभी कुमार के बड़े भाई ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई और रौब दिखाकर सबको फटकार लगाते हुए जल्दी बिदाई देने को कहा। भाई का रौब देख सभी के पांव में स्पीड आ गई। जैसे सबके पैरों में पहिए लगे गए हों। विदाई संपन्न होने के बाद दुल्हन को लेकर कुमार घर आया। विधि-व्यवस्था के साथ दुल्हन का स्वागत किया गया। घर में खुशी का माहौल था पर अब भी कुमार के घर में आन्तरिक पारिवारिक अनबन थी। पारिवारिक अनबन के कारण ही कुमार प्रीतिभोज न करवा सका, जिसका दुःख कुमार से ज्यादा रानी हुआ। रानी चाहती थी कि शायद प्रीतिभोज होता तो परिवार में फिर हँसी-खुशी का माहौल बन जाता पर ऐसा नहीं हुआ।

समय बीतता गया। कुमार और रानी अपने सांसारिक जीवन में आगे बढ़ने लगे। रानी की अधूरी पढ़ाई को देखते हुए, कुमार ने रानी को आगे की पढ़ाई पूरी करने को कहा। कुमार, रानी को कुछ बनाना चाहता था और रानी भी आगे की पढ़ाई करना चाहती थी। सांसारिक जीवन के साथ साथ रानी ने अपने अधूरे ग्रेजुएशन को पूरा किया। फिर पोस्ट ग्रेजुएशन में दाखिला लेकर पोस्ट ग्रेजुएट की डिग्री हासिल की और यह संभव हो पाया बस कुमार की अच्छी सोच के कारण। चूंकि कुमार का मानना था कि लड़कियों को लड़कों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलना चाहिए और इसके लिए सबसे ज्यादा जरूरी है पढ़ाई-लिखाई।

पोस्ट ग्रेजुएट की डिग्री हासिल करने के बाद कुमार, रानी को शिक्षिका बनाना चाहता था। इसके लिए रानी को बीएड का एंट्रेंस एग्जाम दिलवाया जिसमें वह क्वालीफाई हो गई। कुछ दिनों बाद नामांकन के लिए मेरिट लिस्ट जारी हुई जिसमें रानी को सरकारी कॉलेज आवंटित हुआ। नामांकन की तारीख आई तो कुमार दाखिला करवाने की तैयारी में था, तभी कुमार के माता-पिता जी ने कहा- अभी बच्चा छोटा है (इस दौरान रानी और कुमार को संतान भी हुई), और यह कह कर बीएड में दाखिला दिलवाने से मना कर दिया। और अंततः शिक्षिका बनने की ख्वाहिश भी अधूरी रह गयी।

दोनों अपने दायित्वों को अच्छी तरह जानते थे, इसलिए सांसारिक जीवन के साथ नौकरी की तैयारियां भी करते थे। रानी के लिए यह थोड़ा कठिन सा हो रहा था। घर परिवार की देखभाल के साथ प्रतियोगिता की तैयारी करना। घर का काम खत्म कर शॉर्टहैंड कोचिंग, कम्प्यूटर क्लासेज और टाइपिंग क्लासेज जाना बहुत कठिन हो रहा था। रानी ने इसी बीच रेलवे एवं राज्य सरकार में कुछ पेपर पास भी किया, पर तकनीकी कारणों से फाइनल सलेक्शन नहीं हो पाया। फिर भी, रानी की मेहनत व लगन के आगे सारी कठिनाइयाँ व बाधाएं छोटी थीं। एक समय ऐसा आया कि दोनों सरकारी नौकरी में आ गए। पहले कुमार का भारत सरकार में सलेक्शन हुआ तो वहीं कुछ साल बाद रानी का राज्य सरकार में सलेक्शन हुआ और रानी अंततः राज्य सरकार में चयनित हुई।

अब लग रहा था कि दोनों की गृहस्थी में सुख-शांति आयेंगी, पर समय को कुछ और ही मंजूर था। कुमार और रानी एक संयुक्त परिवार में रहते थें। कहने को तो संयुक्त परिवार था पर सभी अपने-अपने हिसाब से जीवन व्यतीत करते थें। इस संयुक्त परिवार की खासियत यह थी कि शासन-प्रशासन पिता जी के हाथ में था और पिता जी सबको एक साथ जोड़ कर रखना चाहते थे। इस कारण पिता जी हमेशा कुमार व रानी को यह बताते रहते थे कि उनके बाद तुम दोनों को ही सभी को एकजुट रखना होगा। परिवार में किसी भी प्रकार कि तकलीफ़ होने पर कुमार और रानी को उस तकलीफ़ से

गुजरना पड़ता था, ताकि घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहे।

कुमार अपने परिवार में सभी लोगों को, खास कर सभी बच्चों को हमेशा खुश रखना चाहता था। रानी भी हृदय की सच्ची थी। वह भी सभी से मिल-जुल कर रहना चाहतीं थीं और मिल-जुल कर रहती भी थी पर घर के लोगों के व्यवहार से परेशान रहती थी। इसी कारण वह कभी-कभी घर वालों से नाराज़ रहती थी और सब कुमार को सुनना पड़ता था। चूंकि कुमार को परिवार के सभी बच्चों की काफी चिंता रहती थी, इसलिए कुमार, रानी को समझा लिया करता था। लेकिन, कुमार चाहता था कि सब लोग भी एक साथ मिल-जुल कर रहें, और जितना उसका एडवांटेज लेना चाहें ले सकते है, लेकिन यह गुण भी परिवार के लोगों में नहीं दिखाई देता था। वो कभी रानी से, कभी बच्चों से, कभी खुद में ही मतभेद कर लिया करते थे जिससे कुमार बहुत ज्यादा दुःखी रहता था।

समय बीतता गया, दोनों की जिम्मेदारियां बढ़ती गईं। बढ़ती जिम्मेदारियों तले दोनों व्यस्त होते चले जा रहे थे। अधिक कमाने की धुन में धीरे-धीरे पारिवारिक व सांसारिक जीवन कुछ असंतुलित होने लगा, जिसका सबसे ज्यादा असर बच्चों पर दिख रहा था। उनके खाने-पीने से लेकर पढ़ाई-लिखाई तक बाधित हो रही थी। साथ ही साथ माता-पिता की अच्छी तरह से देखभाल न होने से भी कुमार काफी दुःखी रहता था। फिर भी आपसी समन्वय से दोनों बहुत हद तक पारिवारिक व सांसारिक जीवन को खुशहाल रखने का प्रयास करते रहते थे। सबसे ज्यादा बोझ रानी पर रहता था। एक तरफ घर-परिवार, बच्चे, वहीं दूसरी तरफ ऑफिस। रानी की इस व्यस्तता को देख कुमार दुःखी रहने लगा था और कई बार ऐसा भी हुआ जब कुमार ने रानी को नौकरी से रिजाइन करने को कह दिया। पर रानी मेहनती और समझदार थी, वह कुमार को हर बार कहती- कोई नहीं, सब ठीक हो जाएगा, मैं सब कुछ मैनेज कर लूंगी। उसकी इन बातों से कुमार को साहस मिलता, मगर रानी को सहयोग न कर पाने की टीस उसके अंदर बनी रहती थी ।

इस कारण कुमार और रानी शुरू से लेकर अंत तक अपने हिसाब से कभी जी ही नहीं पाए। चाहत थी यादगार शादी की, वह भी पूरी नही हुई। चाहत थी शिक्षिका बनाने की वो भी पूरी न हो सकी। चाहत थी अच्छी नौकरी पाने की, वह भी नहीं मिली। चाहत थी बच्चों को सुख-सुविधा देने की, वह भी नहीं दे पाए। पिता जी के दिये संस्कारों के कारण और संयुक्त परिवार को एक साथ लेकर चलने की चाहत में कुमार और रानी की सारी ख्वाहिशें अधूरी रह गईं। धीरे-धीरे बच्चे बड़े होने के साथ समझदार रहे थे। तब जाकर बच्चों के खाने-पीने की समस्या थोड़ी कम होने लगी। चूंकि अब, जब बच्चों को भूख लगती,वे स्वयं खाना लेकर खा लिया करते, साथ ही समयानुसार स्कूल के लिए तैयार हो जाते थे। इससे रानी का बोझ थोड़ा कम हुआ। फिर भी, रानी के साथ कुमार के न होने से रानी पर दबाव साफ-साफ दिखाई देता था। साथ ही बच्चों पर भी यह कमी साफ-साफ असर डालती जा रही थी।

"सोचता हूं अपनों को पास बुला लूं
मन कहता है कि सबको खास बना लूं!
वो मेरे पास रहे.. या न रहे..
बस..उनकी यादों को जीने की आस बना लूं" !!

ऐसे ही जीवन व्यतीत हो रहा था कि तभी अचानक एक समय ऐसा आया कि कुमार का स्थानांतरण अपने गृह राज्य में हो गया, जहां रानी पद-स्थापित थी। फिर एक बार कुमार और रानी के जीवन में खुशहाली की लहर दौड़ पड़ी जैसे कि सारी ख्वाहिशें पूरी हो गई हों। खुशी इस बात की थी कि पूरा परिवार एक साथ मिल-जुलकर रहेगा। इस तरह समय बीतता गया, कुमार और रानी ने सांसारिक जीवन शुरू होने से पहले और सांसारिक जीवन के बाद अपनी जितनी भी अधूरी ख्वाहिशें रह गयी थीं, सब को भुलाकर उन्हें नए सपनों में बदल दिया और अपने जीवन को एक नया अर्थ दिया।

"कोशिश करने वालों की
कभी हार नहीं होती !
जिसका पार्टनर रानी जैसा हो
उनकी आशा कभी बेकार नहीं होती "

*****

राजस्थान यात्रा

सुभाष चन्द्र मंडल, लेखाकार

सुबह की ठंडी हवा और सूरज की पहली किरणें जब खिड़की से कमरे में झाँकीं तो मन में एक ही ख्याल था– आज से शुरू हो रहा है मेरा बहुप्रतीक्षित जयपुर का सफर! पिंक सिटी– एक नाम जो बचपन से सुनता आया था, आज उसे अपनी आँखों से देखने और महसूस करने का वक्त आ गया था।

पहला दिन: गुलाबी सपनों का शहर

दिल्ली से सुबह-सुबह ट्रेन जयपुर पहुँची। स्टेशन से बाहर निकला तो सामने गुलाबी रंग के भवनों की कतारें देखकर मन मुस्कुरा उठा। होटल पहुँचकर एक गरम चाय की चुस्की ली और शहर की सैर पर निकलने के लिए तैयार हुआ। सबसे पहले पहुँचा हवा महल। पाँच मंज़िलों वाली यह अनोखी इमारत जैसे गुलाबी रेशम से बुनी गई हो। इसकी सैकड़ों छोटी-छोटी खिड़कियाँ राजघराने की रानियों के लिए बनी थीं ताकि वे बिना दिखे खुद बाहर की हलचल देख सकें। मैंने भी एक खिड़की से बाहर झाँका– सामने था बापू बाजार, रंग-बिरंगी भीड़, विदेशी पर्यटक और चूड़ी की दुकानों की खनक। इसके बाद पहुँचा सिटी पैलेस। आज भी एक हिस्सा राजघराने का निजी निवास है और बाकी को म्यूज़ियम बना दिया गया है। रंगीन दीवारें, मोर गेट और पुरानी पोशाकें देखकर ऐसा लगा जैसे किसी इतिहास की किताब में प्रवेश कर गया हूँ। शाम को गया जंतर-मंतर, जहाँ विशाल खगोलीय यंत्र खड़े थे। एक स्थानीय गाइड ने सूर्य घड़ी से सटीक समय बताया– और वो एकदम सही निकला। दिन का समापन हुआ राज मंदिर सिनेमा में। फिल्म तो नहीं देखी, लेकिन उसकी भव्य सजावट, गोल्डन डेकोर और झूमर ने मन मोह लिया। पहला दिन वाकई किसी गुलाबी ख्वाब जैसा था।

दूसरा दिन: किलों की कहानियाँ

सुबह की शुरुआत हुई आमेर किले से। हाथी की सवारी करते हुए किले की ऊँचाई पर पहुँचा तो लगा जैसे किसी शाही ज़माने में वापस लौट गया हूँ। किले का शीश महल, रानी का महल और गलियों में बसी कहानियाँ मन को छू गईं। एक गाइड ने बताया कि राजा ने शीश महल अपनी रानी के लिए बनवाया था ताकि वो अंदर बैठे-बैठे भी तारों को देख सके। इसके बाद पहुँचा जयगढ़ किला, जहाँ रखी है दुनिया की सबसे बड़ी तोप– 'जयवाना'। उसकी विशालता के सामने खुद को बहुत छोटा महसूस किया। वहाँ से पूरा जयपुर शहर दिखाई देता है– बेहद खूबसूरत नज़ारा। फिर पहुँचा नाहरगढ़ किला। यहां का सूर्यास्त दृश्य यादगार रहा। जब सूर्य पहाड़ियों के पीछे छिप रहा था और जयपुर की रौशनी जगमगा रही थी, वो पल दिल में हमेशा के लिए बस गया। शाम को जोहरी बाजार की ओर निकला– जूतियाँ, राजस्थानी कुर्ते, गहनों से भरी दुकानें – और सब कुछ जैसे अपने अंदाज़ में बोलता हुआ- "ये है जयपुर।"

तीसरा दिन: प्रकृति, स्वाद और विदाई

सुबह पहुँचा नाहरगढ़ बायोलॉजिकल पार्क। जंगल के बीच बसा यह पार्क प्रकृति और रोमांच दोनों से भरा था। शेर, बाघ, तेंदुए और नीलगायों को देखना एक यादगार अनुभव था। एक शेर जब दहाड़ा तो रोंगटे खड़े हो गए– पर उसकी आँखों में जो शांति थी वह दिल को छू गई। इसके बाद पहुँचा अल्बर्ट हॉल म्यूज़ियम– जिसमें राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर जीवंत हो उठी। पुराने हथियार, वस्त्र, चित्र और मिट्टी की बनी कलाकृतियाँ देखकर मन इतिहास में खो गया। अब बारी थी स्वाद की.....। एक स्थानीय रेस्टोरेंट में जाकर दाल बाटी चूरमा, गट्टे की सब्ज़ी, केर-सांगरी और घेवर का आनंद लिया। हर कौर में जैसे राजस्थान की मिट्टी की महक थी। शाम को बापू बाजार से कुछ खास चीजें खरीदीं– एक सुंदर हस्तनिर्मित डायरी पेंटिंग वाला एक गुलाबी छाता और राजस्थानी डिज़ाइन की एक पगड़ी। जैसे ही ट्रेन में बैठा, खिड़की से बाहर जयपुर की आखिरी झलक देखी– वो गुलाबी दीवारें, दूर दिखते किले और बाजारों की हलचल – अब सिर्फ आँखों में नहीं, दिल में भी बस चुकी थी। जयपुर की यह यात्रा सिर्फ एक टूर नहीं थी– यह एक अनुभव था। इतिहास, संस्कृति, स्वाद और आत्मीयता का ऐसा संगम, जो हर बार मुस्कुराने का कारण बनता है। गुलाबी शहर ने सिखा दिया कि कुछ जगहें देखने के लिए नहीं होतीं, महसूस करने के लिए होती हैं।

जयपुर के बाद – जोधपुर

जयपुर से लौटते हुए मन में एक अजीब-सी अधूरी सी बात रह गई थी। लग रहा था कि राजस्थान को पूरी तरह समझना अभी बाकी है। तभी मन बना लिया– अगला पड़ाव होगा जोधपुर- सूर्य नगरी। जैसे ही ट्रेन ने जोधपुर स्टेशन पर ब्रेक मारी, खिड़की से नीले घरों की कतारें दिखने लगीं। मन में एक नई ऊर्जा जाग उठी। बैग उठाया, स्टेशन से बाहर निकला और इस शहर की गर्मजोशी ने तुरंत स्वागत किया।

पहला दिन – मेहरानगढ़

सुबह सबसे पहले निकल पड़ा मेहरानगढ़ किले की ओर। ऊँचाई पर खड़ा ये किला दूर से ही अपनी ताकत और इतिहास की कहानी कह रहा था। मैं जैसे-जैसे सीढ़ियाँ चढ़ रहा था, लगता था जैसे मैं समय के पीछे जा रहा हूँ। ऊपर से पूरा जोधपुर दिखता है– नीला रंग चारों तरफ फैला हुआ, जैसे आसमान, ज़मीन पर उतर आया हो। किले के अंदर की गैलरी में पुराने हथियार, तलवारें, कवच और शाही पोशाकें देखकर मेरे भीतर का इतिहास-प्रेमी जाग उठा। वहाँ खड़े-खड़े खुद को एक योद्धा जैसा महसूस करने लगा। शाम को जसवंत थड़ा गया। सफेद संगमरमर की उस शांत जगह बैठकर ढलता सूरज देखना– ये पल किसी ध्यान से कम नहीं था।

दूसरा दिन – बाजार, स्वाद और ऊँट सफारी

दूसरे दिन की शुरूआत हुई पुराने शहर की नीली गलियों से। छोटे-छोटे घर, रंग-बिरंगे दरवाजे, और हर नुक्कड़ पर कुछ नया देखने को मिलता। इसके बाद पहुँचा सरदार बाजार और घंटा घर। यहाँ का माहौल एकदम जीवंत था। एक जगह बैठकर मावा कचौरी और मिर्ची-बड़ा खाया और फिर ऊपर से ठंडी लस्सी, जैसे गर्मी भी हार मान गई। शाम होते ही चला गया ऊँट-सफारी पर। ऊँट की पीठ पर बैठकर थार की रेत में ढलते सूरज को देखना– एक शांत लेकिन मजबूत एहसास था। ऊँट धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था, और मैं खुद को एक खोजी जैसा महसूस कर रहा था।

तीसरा दिन – उम्मेद भवन की भव्यता

अंतिम दिन गया उम्मेद भवन पैलेस। जैसे ही भीतर गया, वहाँ की भव्यता ने मुझे चौंका दिया। शाही गाड़ियाँ, पुराने फर्नीचर और चमकदार झूमर– सब कुछ रॉयल लग रहा था। वहाँ खड़े होकर सोचा – क्या कभी मेरे जैसे आम इंसान भी यहाँ का हिस्सा बन सकते हैं? जवाब था – हाँ, यादों के ज़रिए तो ज़रूर।

विदाई – नीले शहर की मिठास के साथ

जोधपुर छोड़ते समय मन भारी हो गया था। खिड़की से नीली दीवारों और पतली गलियों को देखता रहा। इस शहर ने अपनापन, इतिहास और शांति– तीनों का अद्भुत मेल दिखाया। जयपुर ने रॉयल्टी सिखाई तो जोधपुर ने रंगों की गहराई।

झीलों का शहर उदयपुर- पहला दिन

राजस्थान की ठंडी सुबह में हमारी ट्रेन जैसे ही उदयपुर सिटी स्टेशन पर रुकी, एक मीठी सी ठंडी हवा ने स्वागत किया। दूर पहाड़ियों के बीच झांकती झीलों की झलक खिड़की से ही मन मोह गई। स्टेशन से बाहर निकलते हीं टैक्सी वाले भाई ने पूछा— "घूमने आए हैं सर? पहले फतेह सागर चलूं या पिछोला?" मैंने मुस्कराते हुए कहा- "जहाँ पानी में पहाड़ उतरते हों, वहाँ ले चलो।" फतेह सागर झील के किनारे बैठे हम दोनों– मैं और मेरी डायरी– उस नीली सी चमक में खो गए। झील के बीच नेहरू गार्डन तक नाव में जाना जैसे किसी पुराने फिल्म का सीन हो। किनारे की दुकान से मिला गर्म-गर्म कचौरी और मसाला चाय– क्या कहें! स्वाद, नज़ारा और हवा– तीनों ने मिलकर पहली ही नज़र में प्यार भर दिया इस शहर के लिए। शाम को पहुंचे सज्जनगढ़ मानसून पैलेस जहाँ से सूरज ने पिछोला झील को अलविदा कहा। आसमान गुलाबी हो चला था, और मैं... उदयपुर से जुड़ गया था।

दूसरा दिन – महलों में बीते हुए कल की सैर

सुबह-सुबह चिड़ियों की चहचहाहट और दूर से आती आरती की आवाज़ ने नींद तोड़ी। आज का दिन था सिटी पैलेस और आसपास के इतिहास को महसूस करने का। सिटी पैलेस... एक शहर के भीतर बसा हुआ दूसरा संसार। संगमरमर की नक्काशी, शीशों से सजी दीवारें और आंगनों की वह शाही खामोशी– मानो समय वहीं रुक गया हो। एक गाइड से सुन रहा था– "यहाँ से महाराजा पिछोला झील में नावों की निगरानी करते थे और महलों में दावतें होती थीं जो तीन दिन चलती थीं।" मैं मुस्कराया – "लगता है मैं पिछले जन्म की यादें जी रहा हूँ।" झील किनारे गंगौर घाट पर पहुंचे तो कुछ लोक कलाकार ढोल-नगाड़े बजा रहे थे। पास ही एक छोटी लड़की घाघरा पहन कर घूम रही थी जैसे किसी राजकुमारी की छाया हो। वहीं खड़े-खड़े बोटिंग का टिकट लिया और निकल पड़े पिछोला झील में। झील के बीच बने लेक पैलेस को देखकर आंखें ठहर गईं– जैसे पानी पर तैरता स्वर्ग हो। रात को अम्बराई घाट के पास बैठकर राजस्थानी थाली खाई– दाल बाटी, गट्टे की सब्जी, केर-सांगरी, मिर्ची बड़ा– स्वाद और आत्मा दोनों संतुष्ट।

तीसरा दिन – लोक कला, खरीदारी और विदाई का दर्द

आखिरी दिन था पर दिल नहीं मान रहा था। सुबह शिल्पग्राम गए– जहाँ लोक कलाकार, बुनकर, मूर्तिकार अपने हुनर से ज़मीन को जिंदा कर रहे थे। वहाँ एक बूढ़े कुम्हार ने मेरी ओर देखकर कहा– "बाबूजी, मिट्टी कभी झूठ नहीं बोलती।" और उस वक्त मुझे लगा –ये शहर, ये लोग, ये कला, सब सच्चे हैं। दोपहर में हाथीपोल मार्केट और बापू बाज़ार में घूमे। हाथ से बने बैग्स, जूतियाँ, रंग-बिरंगी पगड़ियाँ– हर चीज़ में राजस्थानी आत्मा बोल रही थी। शाम को ट्रेन पकड़नी थी। स्टेशन की ओर जाते समय पिछोला के पास फिर एक बार रुका। सूरज झील में फिर से उतर रहा था, और मेरा मन भी।

उदयपुर के बाद – जैसलमेर

राजस्थान के पश्चिमी छोर पर बसा, रेत के समंदर में तैरता एक शहर – जैसलमेर। इसे 'गोल्डन सिटी' यूँ ही नहीं कहते। पीले पत्थरों से बने महल, गलियाँ और धूप में चमकती रेत– हर चीज़ सुनहरी लगती है। मेरी जैसलमेर यात्रा एक ऐसी कहानी बन गई जिसे मैं उम्र भर याद रखूंगा।

पहला दिन: सोनार किले की गोद में

सुबह-सुबह जब हमारी बस जैसलमेर पहुँची, तो सबसे पहले सूरज की किरणों में चमकता हुआ जैसलमेर का किला (सोनार किला) नजर आया। यह दुनिया का इकलौता जीवित किला है– यानी किले के भीतर आज भी लोग रहते हैं, दुकानें हैं, मंदिर हैं और एक अलग ही संसार बसा है। किले में घुसते ही लगा जैसे समय पीछे चलने लगा हो। संकरी गलियाँ, पुराने हवेलियाँ और हर मोड़ पर कोई कहानी। जैन मंदिरों की नक्काशी और अंदर की शांति देखकर मन श्रद्धा से भर गया। शाम को पहुंचे गड़ीसर झील जहाँ बतखें तैर रही थीं और झील के किनारे बैठे संगीतकार रावणहत्था बजा रहे थे। वहाँ बैठकर सूरज को डूबते देखना ऐसा था जैसे जैसलमेर के दिल में उतर जाना।

दूसरा दिन: हवेलियाँ और लोक कला

दूसरे दिन की शुरुआत हुई पटवों की हवेली से– सुनहरे पत्थर पर बारीक नक्काशी और सैकड़ों खिड़कियाँ। हर कमरा, हर दीवार जैसे कहानियाँ सुनाती हो। फिर पहुँचे सलीम सिंह की हवेली,

जिसकी छत मोर की गर्दन जैसा आकार लिए हुए है—वास्तुकला का अद्भुत नमूना। दोपहर में गए लोक कला केंद्र, जहाँ राजस्थानी कठपुतली नृत्य, लोक गीत और मरुभूमि की कहानियाँ जीवंत हो उठीं। शाम को निकल पड़े रेत के टीलों की ओर– जैसलमेर यात्रा का सबसे रोमांचक अनुभव।

तीसरा दिन: रेगिस्तान की रात

तीसरे दिन की शुरुआत हुई ऊँट की सवारी से। ऊँट की पीठ पर बैठकर रेत के टीलों को पार करना जैसे मरुस्थल की नब्ज को महसूस करना हो। कैम्प साइट पर पहुँचे तो स्वागत हुआ राजस्थानी ढोल-नगाड़ों के साथ। शाम होते ही शुरू हुआ लोक संगीत, नृत्य और पारंपरिक भोजन– चारों ओर टिमटिमाते तारे और बीच में जलती अंगीठी। उस रात रेगिस्तान में नींद नहीं आई– आसमान से बातें करने का मन हो रहा था। जैसलमेर ने सिखाया कि रेत सिर्फ सूखी नहीं होती, उसमें भी जीवन है, रंग है और अपनापन है। यह सिर्फ एक यात्रा नहीं थी, यह आत्मा को सुनहरा करने वाला अनुभव था।

जैसलमेर के बाद बीकानेर

राजस्थान की मिट्टी में जितना रंग है, उतनी ही विविधता उसके शहरों में भी है। जैसलमेर की सुनहरी रेत के बाद हमारा अगला पड़ाव था— बीकानेर, जिसे अक्सर 'रेगिस्तान का लाल गहना' कहा जाता है। यहाँ इतिहास भी गूंजता है और हलवा भी महकता है।

पहला दिन: जूनागढ़ किला और राजसी इतिहास

सुबह-सुबह ट्रेन से उतरते ही जो हवा महसूस हुई, उसमें नमक और मिठास दोनों थे। होटल पहुँचते ही सीधे निकले जूनागढ़ किले की ओर। इस किले की खास बात है कि ये किला रेत के टीलों पर नहीं, समतल ज़मीन पर बना है — और फिर भी शान में किसी से कम नहीं। किले के अंदर के महल यथा फूल महल, चंद्र महल और अनूप महल आदि जैसे रंगों और शीशों की दुनिया में ले जाते हैं। दीवारों पर उकेरी गईं चित्रकथाएँ और छतों की बारीक कारीगरी ने हर मोड़ पर हैरान कर दिया। शाम को गए सरदार बाजार, जहाँ रंग-बिरंगे कपड़े, ऊँट की खाल से बनी चप्पलें और बीकानेरी भुजिया की महक ने जैसे वक्त को थाम सा लिया।

दूसरा दिन: रेत, मंदिर और मिठाइयाँ

दिन की शुरुआत हुई लालगढ़ पैलेस से– यूरोपीय और राजस्थानी वास्तुकला का सुंदर मिश्रण। वहाँ का संग्रहालय बीकानेर के शाही अतीत की झलक देता है। इसके बाद हम निकले करणी माता मंदिर, देशनोक के पास– जहाँ चूहे पूजा जाते हैं। यह अनुभव थोड़ा विचित्र ज़रूर था पर श्रद्धा और आस्था की शक्ति ने सबको चौंका दिया। दोपहर में गए राष्ट्रीय ऊँट अनुसंधान केंद्र– वहाँ ऊँटों की अलग-अलग नस्लें, ऊँट का दूध और ऊँट की सवारी– ये सब नए अनुभव थे। शाम को लौटते वक्त हाथ में बीकानेर का मशहूर रसगुल्ला, भुजिया और गोंद के लड्डू थे। स्वाद और इतिहास दोनों का मेल आज पूरी तरह महसूस हुआ।

तीसरा दिन: हेरिटेज वॉक और विदाई

आखिरी दिन हमने चुनी एक हेरिटेज वॉक– बीकानेर की पुरानी गलियों में। इन गलियों में चलना ऐसा था जैसे किसी फिल्म के सेट पर चल रहे हों। थोड़ी-थोड़ी दूरी पर मिलते थे छोले-कचौड़ी, मलाई घेवर और कुल्फी के ठेले। मन कर रहा था कि हर नुक्कड़ पर रुक जाऊँ। शाम को वापस लौटते हुए बीकानेर स्टेशन पर जब ट्रेन आई तो दिल भारी था। इस शहर ने सिर्फ ऐतिहासिक दीवारें ही नहीं दिखाईं, बल्कि लोगों की सादगी, स्वाद की विविधता और एक अलग ही अपनापन भी महसूस कराया।

बीकानेर के बाद माउंट आबू

राजस्थान के रेगिस्तानी प्रदेश में बसा एकमात्र हिल स्टेशन– माउंट आबू, जहाँ ऊँट की सवारी की जगह पहाड़ी सड़कों पर घूमती हवा मिलती है और रेत के महलों की जगह हरियाली भरे जंगल। जैसलमेर और बीकानेर की तपन के बाद माउंट आबू एक ठंडी राहत की तरह था– एक हरा सपना।

पहला दिन: नक्की झील का जादू

सुबह जैसे ही हमारी गाड़ी माउंट आबू की ओर चढ़नी शुरू हुई, मौसम बदलने लगा। रेगिस्तान की गर्म हवा पीछे छूट रही थी, और सामने थी ठंडी-ठंडी हवा और बादलों में लिपटी सड़कें। होटल में चेक-इन के बाद सीधा निकल पड़े नक्की झील की ओर। चारों ओर पहाड़ों से घिरी यह झील, बच्चों की हँसी, नावों की चहलकदमी और किनारे बैठे प्रेमी जोड़ों से भरी हुई थी। एक नाव ली और झील के बीच पहुँचकर महसूस हुआ— शांति का असली मतलब क्या होता है। झील के पास ही लगे बाजार में घूमते हुए खरीदी कुछ लकड़ी की कलाकृतियाँ और गर्म मूंगफली। शाम को डूबते सूरज के साथ सनसेट पॉइंट पहुँचे— जहाँ सूरज बादलों के पीछे छिपता गया और धरती पर एक सुनहरी चादर बिछ गई।

दूसरा दिन: दिलवाड़ा मंदिर और गुरुशिखर

आज का दिन शुरू हुआ दिलवाड़ा जैन मंदिरों की ओर यात्रा से। सफेद संगमरमर से बने ये मंदिर अंदर से जितने भव्य हैं, उतने ही शांत भी। मंदिर की दीवारों पर बनी नक्काशी देखकर लगा जैसे संगमरमर में भी जान हो। इसके बाद हम निकले गुरु शिखर— राजस्थान की सबसे ऊँची चोटी। रास्ता संकरा था, लेकिन हर मोड़ पर पहाड़ों के दृश्य मंत्रमुग्ध करने वाले थे। ऊपर से दिखता पूरा अरावली क्षेत्र— हरियाली, बादल और शांति का समागम। वहाँ स्थित दत्तात्रेय मंदिर में कुछ समय बिताया और फिर चाय की दुकान पर बैठकर गरम-गरम पकौड़े खाए। शाम को हनीमून पॉइंट और टोड रॉक जैसे छोटे-छोटे स्थल भी देखे, जहाँ हर कोना फोटो खींचने लायक था।

तीसरा दिन: प्रकृति के संग विदाई

अंतिम दिन हमने चुना एक शांति से भरी सुबह— माउंट आबू वन्यजीव अभयारण्य में। पेड़ों के झुरमुट में चिड़ियों की आवाज़, दूर-दूर तक फैली हरियाली और रास्तों पर गिरते फूलों की खुशबू— जैसे कोई कविता जी रहे हों। इसके बाद लौटे बाजार, जहाँ से खरीदी कुछ हर्बल चीजें, माउंट आबू की खास लकड़ी की मूर्तियाँ और यादों के लिए एक छोटा सा फोटो फ्रेम। शाम होते-होते वापस चलने का वक्त आ गया। पहाड़ी सड़कें पीछे छूटती गईं और दिल में रह गया माउंट आबू की ठंडी हवा का एहसास।

*****

"देश के सबसे बड़े भू-भाग में बोली जाने वाली हिंदी ही राष्ट्रभाषा पद की अधिकारिणी है।"

- नेताजी सुभाषचंद्र बोस

नेपाल यात्रा

कौशल कुमार, सहायक लेखा अधिकारी

एक भौगोलिक स्थान से दूसरे भौगोलिक स्थान की भौगोलिक दूरी को तय करना ही यात्रा कहलाता है और हाँ ये दूरी भी सही मायने में दूर होनी चाहिए क्योंकि ये भौगोलिक दूरियाँ ही यात्रा के अर्थ को सार्थक बनाती हैं। परंतु हमारी सोच में यात्रा की परिभाषा को इन्हीं दो वाक्यों में सीमित कर देना नाइंसाफी होगी क्योंकि यात्रा एक जगह के लोगों से दूसरी जगह के लोगों को मिलाती है, ये यात्राएं ही एक संस्कृति का दूसरी संस्कृति से मिलन करवाती हैं, हम सबमें एक नई सोच-नई उर्जा का संचार भी करती हैं। प्राचीनकाल से ही यात्रा को बहुत महत्व दिया गया है। शिक्षा का प्रचार-प्रसार भी यात्रा के बिना संभव नहीं था। कुल मिलाकर यात्रा हमें अप्रत्यक्ष रूप से आंतरिक और बाह्य रूप से मजबूत, सदृढ और सबल बनाती है। हमारी सोचने की क्षमता को एक नई दशा-दिशा और निर्णय लेने की क्षमता को उन्मुक्त और स्वछंद सा खुला आसमान प्रदान करती है।

ऊपर के कुछ वाक्यों को पढने के बाद अगर आप ये सोच रहे हैं कि आगे किसी यात्रा के बारे में ही बात होगी तो आप बिल्कुल ही सही सोच रहे हैं। आज मैं अपनी इस रचना के माध्यम से स्वयं की एक यात्रा का जिक्र करने जा रहा हूँ और भरसक कोशिश करूँगा कि एक-एक चीज, छोटी से छोटी बातें आपके समक्ष परोस दूँ। प्रयास यहाँ तक करूँगा कि यह सफरनामा किसी भोजनालय की व्यंजन विवरण-तालिका में उपस्थित उस थाली की तरह हो जिसमें चावल, दाल, रोटी से लेकर अचार तक सबकुछ आवश्यक परिमाण में मौजूद हो।

यात्रा भारत के छोटे से पड़ोसी देश नेपाल की है जिसे मैंने अपनी पत्नी के साथ साल 2024 के मई महीने में पूरी की। नेपाल एक विविधतापूर्ण देश होने के साथ-साथ प्राकृतिक सुंदरता और प्राकृतिक स्थलों से समृद्ध है। सच कहूँ तो नेपाल शांतिपूर्ण एवं एकांतिक जिंदगी पसंद करने वालों के लिये स्वर्ग से कम नहीं है। हिमालय की बर्फीली चोटियों की भव्यता नेपाल की प्राकृतिक छटा में और चार-चाँद लगा देती है। यूँ तो नेपाल की विशेषताओं को बताने के लिये मेरे पास बहुत कुछ है पर इधर-उधर की बातें ना कर मैं सीधे यात्रा की शुरूवात करता हूँ। कार्यालय से पाँच दिनों की अर्जित अवकाश की मंजूरी के बाद मैं और मेरी पत्नी चार मई को जसीडीह से रात के लगभग सवा दस बजे मिथिला एक्सप्रेस से रक्सौल के लिये रवाना हुआ। आधे घंटे से पहले साढ़े आठ बजे ही हमारी ट्रेन हमें रक्सौल पहुँचा चुकी थी। इसके बाद ऑटोरिक्शा की सवारी, सामने नेपाल बॉर्डर का भव्य स्वागत द्वार। सुखद अनुभुति हो रही थी उस विहंगम दृश्य को देखते हुये, मन रह-रहकर रोमांचित हो रहा था नेपाल की खूबसूरती का दीदार अपनी खुली आँखों से करने को। लगभग बीस मिनट के बाद हम बस स्टैंड पहुँचे। वहाँ से हमारी चितवन की यात्रा शुरू होनी थी। फिर मैंने सौराहा के लिये बस की दो टिकट ली क्योंकि सीधे चितवन नेशनल पॉर्क तक कोई बस नहीं जाती है। लगभग सौ किलोमीटर की दूरी, कभी मैदान तो कभी पहाडी रास्ते। रोमांचित करने वाला हमारा सफर शुरू हो गया था। दोनों ओर पहाड़, साथ में बहती नदी। पेडों की घनी पंक्तियाँ दोनों ओर मानो सडक की शोभा बढ़ा ही हों।

दो घंटे की यात्रा के बाद बस कुछ समय के लिये एक जगह रूकी। सडक के एक ओर पहाड़ दूसरे किनारे कुछ दुकानें और दुकान के पीछे गहरी खाई। अभी भी याद करता हूँ तो सोच कर ही एक सुकुन सा मिलता है। मैंने तो अंडा-चॉप खाया जो भारतीय स्वाद और रंग से बिल्कुल अलग था। फिर मैंने झालमुड़ी ली जिसे स्थानीय भाषा में चटपटे बोला जाता है, जो सच में अपने नाम को सार्थक भी बनाता है। उसका स्वाद अभी तक मेरे और मेरे पत्नी के मन से उतरा नहीं है। बस वहाँ से रवाना हुई और लगभग चार बजे शाम को मैं सौराहा चौक पर उतर गया। अब वहाँ से लगभग सात किलोमीटर की दूरी मुझे और तय करनी थी। ऑटोरिक्शा से उस दूरी को तय करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। जैसे-जैसे हम चितवन नेशनल पार्क की ओर बढते जा रहे थे ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो प्रकृति के नजदीक, हरे-भरे वातावरण की गोद में समाते जा रहे हैं। स्वच्छ हवा में साँस लेने की एक अलग सी अनुभूति हो रही थी। वातावरण में एक अलग सी खुशबू छायी थी। चारों तरफ हरे-भरे

लहलहाते खेत, साफ-सुथरी सड़कें, मानो एक अलग ही दुनिया में प्रवेश करते जा रहे हों। पंद्रह मिनट की सुखद और कौतुहलता से भरे सफर का अंत तब हुआ जब रिक्शा ड्राइवर ने कहा- आ गया आपका रिजॉर्ट। यह नेशनल पॉर्क के सामने था। हमने उस हरे-भरे वृक्षों से घिरे रिजॉर्ट में एक रात के लिये एक कॉटेज बुक किया था। मैंने रिक्शा से उतरते ही सबसे पहले मैनेजर से पूछा कि जंगल सफारी आज हो जायेगी ना, तो उन्होंने आश्वासन दिया और कहा हाँ, तब जाकर मेरे दिल को सुकुन मिला।

आधे घंटे में तैयार होकर वापस आया तो जंगल सफारी के लिये जीप हमारा इंतजार कर रही थी। फिर सफर शुरू हुआ जंगल की दुनिया का। सच कहूँ तो ये मेरे जीवन का पहला जंगल भ्रमण था। करीब दस मिनट सड़कों पर सरपट दौड़ती हुई हमारी खुली जीप जंगल के प्रवेश-द्वार पर पहुँच चुकी थी। पहली बार हमने अनेक जंगली जानवर को पास से गुजरते देखा। हिरण, हाथी, गैंडा, मगरमच्छ, मोर आदि पक्षी जिनका हम नाम भी नहीं जानते थे, उन्हें जंगल में स्वच्छंद घूमते देखा। बाघ और जंगल का राजा शेर नहीं दिखा। हाँलाकि जंगल के बीचो-बीच चार बाघ को अलग-अलग पिंजरे में रखा गया था, उसे ही देख कर संतुष्ट होना पड़ा। करीब दो घंटे तक जंगल सफारी के बाद लौटने के समय काफी शाम हो चुकी थी। कुहासा चारों ओर बढ़ने लगा था। मई महीने में सर्दी की तरह कुहासा। अलग-अलग तरह के जानवरों की आवाजें आ रही थीं। मन हल्का भयभीत भी हो रहा था और सात बजे हम वापस अपने रिजॉर्ट में थे। अब हमलोगों के पास एक घंटे का समय था क्योंकि उसके बाद हमें वहाँ थारू जनजाति के नृत्य कार्यक्रम को देखने जाना था। इस बीच हमने खाना खाया और निकल पड़े थारू डांस प्रोग्राम देखने। रात्रि के आठ बजे हम गंतव्य पर पहुँच चुके थे। सच कहूँ तो बहुत ही अलग सा महसूस हो रहा था वहाँ के स्थानीय लोगों के द्वारा प्राचीन परंपरा से रूबरू होते हुए। अंत में एक महिला नृत्यांगना ने हम दोनों को डांस के लिये आंमत्रित किया तो हम लोग भी कहाँ पीछे रहने वाले थे, उन लोगों के साथ भरपूर डांस किया, उनके स्टेप, डांस मूव को हू-ब-हू मिलाने की कोशिश की। शायद हम दोनों ने अच्छा किया क्योंकि वहाँ बैठे सैकड़ों दर्शकों ने तालियों से हमारा स्वागत किया और जब हम बाहर जाने को हुए तो विदेशी पर्यटकों ने भी हम दोनों की प्रशंसा की। कहा- आप दोनों ने बहुत अच्छा डांस किया।

पंद्रह मिनट धीरे-धीरे चलने के बाद हम अपने रिजॉर्ट के सामने थे कि तभी दूसरी ओर जंगल में बह रही नदी के किनारे कुछ टिमटिमाहट से दिखी। जिज्ञासावश हम दोनों भी वहाँ पहुँचे तो अद्भुत सा नजारा देख स्तब्ध हो गये। टिमटिमाहट किसी और चीज की नहीं, हर टेबल पर लगे मोमबत्ती के कारण हो रही थी। एक खाली टेबल देख हम दोनों भी बैठ गये। चारों तरफ घोर अंधेरा सामने सौ फीट नीचे बह रही नदी, जिसकी आवाज साफ कानों में सुनायी दे रही थी। नदी के उस पार चितवन जंगल, न जाने कितने वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है..। मझे शब्द नहीं मिल पा रहे हैं उस दृश्य का वर्णन करने के लिए। हमने दो ग्लास तरबूज का जूस आर्डर किया। करीब एक घंटे के बाद हम वापस अपने कॉटेज में आ गये। ये कहने में मुझे कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि हमने अपने अभी तक की जिंदगी का सबसे मंहगा तरबूज का जूस पीया। यूं तो हमें वहां से आने का मन नहीं कर रहा था लेकिन सुबह सात बजे नेपाल के सबसे प्रसिद्ध स्थान पोखरा के लिये प्रस्थान करना था अतः न चाहते हुए भी हमें वापस आना पड़ा। क्योंकि किसी भी यात्रा से पहले नींद का पूरा होना बेहद जरूरी होता है और खास करके तब जब आप अपने देश से बाहर हों।

सुबह छह बजे हमें बस स्टैंड ले जाने वाली गाड़ी आ गयी। लगभग दो किलोमीटर का रास्ता तय करने के बाद हम चितवन बस स्टैंड पर थे। पोखरा के लिये टूरिस्ट बस मैंने पहले ही बुक करवा ली थी। ठीक सात बजे हमारी आरामदायक बस चितवन से पोखरा के लिये रवाना हो गयी। लगभग पाँच घंटे का रोमांचित कर देने वाला सफर। जगह-जगह पहाड़ों पर बने होटल, और दुकानें, कभी चाय तो कभी मैगी तो कभी नेपाली डिश का आनंद लेते हुए हम करीब दो बजे प्रकृति के अद्भुत कारीगरी से लैश, पहाड़ों से घिरे सुंदर पोखरा शहर पहुँच गए। हम बस से उतरते ही टैक्सी से स्ट्रीट नंबर सत्रह के लिये रवाना हो गए क्योंकि मुझे वहाँ के अप्रतिम फेवा लेक के सामने ही होटल लेना था। चार बजे तक हम अपने होटलरूम में थे जो फेवा लेक से मात्र सौ मीटर की दूरी पर था। शाम के पाँच बजे हल्की बारिश के बीच निकल पड़े। चारों ओर से हरे-भरे पेड़ों से घिरे पहाड़ों के बीच मनोरम फेवा लेक को निहारने। जितना सुना था उससे कहीं ज्यादा मोहक पाया। तभी बारिश तेज हो गयी तो एक छतरी खरीदी और निकल पड़े यूं ही पैदल पोखरा की जगमगाती सड़कों के बीच। मौसम बहुत ही अलग सा होता जा रहा था, आसमान में घने बादल हमारे दिल की धड़कन बढ़ा रहे थे। मन ही मन ये सोच रहा था कि अगर मौसम का यही आलम रहा तो कल पोखरा के सारे प्लेस नहीं देख पाऊंगा।

उम्मीद के विपरीत एक पूरी ठंड भरी रात के बाद जब सुबह जगा तो आसमान बिल्कुल साफ था। एक खुशी की लहर मन में छा गई कि यहां आना सार्थक हो गया। हम सुबह नौ बजे निकल पड़े पोखरा के सारे दर्शनीय स्थानों का दीदार करने जिसमें प्रमुख थे- पुमदिकोट शिव मंदिर, बौद्ध शांति स्तूप, डेविस जलप्रपात, फेवा झील के बीचो-बीच स्थित ताल बाराही माता का मंदिर, सारंगकोट, चमगादड़ गुफा, गुप्तेश्वर महादेव गुफा और भी छोटे छोटे दर्शनीय स्थल जहां से पोखरा का दृश्य मन उल्लास से ओतप्रोत कर देता था। शाम सात बजे हम वापस फेवा लेक के पास आ गये। अब मन फेवा लेक में नौका विहार का आनंद उठाने के लिये विचलित हो रहा था। फिर क्या था, टिकट ली लाइफ जैकेट पहने और बैठ गये छोटी सी नाव में और कुछ ही पल में हम दोनों लेक के साफ शांत जल में थे। लेक के चारों तरफ उँचे-उँचे पहाड़ थे। मानो लेक की रक्षा की जिम्मेदारी इन्हीं पहाडों ने ली है और नौका विहार कर रहे शैलानियों पर कड़ी नजर रखे हुए है। सच में विस्मित सा कर देने वाला नजारा हमारी आँखों के सामने था- शांत शिथिल सी लेक, उसमें नौका विहार करते सैलानी, लेक के चारों तरफ हरे-भरे उँचे पहाड़ों की घेराबंदी और लेक के बीच एक मंदिर जहाँ हम कुछ देर में पहुंच गए। उस छोटे से आइलैंड से चारों ओर के नजारे का लुत्फ उठाने के बाद मंदिर में दर्शन करके समय था वापस लौटने का।

रात हो चुकी थी और खाने का समय भी हो गया था तो हम दोनों ने फैसला किया कि खाना खाकर ही होटल जाएंगे क्योंकि पहाड़ों के मौसम का कुछ पता नहीं होता कि कब बारिश शुरू हो जाए? एक रेस्टोरेंट में हम दोनों गए। मेरी पत्नी ने थाई कढ़ी का ऑर्डर दिया। थोड़े इंतजार के बाद थाई कढ़ी आई, उसके साथ थोड़ी चावल भी। हम दोनों ही पहली बार इसका स्वाद लेने वाले थे। जैसे ही एक चम्मच कढी अपने मुँह में डाली, हम दोनों की ये आखिरी कढी हो गई। कहने का मतलब कि हम दोनों को ही ये कढ़ी पसंद नहीं आई। फिर दूसरे रेस्टोरेंट में हमने अच्छा सा नेपाली खाना खाया और वापस अपने रूम आ गये। करीब नौ बज चुके थे। अब कल की सुबह का इंतजार हो रहा था और भगवान से बस एक ही प्रार्थना कर रहे थे कि बस कल का मौसम साफ हो क्योंकि कल हमारी बहुत दिनों की तमन्ना पूरी होने वाली थी। सुबह हुई और उम्मीद से बेहतर सुबह, कोई बादल नहीं कोई बारिश नहीं, ऐसा लगा जैसे भगवान ने मेरी प्रार्थना अक्षरशः सुन ली। फिर लगा कल रात को भगवान से कुछ और भी मांग लेता तो वो भी मिल जाता। खैर अब आप सोच रहे होंगे कि आखिर ये सुबह इतनी खास क्यों है मेरे लिए तो वो इसलिए क्योंकि हम दोनों आज पोखारा की सबसे उंची चोटी में से एक सारंगकोट जाने वाले थे, जहां हम दोनों पैराग्लाइडिंग करने वाले थे। इसकी बुकिंग हमने रात को ही करवा ली थी। होटल की खिड़की से झाँका तो दूर पहाड़ी के पीछे हल्की से लालिमा लिए सूरज की किरणें अपनी छटा चारों ओर बिखेर रही थीं। मेरा मन एक अलग ही जुनून में था। चूँकि हमें सुबह आठ बजे टूरिज्म ऑफिस पहुँचना था इसलिये जल्दी-जल्दी तैयार होकर ठीक समय पर वहाँ पहुँच गये। ऑफिस हमारे होटल से बहुत ही नजदीक था फिर भी मैं अपनी तरफ से कोई भी कोताही नहीं बरतना चाहता था क्योंकि इस दिन का इंतजार मैं बहुत दिनों से कर रहा था।

तय समय पर हम पैराग्लाइडिंग के लिये लोगों को उँची चोटी पर पहुँचाने वाली गाड़ी से पोखरा से सारंगकोट के लिये रवाना हुए। हमारे अलावा उस ग्रुप में पाँच लोग और थे, साथ में हमारे एक्सपर्ट जो हमारे साथ पैराग्लाइडिंग करने वाले थे। करीब आधे घंटे बाद हम लोग पोखरा की सबसे ऊंची चोटी पर थे। वहां से पूरे पोखरा का नजारा कुछ अलग ही था। पहाड़ों के मौसम का अंदाजा कुछ यूँ लगाया जा सकता है कि कुछ क्षण में चारों तरफ बादल छा जाते थे। पूरा शहर घने बादलों की आगोश में ढक जाता था और अगले ही क्षण थोड़ी हवा बहती और बादल नदारद हो जाते थे। ऐसे ही पल में जब बादल गायब हुए और हवा की रफ्तार पैराग्लाइडिंग के अनुकुल बनी, हम दोनों अपने अलग-अलग ट्रेनर के साथ उतनी उंचाई से छलांग लगाने को तैयार थे। जैसे ही ट्रेनर ने आवाज दी दौड़ो, हम दोनों अलग-अलग पैराशूट से दौड़े और करीब पच्चीस कदम के बाद लगा दी छलांग पहाड़ की चोटी से पोखरा शहर के उपर खुले आसमान में। ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे खुले साफ आसमान में बादलों के ऊपर, स्वच्छंद किसी पक्षी की भांति हवा से बातें कर रहा हूँ। मेरे साथ जो एक्सपर्ट थे उन्होंने हमें पहाड़ी की दूसरी तरफ ले जाकर ऊपर से ही गाँवों की बस्ती से रूबरू कराया। फिर कुछ देर के लिये उन्होंने पैराशूट की कमान हमें सौंप दी और सिखाया कि किस तरह पैराशूट की दिशा बदली जाती है और इसे नीचे-ऊपर ले जाया जाता है। अद्भुत अविस्मरणीय अनुभव था हमारे लिये। इससे पहले मैंने अपनी जिंदगी में ऐसा अनुभव नहीं किया था। नीचे उतरने के बाद उन्होंने हमें ऊपर की ओर एक पैराशूट की ओर इशारा किया और कहा कि ये आपकी पत्नी का है। मैं उस पर नजर बनाये हुए था।

मैंने उसके एक्सपर्ट को बोल रखा था कि मेरी पत्नी को अगर घबराहट लगे तो बिना समय गवाएं नीचे आ जाएं। उन्होंने मुझे आश्वस्त किया था कि आप चिंता मत कीजिए और कुछ ही देर में मेरी पत्नी भी मेरे साथ थी उसकी मुस्कुराहट बता रही थी कि उसे भी बहुत आनंद आया। हम दोनों ने चाय पी और निकल पड़े होटल की ओर क्योंकि हमारी काठमांडू की फ्लाइट शाम में थी।

चितवन और पोखरा के बाद हमारा अगला सफर काठमांडू ही था। हम दोनों होटल आए, बैग सुबह ही पैक करके रखा था। होटल मैनेजर को पैसे दिये, उन्हें बाय कहा, टैक्सी ली और निकल पड़े पोखरा में बने नए एयरपोर्ट के लिये। पुराना एयरपोर्ट जो अब बंद हो गया है, हमारे होटल से केवल दस मिनट की पैदल दूरी पर था लेकिन नए एयरपोर्ट जाने में हमें करीब बीस मिनट का समय लगा वो भी टैक्सी से। अब इंतजार था फ्लाइट का और फ्लाइट आयी भी पर थोड़ी देर से। अगले ही पल हम फ्लाइट की अपनी-अपनी सीट पर थे। आज एक ही दिन हमारी दो यात्राएं हवा में हो रही थीं। एक पैराग्लाइडिंग करते हुए आसमान से नीचे और अब काठमांडू जाने के लिये जमीन से ऊपर या कहें बादलों से भी ऊपर अनंत आसमान की ओर। सच में गजब का था वो पल। करीब चालीस मिनट के बाद कई पहाड़ियों को पार करते हुए, बादलों को चीरते हुए, हरे भरे सुंदर नजारों के बीच हमारी फ्लाइट काठमांडू एयरपोर्ट पर उतरी। शाम हो चुकी थी और अनुमान के विपरीत काठमांडू का मौसम पोखरा से भी ज्यादा सर्द था। कारण दोपहर में तेज बारिश का होना था। कुछ भी हो नेपाल की धरोहर काठमांडू में आकर मन अंदर ही अंदर रोमांचित हो रहा था। हमें काठमांडू का दिल कहलाने वाले थामेल बाजार में ही रूकना था इसलिये टैक्सी ली और चल पड़े अपने गंतव्य स्थान की ओर।

तेज रफ्तार से नेपाल की सडकों पर दौड़ती हुई हमारी टैक्सी आगे की तरफ बेफिक्र अंदाज में चल रही थी। रास्ते में काठमांडू का प्रसिद्ध पशुपतिनाथ मंदिर फिर गार्डन ऑफ ड्रीम्स को पार करते हुए हमारी टैक्सी थामेल बाजार की ओर बढ़ गई। हमने गाड़ी के अंदर से ही मंदिर को प्रणाम किया भगवान का सुमिरन किया। थोड़ी ही देर बाद हम चमचमाती रौशनी से नहाए थामेल बाजार के बीचों बीच थे। सबसे पहला काम था, एक अच्छा सा होटल बुक करना। दो तीन होटल देखने के बाद एक होटल को बुक किया। थोड़ी देर आराम करने के बाद निकल पड़े बाजार की सैर करने। हांलाकि भूख भी लगी थी। यहां एक बात मैं जरूर कहना चाहूँगा कि काठमांडू के थामेल बाजार में चलते हुए ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो यूरोप के किसी देश में घूम रहा हूँ क्योंकि बाजार विदेशी सैलानियों से पटा पड़ा था। तरह-तरह के नजारों का जायजा लेते हुए हम एक शाकाहारी रेस्टोरेंट में गये। हम मेन्यू का जायजा ही ले रहे थे कि तभी रेस्टोरेंट के मालिक हमारे पास आए और कहा कि आप बिहार से आये हैं क्या? मैंने हँसते हुए हाँ में सर हिलाया तो उन्होंने कहा कि आप दोनों की बातें सुनकर और बोलने के तरीके से हमें लगा। मैंने भी पूछ लिया कि आप भी बिहार से हैं तो उन्होंने कहा- हां, मैं पटना से हूँ। फिर बताया कि कुछ दिन पहले ही इस रेस्टोरेंट का उद्घाटन हुआ है। फिर उनसे बहुत सारी बातें हुईं। मैं और मेरी पत्नी घूमते हुए होटल की विपरीत दिशा में गए। बाजार का जगमगाता स्वरूप हमें दिवाली की रात की याद दिला रहा था। कब हम दोनों होटल पहुँच गये पता ही नहीं चला।

ऐसी जगहों पर शरीर तो थक जाता है पर मन हार नहीं मानता। इस तरह व्यस्तताओं से भरा दिन समाप्त हुआ। सुबह करीब छह बजे मेरी नींद खुल गई, खिड़की से बाहर का नजारा मन को मोहित करने वाला था। हमने सुबह आठ बजे होटल से निकलने का तय किया था। आज पूरा दिन काठमांडू जैसे प्राचीन शहर के प्रसिद्ध स्थानों पशुपतिनाथ मंदिर, दरबार स्क्वायर, बौद्ध स्तूप, मंकी टेंपल, चंद्रगिरी पहाड़ी और कई दर्शनीय स्थान को पास से देखना था। सुबह निकलते-निकलते कुछ चीजें बदल गईं। पहले हम लोगों ने तय किया था कि आराम से खाना खा के ही जायेंगे फिर तय हुआ कि जब पशुपतिनाथ के दर्शन करना है तो भूखे पेट चलते हैं। निकलने का समय आठ बजे से नौ बजे हो गया। काठमांडू के बदले मौसम में बढ़ते समय के साथ-साथ सूरज की तपिश भी तेज हो रही थी। बस स्टैंड तक जाने के लिये हमने रिक्शा लिया। करीब चालीस मिनट के बाद हम भव्य पशुपतिनाथ मंदिर के सामने थे। मुख्य द्वार से मंदिर तक जाने में पैदल दस मिनट का समय लगा। मंदिर का प्रांगण बहुत ही बड़ा और अद्भुत था। चारों ओर लकडी की नक्काशी किए महल, दीवार। उस समय के कारीगरों की कारीगरी को शत-शत बार नमन करने का दिल करता है। तेज धूप के कारण पत्थर से बने फर्श मानो आग के समान जल रहा था। खाली पैर तेजी से हम दोनों मंदिर के अंदर प्रवेश किए। श्रद्धालुओं की उतनी भीड़ नहीं थी। भगवान पशुपति नाथ के अच्छे से दर्शन कर हम वापस मंदिर के बाहर आ गए, खाना खाया और मंदिर के दूसरी ही तरफ ट्रेवल

एजेंसी से अगले दिन रक्सौल बॉडर लौटने की दो टिकटें भी लीं।

हम बस में सवार हुए जो हमें अगले गंतव्य बौद्धनाथ स्तूप तक ले जाने वाली थी। करीब पंद्रह मिनट का समय लगा और बस वाले ने नेपाली भाषा में कहा- स्तूप आ गया जो कि मुझे समझ में आ गया। हम दोनों वहीं सड़क पर उतरे और करीब दस मिनट पैदल चलने के बाद बहुत बडे से स्तूप के बिल्कुल सामने खडे थे, अद्भुत सा नजारा सामने था। विदेशी सैलानी भी बड़ी संख्या में मौजूद थे। सभी स्तूप की परिक्रमा कर रहे थे, हमने भी साथ में परिक्रमा की। उसके बाद वहीं एक स्टॉल पर मैंने आइसक्रीम और मेरी पत्नी ने नेपाल की प्रसिद्ध बबल टी ऑर्डर की। पहले हम दोनों ने आइसक्रीम खत्म की जो स्वादिष्ट थी और अब बारी थी बबल टी की जो हम पहली बार पीने वाले थे। सच कहूँ तो शुरू में थोड़ी ठीक लगी पर बाद में दोनों में से किसी को भी पसंद नहीं आई। मेरी पत्नी ने ग्लास मुझे सौंप दी। अच्छी रकम अदा की थी इस टी के लिये तो जैसे-तैसे मैंने पीने की कोशिश की पर आधा ग्लास खत्म करते-करते मैं हार मान गया, ग्लास फेंक दी और पैसे वसूल करने का विचार वहीं त्याग कर दूसरी बस में बैठ गए। हमारा अगला ठिकाना था पहाड पर अवस्थित स्वंयभूनाथ स्तूप जहां की सीढ़ियों पर चढ़ते हुए आपको बहुत सारे बंदर दिखेंगे जिस कारण ये मंकी टेंपल के नाम से भी प्रसिद्ध है। ऊपर उँचाई से पूरे काठमांडू शहर का नजारा साफ साफ दिख रहा था। चारों तरफ पहाडों के बीच घनी आबादी वाला शहर, नेपाल का सबसे अधिक जनसंख्या वाला शहर काठमांडू, नेपाल की राजधानी।

थोड़ी-थोड़ी बारिश होने लगी। छाता हम साथ ले गये थे। एक छाते के अंदर दोनों आए और धीरे-धीरे सीढ़ियों को एक-एक कर पीछे छोड़ते हुए नीचे आ रहे थे कि तभी सीढ़ी के किनारे चेरीब्लासम के जैसा ही एक पेड़ और उस पर गुलाबी और बैंगनी रंग के फूल देखकर एकाएक मेरे कदम ठहर से गये। दूर पीछे सुंदर पहाड और हम खुद भी पहाड़ की चोटी पर, कुल मिलाकर बारिश में नजारा अद्भुत था। मैंने छतरी देकर अपनी पत्नी को कहा- उस पेड के पास खड़े हो जाओ क्योंकि मुझे इस दृश्य को अपने कैमरे में कैद करना था। दो-तीन फोटो लेने के बाद हम नीचे उतरे वहां हम दोनों ने नींबू वाले चाय की चुस्की ली फिर चटपटे का स्वाद लिय़ा और गोलगप्पे से अंत करते हुए हम आगे बढ़े। मोबाइल में समय देखा तो शाम के चार बज चुके थे। अब वहां से हमें चंद्रगिरी हिल्स जाना था। बस पूरी तरह भरी हुई थी, हम दोनों के पास समय बहुत ही कम था तो तय किया कि करीब आधे घंटे का सफर बस में खड़े तय कर लेंगे। हांलाकि करीब दस मिनट के बाद ही सीटें खाली होने लगीं। बस कंडक्टर को यूं तो मैंने बोल रखा था कि मुझे हिल्स जाना है फिर भी मैं बस की खिड़की से अपनी पैनी नजर बनाये हुए था। तभी मैंने देखा कि हमें जहां उतरना था, बस उससे आगे जा रही है तो मैंने जोर से आवाज लगाई और बस रोकने को कहा। धन्यवाद हो यूट्यूब और गूगल मैप का जिसने हमें सही जगह उतरने में मदद की।

उतरने के बाद खड़े रास्ते पर कुछ दूर पैदल चलते हुए हमें सामने ऊंचाई पर एक बिल्डिंग दिखाई दी, जहाँ से रोपवे का टिकट लेकर हमें चंद्रगिरी हिल्स तक जाना था। हमने दो टिकट ली और एक ट्रॉली में बैठ गये जो अगले पंद्रह-बीस मिनट में करीब डेढ़ किलोमीटर उँची पहाड़ी की चोटी पर जाने वाली थी। सच कहूँ तो ये रोपवे का पंद्रह-बीस मिनट का जाने का समय एवं उससे थोड़ा कम आने का समय रोमांच से भरा हुआ था। जब धीरे-धीरे रोपवे अपनी ऊंचाई प्राप्त करने लगी और दोनों तरफ गगनचुम्बी पहाड़ी की चोटी के बीच बादलों को चीर कर आगे बढ़ने लगी, धीरे-धीरे शरीर में बढ़ते एड्रेनिल के साथ-साथ रोमांच भी बढ़ता जा रहा था। कुछ कम हो रहा था तो वो था तापमान जो बढ़ती उँचाई के साथ कम होता जा रहा था और सर्दी धीरे-धीरे बढ़ती जा रही थी। ऊपर पहाड़ी से पूरे काठमांडू शहर का नजारा अद्भुत प्रतीत हो रहा था। सबसे मजेदार बात ये लगी कि नीचे पूरे शहर में अंधेरे ने अपना घर बना लिया था। परंतु यहां चारों तरफ चोटी से घिरे स्थान पर सूर्य की लालिमा अभी भी सहज दिखाई पड रही थी। कुछ यादगार पल गुजारने के बाद हम वापस नीचे आ गए, टैक्सी की और मुख्य सड़क मार्ग पहुँच गये। वहाँ से हमने वापस आने के लिये बस ली। अगली सुबह हम दोनों थामेल के पास ही हमारे होटल से पैदल दस मिनट की दूरी पर दरबार स्क्वायर की भव्यता का गवाह बनने निकल पड़े और देर रात रक्सौल के लिये बस से रवाना हो गये। वहाँ से फिर हावड़ा की ट्रेन से अगली सुबह अपने गंतव्य स्थल कोलकाता पहुँच गए।

*****

जलवायु परिवर्तन : समस्या और समाधान

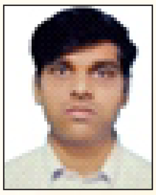

सोनू कुमार, सहायक लेखा अधिकारी

पृथ्वी के ध्रुवों पर हजारों साल से जमी बर्फ पिघल रही है जिससे दुनिया भर में जंगल आग में भस्म हो रहे हैं। समुद्र का बढता जलस्तर आने वाले सालों में कई बड़े शहरों को निगल सकता है। कहीं सूखा है तो कहीं आए दिन बाढ और तूफान आ रहे हैं। हालात बहुत खराब हैं। करोड़ों जिंदगियां दांव पर लगी हुई हैं। जहां पर जलवायु परिवर्तन का सीधे तौर पर असर न पड़ रहा हो, वे भी जल्द इसकी चपेट में आ सकते हैं। समस्या इतनी गंभीर है कि पृथ्वी के अस्तित्व पर सवाल उठने लगे हैं। लेकिन यह नौबत क्यों आई? जलवायु परिवर्तन आखिर क्या है जिसकी हर तरफ इतनी चर्चा हो रही है।

जलवायु परिवर्तन या फिर कहें क्लाइमेट चेंज का मतलब पृथ्वी के औसत तापमान में हो रही वृद्धि से है। जलवायु परिवर्तन पृथ्वी के जलवायु पैटर्न में दीर्घकालिक बदलाव को कहते हैं, इसमें तापमान, वर्षा, हवा के पैटर्न और अन्य मौसमी स्थितियों में दशकों या उससे अधिक समय तक होने वाले परिवर्तन शामिल हैं। यह समझना महत्वपूर्ण है कि मौसम और जलवायु में अंतर होता है। मौसम किसी विशेष स्थान पर थोड़े समय (जैसे कुछ घंटे या दिन) के लिए वायुमंडल की स्थिति होती है जबकि जलवायु किसी स्थान पर लंबे समय (आमतौर पर 30 साल या उससे अधिक) तक का औसत मौसम होता है। जलवायु परिवर्तन के साक्ष्य विभिन्न स्रोतों से प्राप्त होते हैं जो पुराकालीन जलवायवीय दशाओं के विवेचन हेतु प्रयोग में लाये जा सकते हैं। पृथ्वी की परिक्रमा करने वाले उपग्रहों और प्रौद्योगिकी में अन्य प्रगति ने वैज्ञानिकों को वैश्विक स्तर पर हमारे ग्रह और इसकी जलवायु के बारे में विभिन्न प्रकार की जानकारी एकत्र करने में सक्षम बनाया है। जलवायु परिवर्तन के कुछ सबसे प्रमुख साक्ष्य निम्नलिखित हैं-

वायुमंडलीय साक्ष्य

वैश्विक तापमान में वृद्धि: पृथ्वी का औसत सतह तापमान लगातार बढ़ रहा है। 19वीं सदी के अंत की तुलना में वर्तमान वैश्विक औसत तापमान में लगभग 0.85°C की वृद्धि हुई है, और यह वृद्धि जारी है। पिछले कुछ दशकों में से प्रत्येक दशक, पिछले किसी भी दशक की तुलना में अधिक गर्म रहा है। भारत का तापमान भी वर्ष 1900 से वर्तमान तक लगभग 2°C बढ़ चुका है। गर्मियों में तापमान अधिकता और शीतकाल में तापमान की कमी देखी जा रही है।

ग्रीनहाउस गैसों का बढ़ता स्तर: वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन और नाइट्रस ऑक्साइड जैसी ग्रीनहाउस गैसों की सांद्रता औद्योगिक क्रांति के बाद से काफी बढ़ी है। वैज्ञानिक प्रमाण बताते हैं कि यह वृद्धि मुख्य रूप से जीवाश्म ईंधन के जलने, वनों की कटाई और कृषि गतिविधियों जैसी मानवीय गतिविधियों के कारण हुई है।

अत्यधिक मौसम की घटनाएं: चक्रवात, बाढ़, सूखा, उष्ण लहर (हीटवेव) और बेमौसम बारिश/ओलावृष्टि जैसी चरम मौसम की घटनाओं की आवृत्ति और तीव्रता में वृद्धि हुई है।

जलमंडलीय साक्ष्य

समुद्र के स्तर में वृद्धि: ग्लेशियरों और हिमखंडों के पिघलने और समुद्र के गर्म होने से (जो पानी के विस्तार का कारण बनता है) समुद्र का स्तर बढ़ रहा है। विगत शताब्दी में वैश्विक समुद्र स्तर में लगभग 8 इंच की वृद्धि देखी गई है। समुद्र के स्तर में वृद्धि से तटीय क्षेत्रों में कटाव और निचले इलाकों में बाढ़ का खतरा बढ़ रहा है।

महासागरों का अम्लीकरण: महासागर वायुमंडल से बड़ी मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड (CO2) को अवशोषित करते हैं। CO2 के बढ़ने से महासागरों का पानी अधिक अम्लीय हो रहा है। महासागरों की ऊपरी परत द्वारा अवशोषित CO2 की मात्रा में प्रति वर्ष लगभग 2 बिलियन टन की बढ़ोत्तरी हो रही है। यह समुद्री

जीवों, विशेष रूप से प्रवाल भित्तियों और कवच वाले जीवों के लिए हानिकारक है।

क्रायोस्फेरिक साक्ष्य

पिघलती बर्फ और ग्लेशियर: हिमालय और अन्य पर्वतीय शिखरों पर बर्फ की मात्रा में कमी आ रही है। आर्कटिक और अंटार्कटिक में समुद्री बर्फ की चादरें सिकुड़ रही हैं। ग्लेशियरों का पिघलना तेजी से हो रहा है, जिससे नदियों के जल स्तर और समुद्र के जल स्तर पर असर पड़ रहा है।

पारिस्थितिक तंत्र में परिवर्तन: कई पौधों और जानवरों की प्रजातियां अपने भौगोलिक वितरण और मौसमी गतिविधियों को बदल रही हैं, जैसे फूल आने का समय या पक्षियों के प्रवास का समय। कुछ प्रजातियों को निवास स्थान के नुकसान का सामना करना पड़ रहा है, जिससे उनके विलुप्त होने का खतरा बढ़ गया है।सूखे और चरम तापमान के कारण जंगल की आग अधिक प्रचलित हो रही है।

जलवायु परिवर्तन के कारण

जलवायु परिवर्तन में योगदान देने वाली शक्तियों में मानवीय और प्राकृतिक दोनों कारक शामिल हैं।

मानवीय कारक:

ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन: कार्बन डाइऑक्साइड (Co_2), मीथेन (CH_4), और नाइट्रस ऑक्साइड (N_2O) जैसी गैसें वायुमंडल में गर्मी को रोकती हैं। ये गैसें मुख्य रूप से निम्न स्रोतों से निकलती हैं: जीवाश्म ईंधन के दहन से (कोयला, तेल और प्राकृतिक गैस का उपयोग बिजली, परिवहन और उद्योगों में), कृषि और पशुपालन से, धान की खेती और पशुओं से मीथेन उत्सर्जन, औद्योगिक प्रक्रियाएँ सीमेंट उत्पादन और रासायनिक प्रक्रियाएँ एवं वनों की कटाई और भूमि उपयोग में परिवर्तन आदि से।

औद्योगीकरण और शहरीकरण: बढ़ता ऊर्जा उपयोग, औद्योगिक गतिविधियाँ और परिवहन ग्रीनहाउस गैसों को बढ़ाते हैं।

कचरा और अपशिष्ट प्रबंधन: लैंडफिल से मीथेन उत्सर्जन और अपशिष्ट जल से नाइट्रस ऑक्साइड का उत्सर्जन।

मानवीय गतिविधियों का बढ़ता दबाव: जनसंख्या वृद्धि और जीवनशैली में बदलाव (जैसे अधिक ऊर्जा खपत) जलवायु परिवर्तन को तेज करते हैं।

प्राकृतिक कारक (सीमित प्रभाव): ज्वालामुखी विस्फोट और सौर विकिरण में बदलाव भी जलवायु को प्रभावित करते हैं, लेकिन मानवीय गतिविधियाँ प्रमुख कारण हैं

जलवायु परिवर्तन का प्रभाव विभिन्न क्षेत्रों और समाज के लिए महत्वपूर्ण कई क्षेत्रों में स्पष्ट है। इसे निम्न प्रकार से देखा जा सकता है:

वैश्विक प्रभाव

वैश्विक तापमान में वृद्धि: पृथ्वी का औसत तापमान लगातार बढ़ रहा है।इससे गर्मी की लहरें और चरम गर्मियां बढ़ रही हैं।

मौसम के पैटर्न में बदलाव: कहीं अत्यधिक बारिश से बाढ़ की समस्या बढ़ रही है, तो कहीं पानी की कमी से सूखे की स्थिति पैदा हो रही है।

ग्लेशियरों और बर्फ का पिघलना: बढ़ते तापमान के कारण ध्रुवीय क्षेत्रों और पहाड़ों पर जमे ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं।

समुद्र के स्तर में वृद्धि: ग्लेशियरों के पिघलने और महासागरों के गर्म होने से समुद्र का स्तर बढ़ रहा है। इससे तटीय क्षेत्रों में बाढ़ का खतरा बढ़ रहा है और कुछ निचले द्वीप डूब सकते हैं।

जैव विविधता पर प्रभाव: कई पेड़-पौधे और जीव-जंतु बदलते जलवायु पैटर्न के अनुकूल नहीं हो पा रहे हैं, जिससे उनकी प्रजातियों के विलुप्त होने का खतरा बढ़ रहा है। कुछ प्रजातियां अपने मूल निवास स्थान से पलायन कर रही हैं।

कृषि पर प्रभाव: मौसम के पैटर्न में बदलाव, अनियमित वर्षा और तापमान में वृद्धि से कृषि उत्पादकता प्रभावित हो रही है। फसल चक्र बाधित हो रहा है और कुछ स्थानों पर फसलों की पैदावार में कमी आ रही है।

मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव: गर्मी बढ़ने से मलेरिया, डेंगू और येलो फीवर जैसे संक्रामक रोगों का प्रकोप बढ़ सकता है। शुद्ध पीने के पानी और ताजे भोजन की कमी हो सकती है। वायु और जल की गुणवत्ता पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव: पानी की कमी, मिट्टी के कटाव और वनस्पति में कमी से प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढ़ रहा है। ये सभी प्रभाव एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं और पृथ्वी के पारिस्थितिकी तंत्र और मानव जीवन पर गंभीर परिणाम डाल रहे हैं।

जलवायु परिवर्तन को कम करने के लिए अंतरराष्ट्रीय प्रयास

जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक समस्या है जिसका समाधान करने के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता है। पिछले कुछ दशकों में, विश्व समुदाय ने **जलवायु परिवर्तन को कम करने के लिए कई प्रयास किए हैं।**

जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन: जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन एक महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय संधि है जिसका उद्देश्य जलवायु परिवर्तन और उसके प्रभावों से निपटना है। इसका उद्देश्य वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैस सांद्रता को ऐसे स्तर पर स्थिर करना है, जो जलवायु प्रणाली में खतरनाक मानवजनित हस्तक्षेप को रोक सके। इसका कार्य जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करना और वैश्विक सहयोग को बढ़ावा देना है। इसकी गतिविधियों में ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन की रिपोर्टिंग, जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का आकलन और वित्तीय और तकनीकी सहायता प्रदान करना शामिल है।

जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल: यह अंतर-सरकारी निकाय है जिसे 1988 में विश्व मौसम विज्ञान संगठन और संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम द्वारा स्थापित किया गया था। जलवायु पर अंतर-सरकारी पैनल वैज्ञानिक अनुसंधान और विश्लेषण, रिपोर्ट प्रकाशन आदि कार्य करता है।

क्योटो प्रोटोकॉल: जिसे आधिकारिक तौर पर क्योटो प्रोटोकॉल के नाम से जाना जाता है, 1997 में जापान के क्योटो में आयोजित संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन ऑन क्लाइमेट चेंज (UNFCCC) के तहत अपनाया गया एक अंतरराष्ट्रीय समझौता है। इसका मुख्य उद्देश्य ग्रीनहाउस गैसों (जैसे कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन आदि) के उत्सर्जन को कम करना और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को नियंत्रित करना है। यह प्रोटोकॉल 2005 में लागू हुआ और इसे जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए एक ऐतिहासिक कदम माना जाता है।

पेरिस समझौता पेरिस समझौता: जलवायु परिवर्तन पर एक महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय संधि है। इसे दिसंबर 2015 में संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन (COP21) के दौरान पेरिस में 196 पक्षों (देशों) द्वारा अपनाया गया था और यह 4 नवंबर 2016 को लागू हुआ। पेरिस समझौते का मुख्य लक्ष्य वैश्विक औसत तापमान वृद्धि को पूर्व-औद्योगिक स्तरों से 2 डिग्री सेल्सियस से काफी नीचे सीमित करना है, साथ ही इसे 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित करने के प्रयास करना है।

अंतर्राष्ट्रीय जलवायु परिषद नेटवर्क: यह दुनिया भर के जलवायु सलाहकार परिषदों के बीच सहयोग को बढ़ावा देने का लक्ष्य रखता है, ताकि पेरिस समझौते का समर्थन किया जा सके।

अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन: सौर ऊर्जा से संपन्न देशों का एक संधि आधारित अंतर-सरकारी संगठन है। अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन की शुरूआत भारत और फ्रांस ने 30 नवंबर, 2015 को पेरिस जलवायु सम्मेलन के दौरान की थी। इसके प्रमुख उद्देश्यों में वैश्विक स्तर पर 1000 गीगावाट से अधिक सौर ऊर्जा उत्पादन क्षमता प्राप्त करना और वर्ष 2030 तक सौर ऊर्जा में निवेश के लिये लगभग 1000 बिलियन डॉलर की राशि को जुटाना शामिल है।

जलवायु परिवर्तन से निपटने हेतु भारत के प्रयास

भारत जलवायु परिवर्तन से निपटने और एक स्थायी भविष्य की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठा रहा है। ये प्रयास शमन (उत्सर्जन कम करना) और अनुकूलन (बदलते जलवायु पैटर्न के अनुकूल होना) दोनों पर केंद्रित हैं। इसके लिए राष्ट्रीय कार्य योजना का शुभारंभ वर्ष 2008 में किया गया था। इसमें राष्ट्रीय सौर मिशन, विकसित ऊर्जा दक्षता के लिये राष्ट्रीय मिशन, सुस्थिर आवास पर राष्ट्रीय मिशन, शहरी नियोजन में जलवायु अनुकूलन को शामिल करना, राष्ट्रीय जल मिशन, सुस्थिर हिमालयी पारिस्थितिक तंत्र हेतु राष्ट्रीय मिशन , हरित भारत हेतु राष्ट्रीय मिशन, सुस्थिर कृषि हेतु राष्ट्रीय मिशन, जलवायु परिवर्तन हेतु रणनीतिक ज्ञान पर राष्ट्रीय मिशन आदि प्रयास शामिल हैं।

भविष्य की राह:

ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में कमी: जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने के लिए ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में कमी करना आवश्यक है।

नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग: नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों जैसे कि सौर और पवन ऊर्जा का उपयोग करके हम ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम कर सकते हैं।

जलवायु परिवर्तन के अनुकूलन: जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के अनुकूलन के लिए हमें जल संसाधनों का संरक्षण करना, बाढ़ और सूखे की तैयारी करना और पारिस्थितिकी तंत्र को बचाने के लिए काम करना होगा।

निष्कर्ष

जलवायु परिवर्तन एक गंभीर वैश्विक समस्या है जिसके लिए हमें मिलकर काम करने की आवश्यकता है। वैज्ञानिक कहते हैं कि अगर तापमान वृद्धि को डेढ डिग्री सेल्सियस पर रोका जा सके तो यह सुरक्षित होगा लेकिन दुनिया के देश अब भी नफा-नुकसान का हिसाब लगा रहे हैं। पर्यावरण कार्यकर्ताओं का आरोप है कि पर्यावरण को बचाने के लिए जितनी गंभीरता और पक्के इरादे की जरूरत है वह अब भी दुनिया भर की सरकारों में नहीं दिखता है इसलिए बड़ों के साथ बच्चे भी अब सड़कों पर उतर रहे हैं और जलवायु संरक्षण के लिए कड़े कदमों की मांग कर रहे हैं। तो सवाल यह है कि हम और आप क्या कर रहे हैं और क्या कर सकते हैं। छोटे-छोटे प्रयास जैसे कि कार के बजाय साइकिल से, विमान की बजाय ट्रेन से यात्रा करना, पैदल चलना, नई-नई चीज़ें खरीदने से बचना और पुरानी चीजों का अधिकतम उपयोग करना, वृक्षारोपण आदि से यकीन मानिए हम पृथ्वी की बड़ी समस्या के से निपट सकते हैं।

*****

"हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।"

- स्वामी दयानंद सरस्वती

आम जनमानस और पर्यावरण

सुमीत कुमार वर्णवाल, लेखाकार

मार्च का महीना अभी-अभी शुरू हुआ है और गर्मी ने पहले ही अपना असर दिखाना शुरू कर दिया है। रागिनी ने मोहन से कहा, "देखो ना, लगता है छत के ऊपर नीम या आम का पेड़ लगाना होगा।" मोहन ने आश्चर्यचकित होकर जवाब दिया, "अरे! छत के ऊपर इतना विशाल पेड़ कैसे लगाया जा सकता है?" रागिनी ने पंखा चलाया और सोचने लगी कि पहले मानव ने विकास और आधारभूत संरचनाओं के लिए अंधाधुंध पेड़ों की कटाई की। आज जब वसंत में ही इतनी गर्मी महसूस हो रही है, तो हम जैसे साधारण लोग भी रोहन की तरह छत पर पेड़ लगाने की सोचने लगे हैं। यह तो अच्छा है कि रोहन ने एयर कंडीशनर की बात नहीं की। आजकल देखा जा रहा है कि मार्च का तापमान भीषण गर्मी की तरह महसूस हो रहा है। यदि हालात ऐसे ही रहे, तो आने वाले वर्षों की कल्पना करना डरावना हो सकता है।

रागिनी के पास राधिका आई और बोली, "मेरे डैड ने अगले महीने एयर कंडीशनर लेने का प्लान बनाया है।" रागिनी ने कहा, "यह तो अच्छी बात है, लेकिन तुम्हारे घर में तो पहले से ही एयर कंडीशनर है ना?" राधिका बोली, "हाँ, है तो सही, लेकिन इस बार हम हर कमरे में लगवाने वाले हैं।"

गर्मी इतनी बढ़ गई है कि एसी एक ज़रूरत बनती जा रही है। लेकिन असली परेशानी तो उन आर्थिक रूप से कमज़ोर लोगों को होती है जिनके पास यह सुविधा नहीं होती। जिनके पास थोड़ा बहुत साधन है, वे कूलर से काम चला लेते हैं। बाकी लोग पंखे की हवा से ही संतोष करते हैं।

सरकार को पेड़ लगाने की ज़िम्मेदारी लेनी चाहिए, लेकिन सुविधा तो उन्हें पहले ही मिल जाती है। नतीजतन, तापमान का यह तांडव पूंजीवादी सोच का परिणाम बन चुका है। अच्छी बात यह है कि वर्तमान सरकार कुछ प्रयास कर रही है। आजकल नीम कॉरिडोर की चर्चा हो रही है, जैसे राजस्थान में जवाई बांध के पास बना कॉरिडोर पर्यावरण के लिए लाभकारी सिद्ध हो रहा है। सरकार चाहे तो अलग-अलग क्षेत्रों में भी ऐसे कॉरिडोर बनाए जा सकते हैं। हालाँकि सरकारें प्रयास कर रही हैं, लेकिन कुछ कमियाँ आम लोगों में भी हैं। हमारी सोच भी केवल व्यावसायिक हो गई है। यदि किसी के घर में कुछ पेड़ हैं तो वह जल्द ही वहां भवन बना लेता है। आबादी की तीव्र गति से वृद्धि भी एक बड़ा कारण है। पहले जंगल काटे गए, फिर खेत बने और अब खेतों की जगह इमारतें बन रही हैं। जंगल अब कंक्रीट के जंगल बनते जा रहे हैं।

रागिनी को अपने पापा की बात याद है– "जहां हम आज रह रहे हैं, वहां 15 साल पहले जंगल ही जंगल था। मैंने सबसे पहले घर बनाया और अब देखो– हर ओर घर ही घर हैं।" रोज़ पेड़ काटे जा रहे हैं, लेकिन नए पेड़ कितने लगाए जा रहे हैं– यह भगवान ही जानता है। रागिनी को याद है कि जब वह गर्मियों में नानी के घर जाती थी, तो नानी उसे दोपहर में बाहर नहीं जाने देती थीं, कहती थीं – "बाहर मत जाओ, लू लग जाएगी।" आजकल ये परिस्थिति समय से पहले ही दिखने लगी है। सरकार, अस्पताल और आम लोग अब जागरूक हो रहे हैं। कुछ क्षेत्रों में काम करने का तरीका भी बदला जा रहा है। यदि स्थिति नहीं सुधरी, तो भविष्य में इसे भी आपदा की श्रेणी में न गिनना पड़े, इसलिए पर्यावरणविद लगातार इस पर विचार कर रहे हैं। ठंडे प्रदेशों में भी अब हीटवेव का प्रभाव देखा जा रहा है। जो लोग खुले आसमान के नीचे काम करते हैं, वे सच्चे योद्धा हैं। सबसे दुखद बात यह है कि आम जनमानस अभी भी वैचारिक रूप से इतना पीछे है कि पर्यावरण कभी चुनाव का मुद्दा बन ही नहीं पाता। चुनावों के मंचों पर पंखे और कूलर लगे होते हैं, और नेता भाषण देते हैं। जनता उन्हें सुनने आती है। लेकिन जब पर्यावरण की बात होती है, तब सब चुप हो जाते हैं। लेकिन एक दिन ऐसा आएगा जब आम जनता पर्यावरण को भी अपना मुद्दा बनाएगी। पर्यावरण संरक्षण केवल सरकारों की ही नहीं, बल्कि हर नागरिक की व्यक्तिगत जिम्मेदारी है। जब तक हम व्यक्तिगत स्तर पर छोटे-छोटे कदम नहीं उठाएंगे, तब तक कोई भी योजना पूरी तरह सफल नहीं हो सकती। पेड़ लगाना, प्लास्टिक का उपयोग कम करना, वर्षा जल संचयन, और ऊर्जा की बचत जैसे कार्य यदि हर व्यक्ति अपने जीवन में अपनाए, तो इसका सामूहिक प्रभाव बहुत सकारात्मक हो सकता है।

आज की पीढ़ी के लिए यह आवश्यक है कि वे पर्यावरण शिक्षा को केवल पुस्तकों तक सीमित न रखें, बल्कि व्यवहार में भी लागू करें। विद्यालयों में तो वृक्षारोपण जैसे कार्यक्रम होते हैं, लेकिन यदि बच्चे अपने घर, मोहल्ले और स्कूल के आस-पास एक-एक पौधा लगाएं और उसकी देखभाल करें, तो आने वाले वर्षों में हरियाली बढ़ सकती है। शहरीकरण के साथ-साथ जल संकट भी एक बड़ा खतरा बन चुका है। भूमिगत जलस्तर दिन-प्रतिदिन नीचे जा रहा है। छतों पर वर्षा जल संचयन की व्यवस्था करना आज की ज़रूरत बन चुकी

है। कई शहरों में यह अनिवार्य भी किया गया है, लेकिन जागरूकता की कमी के कारण इसका प्रभाव सीमित है। वातावरण को शुद्ध रखने के लिए केवल पेड़ लगाना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि वनों की रक्षा करना भी उतना ही ज़रूरी है। अवैध कटाई, अतिक्रमण, और जंगलों में लगने वाली आग से हमारे प्राकृतिक संसाधनों को भारी नुकसान हो रहा है। सरकार को कड़े कानूनों के साथ-साथ तकनीकी उपायों का भी सहारा लेना चाहिए ताकि जंगल सुरक्षित रहें।

बढ़ते शहरीकरण के कारण जैव विविधता भी प्रभावित हो रही है। कई जीव-जंतु और पक्षियों की प्रजातियाँ विलुप्त होने के कगार पर हैं। शहरों में पक्षियों के लिए घोंसला बनाना, पानी रखना और हरियाली बनाए रखना छोटे लेकिन असरदार कदम हो सकते हैं। पर्यावरण संरक्षण के लिए सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है। समाज के हर वर्ग को इसमें भागीदार बनाना होगा – छात्र, शिक्षक, अधिकारी, व्यवसायी, किसान, गृहिणी सभी की भूमिका महत्वपूर्ण है। ग्राम पंचायतों से लेकर नगर निगम तक, सभी स्थानीय निकायों को ठोस योजना बनानी चाहिए। पर्यावरण को लेकर मीडिया और फिल्म उद्योग की भूमिका भी अहम हो सकती है। वृत्तचित्र, नाटक, और फिल्में आम जनता में जागरूकता फैलाने का प्रभावी माध्यम हैं। यदि बड़े स्तर पर अभियान चलाए जाएं, तो जनमानस की सोच बदली जा सकती है। आज समय की मांग है कि हम "विकास" को पुनः परिभाषित करें। विकास का अर्थ केवल ऊँची इमारतें और चौड़ी सड़कें नहीं होना चाहिए, बल्कि ऐसा संतुलन हो जिसमें पर्यावरण, समाज और आर्थिक आवश्यकताओं के बीच तालमेल बना रहे।

हर व्यक्ति को यह समझना होगा कि पर्यावरण की रक्षा अपने जीवन की रक्षा के समान है। अगर हम आज सतर्क नहीं हुए, तो भविष्य में स्थिति संभालना मुश्किल होगा। हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम न केवल पर्यावरण की रक्षा करेंगे, बल्कि अगली पीढ़ी को भी इसके महत्व से अवगत कराएंगे। अगर हर घर से यह प्रयास शुरू हो, तो निश्चित रूप से आने वाला कल हराभरा और सुरक्षित होगा।

*****

भारत की वैश्विक अंतरिक्ष में बढ़ती भूमिका

अंशुबाला, सहायक लेखा अधिकारी

भारत की अंतरिक्ष यात्रा कभी एक स्वप्न के रूप में शुरू हुई थी, जब 1963 में एक छोटे से रोहिणी रॉकेट को तिरुवनंतपुरम के तट से छोड़ा गया था। परन्तु आज, भारत एक ऐसे मुकाम पर पहुंच चुका है जहाँ वह न केवल आत्मनिर्भर है, बल्कि वैश्विक अंतरिक्ष शक्ति के रूप में मान्यता प्राप्त कर चुका है। चन्द्रमा, सूर्य, मंगल ग्रहों पर अपने सफल मिशनों के माध्यम से भारत ने यह सिद्ध कर दिया है कि वैज्ञानिक प्रगति में वह किसी भी विकसित देश से पिछे नहीं है।

शुरूआत से आज तक-

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) की स्थापना 1969 में डॉ. विक्रम साराभाई के नेतृत्व में हुई थी। उस समय संसाधन सीमित थे, लेकिन दृष्टिकोण असीम था। पहले उपग्रह आर्यभट्ट से लेकर चंद्रयान, मंगलयान और आदित्य एल-1 तक की यात्रा एक अद्वितीय वैज्ञानिक धरोहर बन चुकी है। 1975 में आर्यभट्ट उपग्रह के प्रक्षेपण ने जब पहली बार भारतीय अंतरिक्ष प्रयासों का संकेत दिया, तब किसी ने सोचा भी नहीं था कि भारत एक दिन अपने दम पर दूसरे ग्रहों तक पहुंचने वाला पहला विकासशील देश बनेगा।

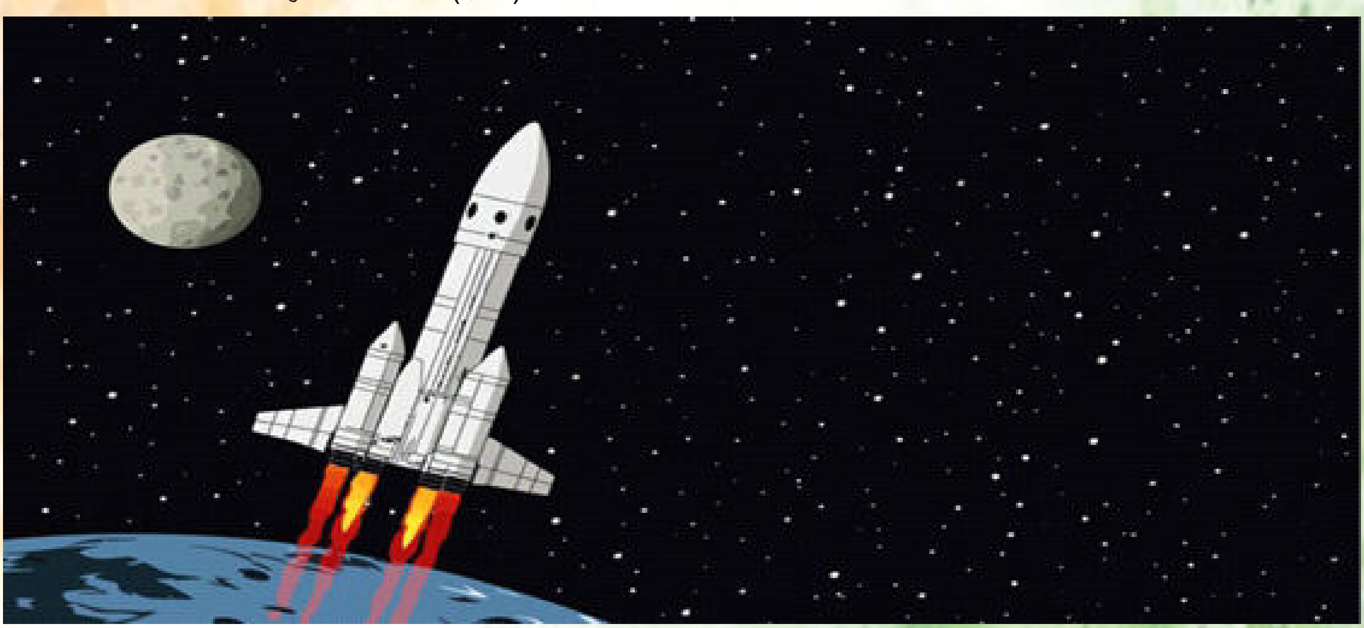

चंद्रमा पर भारत- चंद्रयान मिशन

भारत ने चंद्रयान-1 के माध्यम से 2008 में चद्रमा की कक्षा में प्रवेश किया। यह वही मिशन था, जिसने पहली बार चंद्रमा की कक्षा में सतह पर जल तत्व की मौजूदगी के प्रमाण दिए। तत्पश्चात 2019 में चंद्रयान-2 और 2023 में चंद्रयान-3 की सफल लैंडिंग ने भारत को रूस, अमेरिका और चीन के बाद चंद्रमा पर उतरने वाला चौथा देश बना दिया और दक्षिणी ध्रुव पर पहुंचने वाला पहला देश।

आत्मनिर्भता की ओर बढ़ते कदम

आज भारत उन चुनिंदा देशों में है जो न केवल खुद के लॉन्च वहीकल्स (रॉकेट) बनाता है, बल्कि उपग्रह, लैंडर, रोवर और मिशन नियंत्रण प्रणाली भी स्वयं विकसित करता है। भारत ने न केवल पृथ्वी की कक्षा में उपग्रह भेजे, बल्कि चंद्रमा मगल और सूर्य की ओर भी अपना कदम बढ़ा दिया है।

महत्वपूर्ण मिशनों की एक झलक:-

चंद्रयान-1 (2008): चंद्रमा पर पानी की खोज।

मंगलयान (2013): विश्व का सबसे सस्ता और पहले प्रयास में सफल मिशन।

चंद्रयान-3 (2023): चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सफल लैंडिंग करने वाला पहला देश।

आदित्य-एल-1 (2023): भारत का पहला सूर्य मिशन, जो अब एल-1 बिंदु पर पहुंच चुका है।

एक्सिओम-4 (2025): अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर शुभांशु शुक्ला द्वारा प्रयोग।

वैश्विक सहयोग और अंतरराष्ट्रीय पहचान

भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम अब केवल भारत तक सीमित नहीं है। इसरो विभिन्न देशों के उपग्रहों को अपने लॉन्च वाहनों के माध्यम से अतरिक्ष में पहुंचा रहा है। पीएसएलवी (पोलर सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल) के माध्यम से 30 से अधिक देशों के 400 से अधिक उपग्रहों को भारत ने सफलतापूर्वक लॉन्च किया है। भारत ने एक प्रकार से "लॉन्च सर्विस प्रोवाइडर" की भूमिका निभानी शुरू कर दी है और वह भी कम लागत, उच्च सटीकता और विश्वसनीयता के साथ।

भविष्य की परियोजनाएँ - अगले कदम

- **गगनयान मिशन:** भारत का पहला मानव अंतरिक्ष मिशन 'मिशन गगनयान' 2026 तक लॉन्च होने की संभावना है। इसमें भारतीय अंतरिक्ष यात्री (जिन्हें व्योमनॉटस कहा जा रहा है) पृथ्वी की निचली कक्षा में जाएंगे और अतरिक्ष में तीन से सात दिन बिताएंगे।
- **चंद्रयान-4 और अतरिक्ष स्टेशन:** भारत 2030 तक अपना स्वतंत्र स्पेस स्टेशन स्थापित करने की योजना बना रहा है। इसके साथ ही चंद्रयान-4 के माध्यम से चंद्रमा से सैंपल वापसी की भी योजना है - जो तकनीकी रूप से अत्यंत चुनौतीपूर्ण है।

शिक्षा और अनुसंधान केन्द्र: भारत में विभिन्न विश्वविद्यालयों में अब स्पेस इंजीनियरिंग, एस्ट्रोनोमी और एयरोस्पेस टेक्नोलॉजी पर विशेष अभ्यासक्रम शुरू हो चुके हैं। इससे नई पीढ़ी को सीधे

आम लोगों से जुड़ता अंतरिक्ष आज भारतीय नागरिक न केवल इन विषयों और मिशनों के बारे में खबरें टीवी पर देख रहे है, बल्कि सोशल मीडिया के माध्यम से लाइव अपडेट एनालिसिस और वैज्ञानिक चर्चाओं में भाग भी ले रहे हैं। बच्चों में अंतरिक्ष के प्रति जिज्ञासा बढ़ी है और इसरो के मिशन देश के गर्व का प्रतीक बन चुके हैं। अंतरिक्ष अब विज्ञान के किताबों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह एक 'सांस्कृतिक चेतना' बन चुका है जो राष्ट्र को नई ऊंचाइयों की ओर ले जा रहा है।

कुछ चुनौतियाँ:

अत्याधुनिक तकनीको मे आत्मनिर्भरता की कमीः भले ही भारत ने पीएसएलवी और जीएसएलवी जैसे प्रक्षेपण यानों का निर्माण कर लिया है लेकिन 'क्रायोजेनिक' तकनीक जैसी जटिल प्रणालियों में अभी भी पूर्ण आत्मनिर्भता हासिल करना बाकी है।

- **निजी क्षेत्र में तकनीकी असमानता:** हालांकि भारत में निजी अंतरिक्ष कंपनियों का उदय हो रहा है, परंतु अभी भी वे स्पेस एक्स, ब्लू ओरिजन जैसी दिग्गज कम्पनियों की तकनीकी क्षमताओं से पीछे है।
- **स्पेस डेब्रिस और सुरक्षा खतरा:** अंतरिक्ष में बढ़ते मलबे(स्पेस डेब्रिस) से उपग्रहों और मिशनों को खतरा

बन रहता है।

- **मानव मिशनों का सीमित अनुभव:** अभी तक भारत ने कोई भी मानवयुक्त अंतरिक्ष यान लॉन्च नहीं किया है। गगनयान मिशन में यह भारत के लिए पहली बार होगा और इसके लिए अत्यधिक परिशुद्ध तकनीक, प्रशिक्षण और सुरक्षा की आवश्यकता है।

निष्कर्ष: अंतरिक्ष में भारत का उज्जवल भविष्य

भारत की अंतरिक्ष यात्रा एक जीवंत उदाहरण है कि किस तरह सीमित संसाधनों के साथ समर्पण और दूरदृष्टि से विश्वस्तरीय उपलब्धियां हासिल की जा सकती हैं। यह केवल विज्ञान की बात नहीं है, यह एक सोच की बात है- आत्मनिर्भर भारत की सोच। आज जब भारत न केवल अतरिक्ष में नेतृत्व कर रहा है बाल्क नई पीढी को विज्ञान और नवाचार की ओर प्रेरित कर रहा है, तो यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि: "अब भारत की सीमाएं केवल हिमालय तक नहीं, बल्कि आकाशगंगा तक फैल चुकी हैं।"

*****

"हिंदी में अखिल भारतीय भाषा बनने की क्षमता है।"

\- राजा राममोहन राय

लाइक्स की दुनिया

सुस्मिता सरकार, वरिष्ठ लेखाकार

आर्यन का कमरा किसी स्टूडियो से कम नहीं था। दीवारों पर रंग-बिरंगे पोस्टर्स, एक कोने में ट्राइपॉड, और बिस्तर पर बिखरे हुए कैमरे, माइक्रोफोन और तारें। सोलह साल का यह लड़का हर सुबह अपने स्मार्टफोन के साथ उठता और रात को उसी के साथ सोता। उसका सपना था सोशल मीडिया पर मशहूर होना—इंस्टाग्राम, टिकटॉक, यूट्यूब—हर जगह उसका नाम गूंजे। वह हर दिन नया कंटेंट बनाने की जुगत में लगा रहता। कभी डांस चैलेंज, कभी कॉमेडी स्किट्स, तो कभी दोस्तों पर प्रैंक्स—वह हर वह तरकीब आजमाता जो उसे वायरल बना सके। लेकिन हकीकत यह थी कि उसकी मेहनत रंग नहीं लाती थी। कुछ लाइक्स, दो-चार कमेंट्स, और बस। उसका सबसे हिट वीडियो भी सौ लाइक्स की सीमा पार नहीं कर पाया था। "आज कुछ अलग होगा," उसने सोचा और अपने नए डांस वीडियो को पोस्ट किया। यह एक लोकप्रिय गाने पर था, जिसके लिए उसने घंटों अभ्यास किया था। एक बार तो वह अपने कमरे में गिर भी पड़ा था, टखने में हल्की चोट भी लगी थी, लेकिन उसने हार नहीं मानी। वीडियो पोस्ट करने के बाद वह बेसब्री से फोन स्क्रॉल करने लगा। दो घंटे बीते, स्क्रीन पर सिर्फ 25 लाइक्स। उसका चेहरा लटक गया। "क्या कमी रह गई?" उसने खुद से सवाल किया।

तभी दरवाजे पर दस्तक हुई। "भाई, मम्मी बुला रही हैं, खाना तैयार है," उसकी छोटी बहन अंशु ने कहा।

"हाँ, आ रहा हूँ," आर्यन ने बेमन से जवाब दिया, नजरें फोन पर ही टिकी थीं।

अंशु ने कमरे में झाँका। "फिर से लाइक्स गिन रहे हो? कितने मिले?"

"25," उसने मायूसी से कहा।

"वाह, पिछले वाले से पाँच ज्यादा! फिक्र मत करो, एक लाइक मैं कर दूँगी। 26 हो जाएंगे।" अंशु ने हँसते हुए चिढ़ाया।

"जा यहाँ से," आर्यन ने झुंझलाहट में कहा। अंशु हँसती हुई चली गई।

खाने की मेज पर मम्मी-पापा उससे स्कूल के बारे में पूछ रहे थे। "आर्यन, आज स्कूल में क्या हुआ?" पापा ने पूछा। "कुछ खास नहीं।" उसने अनमने ढंग से जवाब दिया।

"तुम हमेशा फोन में ही घुसे रहते हो। थोड़ा ध्यान यहाँ भी दो।" मम्मी ने डपटते हुए कहा। "हाँ, मम्मी, बस थोड़ा काम था," उसने कहा और फोन जेब में डाल लिया। लेकिन उसका दिमाग कहीं और था। क्या अगला वीडियो प्रैंक वाला बनाया जाए तो कैसा रहेगा? लोग हँसी-मजाक तो पसंद करते हैं। आर्यन पर वायरल कंटेंट बनाने की धुन सवार थी। एक ऐसा वीडियो बनाए जिससे वह रातों रात सेलेब्रिटी बन जाए। इंस्टा, फेसबुक पर उसके लाखों फैन हो। वह बस उस दिन के लिए मशक्कत किए जा रहा था। खाना खत्म होते ही कैमरा, ट्राइपॉड आदि लेकर सडक की ओर भागा। उसे एक नया प्रैंक सूझा था। आज मैं आने जाने वाले लोगों पर प्रैंक करूँगा, वह मन ही मन बुदबुदाया। उसने सौ रुपये के नोट पर एक महीन धागा चिपका दिया। नोट को उसने सड़क के बीचोबीच रख दिया। सड़क के किनारे कैमरा सेट कर वह खुद झाड़ियों में छिप गया। उसकी योजना यह थी कि कोई राहगीर जैसे ही सड़क पर पड़े नोट को उठाने की कोशिश करेगा, वह छिपकर धागा खींच लेगा। राहगीर हँसी का

पात्र बनेगा। वह झाड़ियों में बैठे-बैठे अपने शिकार की प्रतीक्षा करने लगा, पर कोई आया ही नहीं। दोपहर में वह सडक सुनसान ही रहती थी। काफी देर के बाद एक राहगीर आया और टहलते हुए नोट के बगल से निकल गया। नोट पर उसकी नज़र पड़ी ही नहीं। कुछ देर के बाद एक लड़का न जाने कहाँ से भागता हुआ आया और रास्ते पर पड़े नोट को पलक झपकते ही लेकर फुर्र हो गया। आर्यन धागा खींच भी नहीं पाया। नोट के साथ चिपका धागा भी साथ ले गया। यह सब अंशु बालकनी में खड़ी देख रही थी। आर्यन जैसे ही घर मे घुसा, उसने देखा कि अंशु हंसते - हंसते बेदम हुई जा रही है।

"भाई तुम्हारे सौ रुपये तो गए।" अंशु की हँसी थम नहीं रही थी।

आर्यन का प्लान फेल हो गया था। उसने सोचा था कि वह मजेदार वीडियो बना लेगा। लेकिन उल्टे उसका ही मजाक बन गया था। अंशु उसे चिढ़ाते हुए बोली, "भाई तुम वही वीडियो डाल दो। लोग खूब हँसेंगे।" आर्यन गुस्से में अपने कमरे घुसकर जोर से दरवाजा बंद कर लिया।उसने उस वीडियो को पोस्ट नहीं किया। वह मोबाइल पर अपने कुछ पुराने वीडियो देखने लगा। उन विडियो पर वही—कुछ लाइक्स, कुछ कमेंट्स जैसे "बोरिंग" और "कुछ नया करो।" रात को वह बिस्तर पर लेटा, छत को घूरता रहा। "मैं कहाँ गलती कर रहा हूँ?" उसने सोचा। शायद उसे कुछ क्रिएटिव करना

टैलेंट शो का दिन आया। स्कूल में सब उत्साहित थे। प्रिया ने उसे कहा था, "आर्यन, तुम्हें आना चाहिए। मजा आएगा।" लेकिन उसने सोचा, "यह मौका छोड़कर मैं ऐसा वीडियो बनाऊँगा जो मुझे रातों-रात स्टार बना देगा।" उसने एक सुपरहीरो कॉस्ट्यूम किराए पर लिया और घर में एक्शन सीन शूट करने लगा। वह खलनायक से लड़ने का नाटक कर रहा था कि अचानक कुर्सी से गिर पड़ा। कॉस्ट्यूम फट गया, वीडियो बिगड़ गया। घंटों की मेहनत बेकार। फिर भी उसने जो कुछ रिकॉर्ड हुआ, उसे पोस्ट कर दिया। उधर, टैलेंट शो में प्रिया ने कमाल कर दिया। उसका गाना सुनकर सब तालियाँ बजा रहे थे। उसे मुम्बई बुलाया गया। रोहन ने उसे बधाई दी, दोनों ने साथ में फोटो खिंचवाई। शाम को आर्यन ने सोशल मीडिया पर वह तस्वीरें देखीं। प्रिया और रोहन की मुस्कुराहट देखकर उसका दिल डूब गया। उसे एहसास हुआ कि उसे वहाँ होना चाहिए था लेकिन वह अपने फोन की दुनिया में खोया था। उस रात वह उदास अपने कमरे में बैठा था। तभी अंशु के रोने की आवाज सुनाई दी। वह दौड़कर गया। "क्या हुआ, अंशु?"

"भाई, कुछ लड़के मुझे तंग करते हैं। आज उन्होंने भद्दे कमेंट्स भी किए।" अंशु रोते-रोते बोली।

"कौन हैं वे लड़के?"

"कोचिंग क्लास से निकलकर जब घर लौटती हूँ, वहीं नुक्कड़ पर

चार पाँच लड़के बाइक पर बैठे-बैठे आने-जाने वाले लड़कियों को छेड़ते हैं। अपने मोबाइल से लड़कियों की फोटो खींचते हैं। मैं कल से कोचिंग ही नहीं जाऊंगी।" आर्यन को गुस्सा आया, पर साथ ही शर्मिंदगी भी हुई। वह इतना खोया था कि अपनी बहन की तकलीफ नहीं देख सका।

"मैं कुछ करूंगा, चिंता मत कर।" उसने अंशु को पुचकारते हुए कहा।

आर्यन देर रात तक सोचता रहा कि वह अंशु की मदद कैसे करेगा। उन लफंगों से मारपीट करना बेवकूफी होगी। अगले दिन उसने फैसला किया कि अब सोशल मीडिया का इस्तेमाल कुछ सार्थक करने में करेगा। वह शाम को कोचिंग के समीप नुक्कड़ के पास गया और उसने एक वीडियो बनाया।

"हाय, मैं आर्यन हूँ। आज मैं लड़कियों के साथ होने वाले छेड़छाड़ के खिलाफ बात करना चाहता हूँ। यह शहर की एक व्यस्त गली है। कई लड़कियां शाम को कोचिंग से इसी रास्ते घर को लौटती हैं। पर गली के कुछ आवारा किस्म के लड़के इन लड़कियों को छेड़ते हैं, भद्दे कमेंट्स करते हैं। इसके कारण यहाँ की लड़कियां बेहद परेशान हैं। मेरी अपनी बहन भी इसी वजह से परेशान होकर अपनी पढ़ाई छोड़ना चाहती है। आप उन बदमाशों को देखिए। उनकी हरकतों को देखिए। हमें इसे रोकना होगा। हम सभी की जिम्मेदारी है कि इसे रोकने के लिए हर संभव कोशिश करें।" उसने अंशु की इजाजत से यह वीडियो शेयर किया और लोगों से अपील की कि वे इस मुद्दे पर साथ दें।

वीडियो अपलोड होने के कुछ ही घंटों में ही वीडियो वायरल हो गया। लोग कमेंट्स में अपनी कहानियाँ लिखने लगे। "मेरे साथ भी ऐसा हुआ है।" "बुलिंग गलत है।" "महिला सुरक्षा सुनिश्चित करना चाहिए।" ऐसे कमेंट्स आने लगे। लोगों ने वीडियो को खूब शेयर किया। स्थानीय प्रशासन ने नोटिस लिया और उन बदमाशों के खिलाफ सख्त कदम उठाए। नुक्कड़ पर सीसीटीवी कैमरे लगाए गए। एक पुलिसकर्मी वहाँ तैनात रहने लगा। अब लड़कियाँ बेखौफ कोचिंग आया जाया करती थी। अंशु अब बेहद खुश थी। उसके भाई ने कई लड़कियों की समस्याओं को दूर किया था। आर्यन को पहली बार लगा कि उसने कुछ असली हासिल किया है। लाइक्स और शेयर्स से ज्यादा, उसकी बहन की खुशी मायने रखती थी। उसने प्रिया से भी माफी माँगी। "मुझे टैलेंट शो में आना चाहिए था। सॉरी।" प्रिया ने मुस्कुराकर कहा, "कोई बात नहीं, आर्यन। मुझे खुशी है कि तुम अब समझ गए।"

धीरे-धीरे आर्यन बदल गया। उसने सोशल मीडिया कम किया। अब वह दोस्तों के साथ, परिवार के साथ वक्त बिताता। प्रिया के साथ उसकी दोस्ती बढ़ी। वह अब हर पल को कैमरे में कैद करने की बजाय हर पल को जीने लगा। सोशल मीडिया को पूरी तरह छोड़ा नहीं, पर अब वह उसे सिर्फ अच्छे कामों के लिए इस्तेमाल करता था। सोशल मीडिया के इस्तेमाल से वह समाज में एक सकारात्मक बदलाव लाना चाहता था। आर्यन अब समझदार और खुशहाल है। उसे पता चल गया है कि लाइक्स की चमक से कहीं कीमती है असली जिंदगी की खुशी।

*****

अम्मा ताई

आरती शर्मा, लेखाकार

आज इतवार की छुट्टी थी। यूं तो देखा जाए तो पूरे सप्ताह में इतवार का दिन ही सबसे ज्यादा सुकून वाला होता है परंतु आज सुबह से ही मन जाने क्यों अजीब सा हो रहा था। तभी फोन की घंटी बज उठी। मेरी बुआ का फोन था। बुआ का फोन देखकर मेरे चेहरे पर स्वतः ही मुस्कान चली आई और फिर मैं चाय लेकर बालकनी में बैठकर बुआ से जो बातें करने शुरू की तो कब एक घंटा निकल गया पता ही नहीं चला। बातों ही बातों में बुआ ने बताया की 'अम्मा ताई' अब नहीं रहीं। सुनकर ही मन में एक दुख की लहर दौड़ गई। बुआ कह रही थीं कि आखिरी समय में भी वे मुझे याद कर रही थी।

शहरों का दैनिक जीवन भी बड़ा अजीब सा होता है। यहां की भाग दौड़ लोगों को सुकून के दो पल भी चैन से जीने नहीं देती। जहां हर समय एक अलग ही प्रकार का प्रतिस्पर्धा वाला माहौल छाया रहता है। कभी-कभी ऐसा लगता है कि यहां की हवाएं भी एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा में रत हैं कि कौन सी हवा का झोंका कितना बोझिल हो सकता है या फिर ऐसा होता होगा कि इस भाग दौड़ भरी जिंदगी में हम उन हवाओं को पहचान ही नहीं पाते जो हमें शांति और सुकून दे दें। शहरों में सुबह सोकर उठने से लेकर रात तक वापस सोने के बीच में जो समय का चक्र घूमता है वह चक्र एक आम आदमी को भी अपने साथ में इस तरह घुमाता रहता है कि इंसान को अपने भूत, भविष्य और वर्तमान का कुछ होश ही नहीं रहता। फिर भी इस रेलमपेल और धक्का-मुक्की के बीच भी कभी-कभी हम सभी को अपना बचपन भी याद हो आता है। वह बचपन जो अब कभी वापस नहीं लौटेगा परंतु उस समय का सुकून अभी भी कभी-कभार होठों पर एक लंबी चौड़ी मुस्कान ला देता है और कुछ पल के लिए ही सही हम वापस जी उठते हैं। वैसे तो मेरे बचपन से जुड़े ढेर सारे यादगार किस्से हैं जिनकी क्षणिक याद भी जीवन को नई ऊर्जा से भर देती है और इन्हीं किस्सों से जुड़े हैं कई यादगार व्यक्ति जिन्हें मैं चाह कर भी भूल नहीं पाती। वैसे तो मेरे बचपन से जुड़े यादगार लोगों की एक लंबी फेहरिस्त है परंतु उनमें से कुछ लोग वाकई दिल के बहुत करीब रहे हैं। इन लोगों को देखकर आश्चर्य होता है कि इस मतलब-परस्त दुनिया में ऐसे लोग रहते कैसे हैं पर शायद यह दुनिया ऐसे ही लोगों के कारण अभी तक बची हुई भी है। इन लोगों में ऐसे लोगों की याद आने पर सबसे पहला नाम जो मेरे जेहन में आता है वह है अम्माताई।

बचपन में हर साल हम गर्मी की छुट्टियों में अपने नानी घर जाया करते थे और वहां से पास ही गांव में मेरी बुआ का ससुराल भी पड़ता था। मुझे अपने नानी घर से ज्यादा बुआ के घर जाने का इंतजार रहता था क्योंकि वहां मेरे हमउम्र बच्चों की एक टोली थी जिसमें शामिल होकर हम सब दिन भर पूरे गांव में धमा चौकड़ी मचाते रहते थे। मेरे वहां पहुंचने का इंतजार हर वर्ष वहां के बच्चों की टोली भी करती थी। हम सब मिलकर सुबह गांव की पाठशाला में पढ़ाई करते और फिर दोपहर में लौटते वक्त कभी आम के बगीचे में आम तोड़ते तो कभी ईंट मारकर जामुन तोड़ते हुए पाए जाते। चूंकि मैं वहां की मेहमान हुआ करती थी इसलिए शरारतें करने पर मुझे ज्यादा कुछ नहीं कहा जाता था पर मेरे द्वारा की गई शरारतों का खामियाजा भैया और दीदी लोगों पर पड़ता और उन्हें डांट पड़ते देखकर मैं खूब मजे लिया करती थी। मगर ऐसा हर समय नहीं होता था कभी-कभी सबके संग मुझे भी डांट पड़ती थी। उस समय जब हम सब की शामत आई होती थी, हम लोग चुपके से अम्मा ताई की झोपड़ी में जाकर छुप जाते थे। अम्मा ताई हम सब बच्चों की रक्षक हुआ करती थीं। जब हम सब बच्चे अम्मा ताई की शरण में पहुंच जाते तब किसी की मजाल नहीं होती जो हमें कुछ कह सके।

अम्माताई उस गांव की झोपड़ी में कब से आकर रहने लगी थी और उनका नाम अम्मा ताई कैसे पड़ा यह ठीक-ठाक कोई नहीं बता पाता। परंतु गांव भर के लोग अम्मा ताई की बहुत इज्जत किया करते थे अतः उनके पास चले जाने के बाद हमें कोई कुछ नहीं बोल पाता था। वैसे देखा जाए तो अम्मा ताई बच्चों की ही नहीं पूरे गांव के लोगों की संरक्षक थीं। उनकी झोपड़ी गांव के अंतिम सिरे पर थी। कुछ लोग कहते थे कि अम्माताई के अपने गांव में सूखा पड़ गया था

और उसके बाद से अम्मा ताई इस गांव में आकर अपनी झोपड़ी बना कर रह रही थीं। मेरी बुआ बताती हैं कि अम्माताई अपने जीवन के शुरूआती दिनों में गांव के अनुष्ठानों और तीज़ त्योहारों की जान हुआ करती थीं। शादी विवाह, झूलन, मुंडन, जनेऊ, सतइसा, सतनारायण कथा इत्यादि किसी भी तरह का पर्व हो अम्मा ताई के पिटारे में हर तरह के लोकगीतों का संकलन होता। उनकी आवाज में भी एक विशेष प्रकार का आकर्षण था। वे जहां भी पहुंच जाती वहां का माहौल ही बदल जाता। मैं खुद उनकी सम्मोहित कर देने वाली आवाज की दीवानी थी। वो कभी-कभी हम बच्चों को कई लोक कहानियां गीतों के छंदों में पिरोकर सुनाया करती थीं। किसी भी तबके के लोगों को किसी भी तरह की जरूरत हो अम्माताई वहां जरूर उपस्थित मिलतीं। उनकी निष्काम सेवा और मिलनसार व्यवहार सबको अपना बनाए रखता।

अम्मा ताई का असली नाम भी अब किसी को याद ना था। कोई कोई बताता है कि उनका असली नाम रमादेवी था। परंतु इस बात की भी सत्यता कितनी है, कोई ठीक-ठाक नहीं बता पाता। मेरी बुआ की सास ने उन्हें बताया था कि अम्मा ताई बहुत बरसों पहले इस गांव में एक दुधमुंहे बच्चे के साथ आई थीं। तब उनकी उम्र बहुत मुश्किल से बारह या तेरह बरस की रही होगी। उस समय नदी के आस पास के कई गांवों में भारी बारिश होने के कारण भयानक बाढ़ की स्थिति पैदा हो गई थी। सबकी फसल नष्ट हो गए थे और भूखे मरने की स्थिति आ गई थी। ऐसे में उन गांवों के लोग टोलियां बना कर सुरक्षित स्थानों पर पलायन कर रहे थे। अम्माताई भी इन्हीं लोगों में से एक थीं जो विपरीत हालात की शिकार थीं। साथ में एक दुधमुंहे बच्चे के कारण वह ज्यादा दूर तक नहीं जा पाई थीं और इसी गांव में बस गई थीं। शुरूआती दिनों में पेट पालने के लिए उन्होंने घर घर जाकर काम मांगना शुरू किया था परंतु अनजान होने के कारण लोग उन पर विश्वास नहीं कर पाते थे और कुछ लोग उन्हें एकाध कपड़ा और कुछ भोजन इत्यादि देकर टालने की कोशिश करते थे। परंतु अम्मा ताई भी बहुत स्वाभिमानी महिला थीं। बिना कोई काम किए उन्हें भीख की तरह कुछ भी लेना मंजूर नहीं था। जीवन में भीख मांगने को वे सबसे निष्क्रिय और घृणित कार्य समझती थीं। अतः उन्होंने आसपास के जंगल-झाड़ से सूखी लकड़ियां बटोरने और घर-घर जाकर बेचने का कार्य शुरू कर दिया। घर की महिलाएं इन लकड़ियों के बदले में उन्हें कुछ भोजन दे दिया करती थीं। किसी-किसी घर से उन्हें अपने बच्चे के लिए थोड़ा दूध भी मिल जाया करता था। अम्मा ताई स्वभाव से भी बड़ी जीवट प्रकृति की महिला थी। बुआ ने सुना था कि एक बार गांव के एक बच्चे के पीछे एक बिगड़ैल बैल पड़ गया था और उन्होंने अकेले ही उसे बैल से उस बच्चे के प्राण बचाए थे, तब से अम्मा ताई को गांव के लोग अम्मा कह कर पुकारने लगे थे और जो बाद में परिवर्तित होते-होते हम बच्चों के लिए अम्मा ताई बन गई थीं।

हम बच्चों पर तो उनकी विशेष कृपा रहती थी। अक्सर जब कभी हमें बर्फ के गोले या खट्टी-मीठी इमली की गोलियों के लिए घर से पैसे नहीं मिलते तो हमारी पूरी टोली अम्माताई के झोपड़ी पर रोनी सूरत लिए पहुंच जाती और तब हमारे सामने खुलती 'अम्मा ताई की तिजोरी' जो उनके आंचल के एक कोने में समाई रहती थी। उसमें से वह हमें कुछ पैसे निकाल कर स्वयं ही दे देतीं। उस समय तो हमारी समझ भी इतनी नहीं थी कि अम्मा ताई पता नहीं कितनी मुश्किल से और कितनी मेहनत के बाद यह चंद पैसे इकट्टा कर पाती होंगी परंतु यह मैं दावे के साथ कह सकती हूं कि हमें बर्फ के ठंडे-ठंडे गोले या खट्टी-मीठी गोलियां खाने में जितना आनंद आता था उससे कहीं ज्यादा आनंद अम्मा ताई को हमें खाते हुए देख कर होता था। कभी-कभी हमारी टोली शैतानियां करके बड़ों की डांट और मार से बचने के लिए अम्मा ताई की झोपड़ी में जाकर छुप जाती थी और हमारे डरे हुए चेहरे को देखते हुए अम्माताई अपनी चारपाई पर बैठ जाती और हमें मीठी झिड़की लगाते हुए कहतीं- सब बच्चा लोग आ गइल। हम कबहिं से तोहरा लोगिन के बाट जोहत रहनी। अब बताव बबुआ लोगिन आज कवन बदमाशी कर के आइल बार लोगिन। ये कहती हुई अम्मा ताई ठठाकर हंस पड़ती थीं। उनकी पोपली भाषा में इतना अपनत्व और स्नेह समाया होता था कि हम अक्सर अपनी शैतानियां भूल जाते और उनकी बातों को निशब्द सुनते। छुट्टी के दिन तो हम दिन-दिन भर अम्मा ताई की झोपड़ी पर ही रहते। उस दिन अम्मा ताई के चेहरे पर खुशी देखते ही बनती। हममें से कुछ बच्चे उनकी झोपड़ी बुहारते, कुछ उनके बालों में तेल लगाते तो कुछ कंघी करते और एक पतली सी लंबी चुटिया बना देते। हम अम्मा ताई को हमारे स्कूल की, पाठशाला की, दोस्तों की, बड़ों की हर तरह की बातें बताते और वह मुस्कुराते हुए हमारी सारी बातें सुनती और बीच-बीच में कुछ कहानियों के माध्यम से अच्छी-अच्छी ज्ञानवर्धक बातें भी सिखातीं।

गांव में सभी के लिए अम्मा ताई एक जीती-जागती मिशाल थीं। अपने जीवन में वे सबसे ज्यादा अपने सगों द्वारा ठगी गई थीं। मात्र आठ या नौ वर्ष की आयु में ही उनका विवाह उनसे चार गुने उम्र के पुरुष के साथ कर दिया गया था जिसकी मृत्यु बाढ़ के पानी में बह जाने से हो गई थी। उसके पश्चात वे यहां आ गईं और सभी मुश्किलों का निडरता से सामना करते हुए अपने पुत्र का पालन-पोषण शुरू किया परंतु उनके दुर्भाग्य ने उनका पीछा नहीं छोड़ा और उनके इकलौते पुत्र को मात्र पाँच वर्ष की आयु में एक जहरीले कीड़े ने काट लिया और उचित समय पर चिकित्सा नहीं मिलने के कारण उनके पुत्र की मृत्यु हो गई। गांव के लोग बताते हैं कि उसके बाद कई महीनों तक वह अर्धविक्षिप्त अवस्था में रहती थीं परंतु धीरे-धीरे उन्होंने खुद को मजबूत किया और स्वयं ही खुद को दिलासा देकर दूसरों के लिए जीना शुरु किया।

आज भी मुझे कहीं भी किसी भी स्वाभिमानी महिला में अम्मा ताई की ही छवि दिखाई देती है। वह ज्यादा पढ़ी-लिखी नहीं थीं परंतु कम उम्र में ही अनेक विपदाओं ने उन्हें बहुत समझदार बना दिया था जो कि उनकी वृद्धावस्था में भी उनके चेहरे पर एक गौरवमयी आभा के रूप में बिखरा रहता था। वृद्धावस्था में शरीर के साथ नहीं देने पर भी अम्मा ताई मुफ्त में किसी से कुछ भी लेने को तैयार नहीं होती थीं। अम्मा ताई में बहुतेरे गुण कूट-कूट कर भरे हुए थे। जो समय-समय पर गांव के लोगों के बहुत काम में आते थे। हस्तकलाओं में तो उन्हें महारथ हासिल थी। चाहे बांस की पतली सीखचों से विभिन्न प्रकार की टोकरियां बनानी हो या ऊन-सलाई से सुंदर-सुंदर स्वेटर और शॉल बुनने हों, इन सभी चीजों को बनाने में उनके हाथों की तेजी और कलात्मकता देखते ही बनती थी। इसके अलावा वह साक्षात मां अन्नपूर्णा का अवतार थीं। सालों भर इस्तेमाल की जाने वाले बड़ी-पापड़, अचार इत्यादि चीजें वह इतने स्वादिष्ट बनाती थीं कि बच्चे या बूढ़े सभी को खूब पसंद आते। उन्होंने अपने जीवन के अंतिम पड़ाव में गांव घर की महिलाओं को अपने गुणों से नवाजना शुरू कर दिया।

गांव की महिलाएं अक्सर अपने कार्य को खत्म कर दोपहर में अम्मा ताई के पास जा बैठतीं और अम्मा ताई उन्हें हस्तशिल्प के कई नमूने सिखातीं। साथ ही अन्य कई घरेलू कार्यों की बारीकियां भी सिखातीं। इस तरह से उनके कारण कई महिलाओं को रोजगार का साधन भी मिल गया था। वह अमीर गरीब और छोटे-बड़े में कोई फर्क नहीं करती थीं। उनके लिए ऊंची और नीची जात में भी कोई फर्क नहीं होता था। कई गरीब तबकों की महिलाएं जिनके पति मजदूर थे और बहुत मुश्किल से उनका जीवनयापन होता था, वे उनसे बांस के विभिन्न साजो-सामान बनाना सीखतीं और उन्हें दूर शहर में बेचने जातीं। अक्सर वे महिलाएं अपने बच्चों को भी अम्मा ताई के संरक्षण में छोड़ जातीं। अम्मा ताई भी पूरे हृदय से उन बच्चों का सारा दिन ध्यान रखतीं और साथ ही साथ बच्चों को भी नई-नई ज्ञानवर्धक चीजें सिखातीं। कुल मिलाकर अम्मा ताई ने अपना पूरा जीवन दूसरों की सेवा में ही निकाल दिया था। उनकी

इसी सेवा का ही ये परिणाम था कि आज उनके जाने के बाद सभी की आंखों से आंसू थे। बुआ कह रही थीं कि उनकी मृत्यु के बाद कई दिनों तक पूरे गांव में मातम पसरा हुआ था। गांव के बड़े-बूढ़ों समेत बच्चे भी भोजन करने से इनकार कर रहे थे।

लोग कहते हैं कि किसी भी मनुष्य के मरने के बाद लोग उन्हें भूल जाते हैं, परंतु कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो अपने जीते जी ऐसे काम कर जाते हैं जो बरसों तक भुलाए नहीं जाते। जिनकी कमी कोई पूरी नहीं कर पाता। ये लोग चिरकाल तक हमारी स्मृतियों में मौजूद रहते हैं। मैंने अपनी आंखें बंद कर इन कुछ पलों में ही अपना बचपन फिर से दोहरा लिया और मेरी आंखों के कोने झिलमिला उठे थे। तभी मैंने देखा कि मेरे मोबाइल में बुआ ने अम्मा ताई के साथ मेरे बचपन की एक धुंधली तस्वीर भेजी थी। तस्वीर तो धुंधला गई थी परंतु उस तस्वीर में सभी बच्चों के साथ अम्मा ताई की वह निश्चल हंसी फिर से मेरे चेहरे पर एक मुस्कान ले आई थी और मैं उन्हें याद करते हुए फिर से एक नई ऊर्जा के साथ जी उठी थी।

*****

"हिंदी ही ऐसी भाषा है जिसमें हमारे देश की सभी भाषाओं का समन्वय है।"

- राजर्षि पुरूषोत्तम दास टंडन

अपरिचित

तापसी आचार्य बसाक, सहायक लेखा अधिकारी

पिताजी का डेथ सर्टिफिकेट कहीं नहीं मिल रहा है। चारों तरफ छानबीन हो रही है, घर के सारे कागज बिखर गए हैं। किताब, डायरी, राइटिंग पैड.... सबमें खोजा जा रहा है, सब लोग ढूंढ रहे हैं पर अभी तक नहीं मिला है। सारे रिश्तेदार यहाँ तक कि पडोसी चाचा भी सर्टिफिकेट खोजने में जुट गए थे। उसके बिना श्मशान घाट पर अंतिम संस्कार भला कैसे होगा? जरूरी कागजात देवोपम अपने पास ही रखता है, किसी दूसरे पर उसे भरोसा नहीं होता है। डाइनिंग टेबल, सोफ़ा सेट के पीछे, किताबों की अलमारी....सारी जगहों को ढूंढ लिया गया लेकिन वह कागज कहीं नहीं मिला। वह हवा से कहीं उड़ तो नहीं गया ऐसा सोचते हुए देवोपम अपने पिताजी के कमरे में में घुस गया। सुबह सुबह देवोपम के पिताजी गुजर गए। पिता का गुजर जाना किसी भी व्यक्ति के लिए गंभीर शोक लाता है लेकिन इसके बावजूद देवोपम ने अपने आप को संभाल लिया।

देवनारायण चौधरी, देवोपम के पिताजी कोई जनमोहनकारी व्यक्ति नहीं थे। न तो ऑफिस में, न तो मुहल्ले में और न ही अपने परिवार में। एक साधारण इंसान के जनप्रिय होने के कई कारण हो सकते है। हर समय चेहरे पर मुस्कान रखना, हाँ में हाँ मिलाना, सबके सवालों का जवाब उनकी पसंद के अनुसार देना और सबसे बड़ी बात सारे अन्याय को चुपचाप सहते जाना। देवनारायण चौधरी इस मानसिकता के ठीक विपरीत व्यवहार के व्यक्ति थे। क्या घर क्या बाहर, वह कोई भी अन्याय सहन नहीं कर पाते थे। जब लोकल क्लब के सदस्य, रास्ता बंद करके, पंडाल लगाकर कालीपूजा का आयोजन करते थे तब वे अकेले ही नवयुवकों से जाकर बोलते थे- क्या बात है ! तुम लोगों ने पंडाल से तो पूरा रास्ता ही ब्लॉक कर दिया है....किसी बीमार के लिए एम्बुलेंस कैसे आएगी?

एक बार तो ऐसा हुआ कि मुहल्ले के एकमात्र तालाब को कुछ प्रोमोटर मिट्टी और कचरे से भरने लगे और चारों ओर गंदगी फैलाने लगे। तब एकमात्र देवनारायण सीधे कॉर्पोरेशन के काउंसलर के पास पहुँच गए और बोले- वह तालाब ही इलाके में पानी का एकमात्र स्रोत है। रातों-रात उसे भरकर फ्लैट बनाने से परिवेश और वातावरण रहने लायक नहीं रहेगा। पानी भी नहीं मिलेगा। आपको कुछ न कुछ व्यवस्था करनी होगी। लेकिन भ्रष्ट काउंसलर ने कुछ नहीं किया। क्लब और तालाब के मुद्दे का कोई हल न मिलने पर देवनारायण मन ही मन संकुचित से हो गए थे। अपनी माँ की दृष्टि में देवोपम अपने पिता के लिए कोई विशेष सम्मान नहीं दर्शाता था। जहां देवनारायण के सारे सहकर्मी नया मकान, नई कार आदि खरीद रहे थे वहीं वे जमीन के छोटे से टुकडे के छोटे से घर में ही रह रहे थे। देवोपम की माँ सोचती- सबका वेतन एक जैसा है तो रहन-सहन में इतना अंतर कैसे है?

उच्चतर माध्यमिक परीक्षा में देवोपम का अच्छा रिजल्ट अच्छा नहीं था इसलिए उसे किसी अच्छे कॉलेज में पढ़ने का सुयोग नहीं मिल सका। देवोपम की माँ ने अपने पति को समझाया था कि अपनी पहुँच से उसका एडमिशन किसी अच्छे कॉलेज में करा दें तो देवनारायण ने कहा- अपने लडके के लिए सिफारिश करने से किसी योग्य प्रार्थी के प्रति अविचार करना पड़ेगा। मजबूरी में देवोपम को शहर से दूर एक छोटे से कॉलेज में प्रवेश लेना पड़ा। इस घटना के बाद बाप-बेटे में मानसिक दूरी बनने लगी। समय बीतता गया। देवोपम सरकारी नौकरी के लिए जी-तोड़ मेहनत कर रहा था। देवनारायण की दुत्कार से उसके मन में एक जिद घर कर गई थी। अंततः देवोपम को सफलता मिली। जॉइनिंग के लिए जाते समय देवोपम की माँ ने आशीर्वाद दिया- बड़े आदमी बनो बेटा लेकिन अपने पिता के जैसा मत बनना।

सच में देवोपम अपने पिता जैसा नहीं बना। सिविल डिवीजन में तैनात होने के आठ सालों में उसने बहुत तरक्की की। हमेशा गाडी से चलता है, कीमती सिगरेट पीता है। शहर के एक अच्छे इलाके में उसने आलीशान भवन भी बनवा लिया और धूमधाम से गृह-प्रवेश भी संपन्न हो गया। पिताजी द्वारा बनाए गए घर को भी एसी, फ्रिज, बडा टेलीविजन, माँ के लिए मॉड्यूलर किचन आदि से भर दिया। माँ को

इस सब की उम्मीद नहीं थी। देवोपम ने माँ की खुशी में कोई कमी नहीं छोड़ी। ऐसा लगा जैसे देवोपम अपना बड़प्पन पिताजी को दिखाना चाहता था.... बाप जो नहीं कर पाया, बेटे ने उसे हासिल कर लिया....कुछ ऐसा ही। देवनारायण अंदर ही अंदर खोखले हो रहे थे। अपने कमरे में उन्होंने बेटे के किसी भी सामान को नहीं रखने दिया। उनके अति साधारण कमरे में आज भी पुराने जमाने के बिस्तर, कुर्सी, टेबल और साथ में कुछ किताबें थीं।

देवोपम की ऊपरी कमाई बढ़ती ही जा रही थी। कई दिन पहले एक कान्ट्रैक्टर अपना बिल पास कराने देवोपम के पास आया। उसका रिश्वत देने का तरीका असाधारण था। पहले वह बिल पास करने वाले कर्मचारी के पास जाकर उसका कुशल-क्षेम पूछता था और फिर आलिंगन करते हुए पचास हजार के नोटों का बंडल उसकी जेब में रख देता था। यह उसका ऑफिसियल आलिंगन था। वह बोलता था- मिठाई खाइए सर, काम पूरा होने पर बाकी हिसाब भी हो जाएगा। उसके बाद हाथ जोडकर विनती करता था- मामूली कान्ट्रैक्टर हूँ सर, मेरी भी फाइल देख लेते जरा। देवोपम के छोटे से परिवार के लिए यह बहुत अधिक राशि होती थी। पूरा पैसा देवोपम की अलमारी में पड़ा रहा। अपने अंतिम समय में देवनारायण थोड़ा धर्म-कर्म में मन लगाए थे। उनकी राजनीतिक सोच भी धर्म के आचरण से मिलती थी। मंदिर आना-जाना लगा ही रहता था। घर में पूजा-पाठ का काम पत्नी से छीनकर अपने हाथ में ले लिए थे। पिताजी के व्यवहार में यह परिवर्तन देवोपम को आश्चर्यचकित कर रहा था। लेकिन डेथ सर्टिफिकेट का क्या होगा?

देवोपम के मामा जी भी चारों ओर ढूंढ रहे हैं... सर पर चिन्ता की रेखाएं हैं। मामाजी अपने जीजाजी को बहुत मानते थे। वे आपस में खूब बहस करते थे, कभी-कभी बातचीत भी बंद हो जाती थी। लेकिन फिर किसी दिन मामा मिठाई लेकर घर पहुँच जाते थे अपने जीजा के पास। देवनारायण भी अपने मन की बात केवल उन्हीं से ही करता था। पिताजी के कमरे में टेबल के सामने खड़ा है देवोपम....डेथ सर्टिफिकेट कहीं इधर तो नहीं है? सारी किताबें, डायरी, अखबार आदि उलट-पलट कर वह देखने लगा। और ठीक उसी समय उसे एक पुरानी डायरी का टूटा हुआ पन्ना दिखा....लाल स्याही में बड़ा-बड़ा लिखा गया था- भगवान मेरे इस पतन को क्षमा करे। मैं एक अपराधी हूँ।

आँगन के बीच में देवनारायण के शरीर को लिटाकर रखा गया था, छाती पर गीता, शरीर फूलों से ढका हुआ। कुछ पड़ोसी महिलाएं माँ को संभाल रही थीं। शव-वहन गाड़ी गेट के सामने आ चुकी थी लेकिन देवोपम स्थिर भाव से टेबल के सामने खड़ा रहा। उस पर्ची से अपनी दृष्टि नहीं हटा पा रहा था वह.. उसे यकीन नहीं हो रहा था कि पिताजी जैसे व्यक्ति ने कोई अपराध किया होगा..कागज के उस टुकड़े को जेब में डालते हुए वह मुड़ा था कि मामाजी की आवाज आई- अरे यहीं तो है डेथ सर्टिफिकेट...उड़कर फ्रिज के पीछे गिर गया था..। गाड़ी निष्प्राण शरीर को लेकर निकल गई।

रास्ते में एक सिग्नल पर गाड़ी रुकी थी तो देवोपम ने वह पर्ची मामा को दिखाते हुए पूछा- क्या बात थी, पता है आपको? उनकी आँखों में आँसू थे। एक लंबी साँस लेकर बोले- तुम्हें बताने से मना किया था। मुझे कसम दी थी उन्होंने। अब तुम्हें पता है तो बताना ही पड़ेगा। तुम्हारे पिताजी होते तो कहते कि सब तकदीर है, नहीं तो यह पर्ची तुम्हें कैसे मिलती? देवोपम ने पूछा- क्या कह रहे हैं मामा जी? मामाजी दृष्टि नीची करके बोले- तेरी नौकरी ऐसे ही नहीं हो गई थी। पार्टी फंड में बहुत सारा पैसा देना पड़ा था। वे अपनी मर्यादा लांघकर ऐसा नहीं करना चाहते थे। एक दिन ऑफिस से भागकर वे मेरे पास पहुंचे और चिंतामग्न होकर बोले- दिनभर काम करके ऑफिस से घर आता हूँ तो बेटे का उदास चेहरा देखकर दिल दुखता है। एक नौकरी के लिए बहुत मेहनत करता है। अब जो नौकरी मिलने की बहुत संभावना है उसके लिए बहुत पैसों की जरूरत है। क्या तुम कुछ मदद कर सकते हो? लेकिन हमारे पास इतने पैसे नहीं थे। इसलिए....कहते हुए मामाजी रुक गए। उनकी आँखों में आँसू थे। देवोपम ने आग्रह किया तो बोले- अपना आत्मसमान खोकर उन्होंने एक कान्ट्रैक्टर को टेंडर के बदले भ्रष्टाचार किया था। उनके लिए यह एक नैतिक पतन ही था। उनका मन बहुत भारी हो गया था। देवोपम बड़बड़ाते हुए बोला- सिर्फ मेरे लिए उन्होंने ये किया था। मामाजी बोले- इसे पितृस्नेह कहते हैं। बेटे के मोह में उन्होंने ये कार्य किया था, अपनी ही नजरों से गिर गए थे वे। चैत माह की गर्मी में भी देवोपम को ठंड सी कंपकपी महसूस हो रही थी। उसे लगा कि खून का रिश्ता जिंदगीभर निभाने के बाद भी पिताजी उसके लिए अपरिचित बने रहे। क्या इंसान खुद को पहचान पाता है? पहाड़ी झरनों की तरह खयालों में खोया हुआ वह कब श्मशानघाट पहुँच

गया, पता ही नहीं चला।

बचपन में एक मैदान में जब देवोपम पिताजी के साथ साइकिल सीखने गया तो वह बहुत डर रहा था और चिल्ला रहा था- पापा, साइकिल मत छोड़ना, मैं गिर जाऊंगा। दूर खड़े देवनारायण हँसने लगे। बोले- मैंने तो कब का छोड़ दिया है। तू बस आगे बढ़, मुड़ के मत देख। ऐसा ही तब भी हुआ था जब वे देवोपम को पुरी घुमाने ले गए थे। तब देवोपम लहरों से बहुत डर रहा था और डर से जैसे डूबने लगा था तब पिताजी ने ही उसे बचाया था। पिताजी को गोद

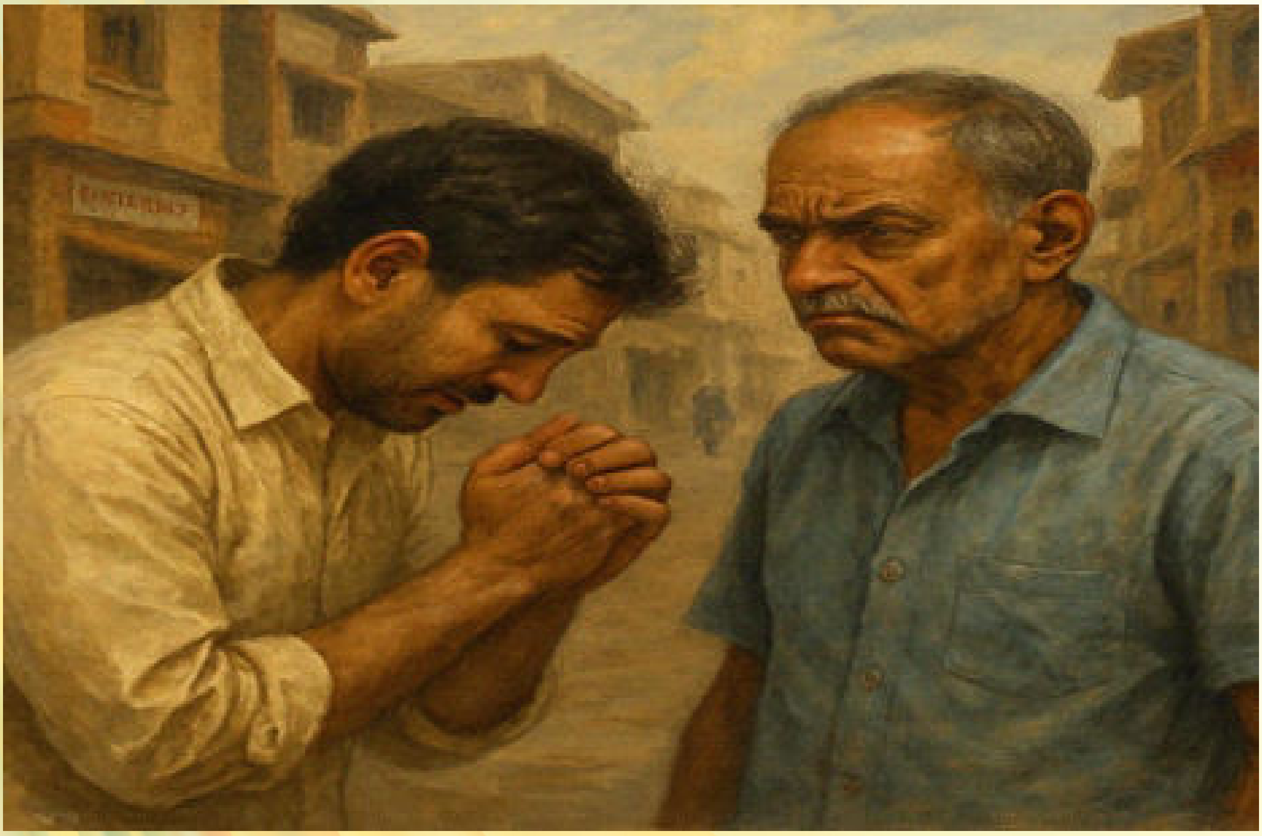

देवोपम वहीं नतमस्तक होकर बैठा रहा। मन में कई प्रतिज्ञाएं चल रही थीं। अब वह कभी असद् कार्य नहीं करेगा, रीढ़ की हड्डी हमेशा सीधी रखेगा, कान्ट्रैक्टर के सारे पैसे वापस लौटा देगा। वह जो भूल गया था कि एक सच्चे इंसान का पुत्र है तो अब यही उसका परिचय होगा। शायद इन प्रतिज्ञाओं को वह जल्दी ही भूल जाएगा या छोटी-मोटी चीजों के लिए झगड़ा करेगा या कान्ट्रैक्टर से फिर रिश्वत लेगा। देवोपम फूट-फूटकर रो रहा था। उसके आंसुओं में सारे दुख, कड़वे वचन सब धुल गए। फिर वही मायावान, जिंदगीभर के अनजाने व्यक्ति का परिचय शेष रहा। एक सच्चा इंसान बाहरी रूप से जो हो न हो, अंत में अपने ही पुत्रमोह में अपनी इंसानियत छुपाकर न रख सका। इस बात ने बाप-बेटे के अंतिम आभास को हमेशा के लिए सुंदर और मधुर बना दिया।

*****

पितृत्व की यात्रा : एक परिवर्तनकारी

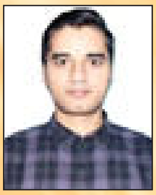

मो. सरफराज अहमद, लेखाकार

आज मैं छह महीने के शिशु का पिता हूँ। पिता बनने के पूर्व एवं पश्चात का अनुभव अपने लेखन के माध्यम से प्रकट कर रहा हूँ। आज का पितृत्व उस सख़्त अनुशासक की पुरानी छवि से कहीं आगे निकल चुका है। यह एक ऐसा सफ़र है जहाँ आप गर्भधारण से लेकर बच्चे के जन्म तक, हर कदम पर सीखते हैं।

पिता बनने के पहले अनुभव

जब पता चला की मैं पिता बनने वाला हूँ, तो एक अजीब-सी घबराहट और ख़ुशी का मिश्रण महसूस हुआ। "हम माता-पिता बनने वाले हैं!" उस क्षण का एहसास अभी भी मेरे दिल में ताज़ा है। कई पुरुषों के लिए यह खबर एक धमाकेदार परिवर्तन लाती है। पहले तो मुझे ख्याल आया क्या मैं इसके लिए तैयार हूँ? फिर अगला विचार आया मुझे कितना बदलना पड़ेगा? नौ महीने की वो यात्रा हर पिता के लिए अलग होती है। कोई डॉक्टर के पास हर विजिट पर जाता है, तो कोई गर्भवती पत्नी की हर पौष्टिक आहार प्रदान करता है। ताकि उसके गर्भ में पल रहे बच्चे के पोषण और गर्भवती पत्नी को कोई असुविधा न हो। मैंने भी यही सब किया। मेरे एक दोस्त ने मुझे बताया था, "पत्नी के पेट पर हाथ रखकर बच्चे की धड़कन महसूस करना, वह पल ज़िंदगी भर याद रहता है।" और वह सही था।

भावनात्मक बदलाव और नई ज़िम्मेदारियाँ

पिता बनने का मतलब है भावनाओं का एक तूफ़ान। आप खुद को पहले से ज़्यादा भावुक पाते हैं। नन्हें से बच्चे को पहली बार जब देखा तो मेरी आंखें नम हो गईं। नई ज़िम्मेदारियों का बोझ धीरे-धीरे महसूस होने लगता है। अब आप परिवार के नए सदस्य के लिए भी ज़िम्मेदार हैं। हमारे घर में आने से पहले ही, हमारा बच्चा हमारी प्राथमिकताओं को बदल देता है। माँ के दूध पिलाने के बाद उसको मेरे द्वारा डकार दिलवाना भी नई जिम्मेदारियों का एहसास कराता है।

बच्चे के साथ पहला बंधन

जब मैंने पहली बार अपने बेटे को गोद में लिया, तो आँखें भावुक हो गईं और एक अजीब सी ताकत महसूस हुई वह छोटी सी मुट्ठी जब आपकी उंगली पकड़ती है, तो दुनिया की सारी चिंताएं गायब हो जाती हैं। पिता और बच्चे का बंधन धीरे-धीरे बनता है। माँ के साथ तो बच्चे का भावनात्मक जुड़ाव होता है। लेकिन पिता को इस रिश्ते पर काम करना पड़ता है। कुछ पिता बच्चों को नहलाते हुए गाना गाते हैं, कुछ कहानियाँ सुनाते हैं, और कुछ बस चुपचाप बच्चे को सीने से लगाए रखते हैं।

जीवन की प्राथमिकताओं में बदलाव -

पिता बनने के बाद आपकी प्राथमिकताएँ पूरी तरह बदल जाती हैं। दोस्तों के साथ देर रात की पार्टियाँ, लंबे वीकेंड ट्रिप या फिर बिना योजना के सिनेमा जाना ये सब कम हो जाते हैं। अब आप छोटी-छोटी खुशियों में आनंद पाना सीखते हैं जो पहले शायद नजरअंदाज कर देते थे जैसे बच्चे की पहली मुस्कान, पहला शब्द, पहला कदम। आपकी वित्तीय सोच भी बदल जाती है। अब आप लंबे समय की योजनाएँ बनाने लगते हैं जैसे बच्चे की शिक्षा, भविष्य की सुरक्षा और परिवार के लिए एक अच्छा परिवेश में घर।

बच्चों के विकास में पिता की भूमिका

पिता का गहरा प्यार बच्चे के जीवन में एक अनोखा स्थान रखता है। माँ जहाँ बच्चे की सुरक्षा और स्नेह का एहसास जरूरी है, वहीं पिता उसे दुनिया से जुड़ने का आत्मविश्वास देते हैं। शायद आपने कभी गौर किया हो पिता के साथ खेलने भर से बच्चों की आँखों में एक अलग ही चमक होती है। बच्चे अपने पिता को देखकर सीखते हैं कि भावनाओं को कैसे संभाला जाए। जब पिता अपनी भावनाओं को सकारात्मक तरीके से व्यक्त करते हैं, तो बच्चे भी वही सीखते हैं। जिन बच्चों के पिता उनके साथ खुलकर बातचीत करते हैं, वे अपनी भावनाओं को बेहतर ढंग से समझा पाते हैं। तनाव से निपटने की क्षमता भी पिता से ही मिलती है। पिता जब मुश्किल परिस्थितियों में शांत रहकर समाधान ढूंढते हैं, तो बच्चे भी यह महत्वपूर्ण जीवन कौशल सीखते हैं। पिता के साथ बिताया गया समय बच्चों के मानसिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता

है। साथ में पढ़ना, खेलना और बातचीत करना ये सभी गतिविधियाँ बच्चों के संज्ञानात्मक विकास को बढ़ावा देती हैं।

आत्मविश्वास और आत्मसम्मान निर्माण में योगदान

पहला शिक्षक पिता ही होता है, जो बच्चों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रेरित करते हैं। जब पिता अपने बच्चों की छोटी-छोटी उपलब्धियों की भी सराहना करते हैं, तो यह उनके आत्मविश्वास को बढ़ाता है। पिता अपने बच्चों में हार न मानने वाले गुणों को विकसित करते हैं। पिता की प्रोत्साहंन भरी बातें बच्चों के दिमाग में गहराई से बैठ जाती हैं। बच्चों में आत्म-सम्मान का विकास तब होता है जब उन्हें लगता है कि वे महत्वपूर्ण हैं। जब पिता अपने बच्चों की बातों को सुनते हैं और उन्हें सम्मान देते हैं, तो बच्चे खुद को मूल्यवान समझने लगते हैं। जिन बच्चों के पिता उनकी छमताओ का भरोसा करते हैं, वे बड़े होकर अधिक आत्मविश्वासी और स्वतंत्र सोच वाले व्यक्ति बनते हैं।

निष्कर्ष

पिता बनना एक जैविक प्रक्रिया नहीं है बल्कि एक गहरी संवेदनशील और परिवर्तनकारी यात्रा है। यह वह सफर है जिसमें एक पुरुष केवल परिवार का कमाने वाला नहीं रहता, बल्कि वह एक मार्गदर्शक, मित्र और सबसे बड़ा सहारा बन जाता है। इस यात्रा में डर, घबराहट, आसंका और अनगिनत ज़िम्मेदारियाँ होती हैं, लेकिन इनके साथ मिलते हैं अनमोल क्षण पहली बार बच्चे की मुस्कान, ऊँगली पकड़ना, या उसकी हर सफलता में शामिल होना। पिता का प्रेम, विश्वास, अनुशासन और मार्गदर्शन बच्चे की नींव मजबूत करता है भावनात्मक रूप से भी और नैतिक रूप से भी। वह ज्ञान, विकास, आत्मसम्मान और जीवन के महत्वपूर्ण मूल्यों का पहला शिक्षक होता है। अतः पितृत्व कोई भूमिका नहीं, बल्कि एक सतत, विकासशील अनुभव है जो न केवल बच्चे को गढ़ता है, बल्कि पिता को भी बेहतर इंसान बनाता है।

*****

गलत सूचनाओं का खतरा: एक गंभीर समस्या

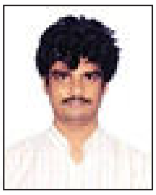

अतुल कुमार, सहायक लेखा अधिकारी

आज के डिजिटल युग में ना जाने कितनी जानकारी से हम घिरे रहते हैं। इन जानकारियों में कुछ महत्वपूर्ण होती है, कुछ प्रासंगिक होती है, किसी जानकारी से हमारा मनोरंजन होता है तथा कुछ हमारे काम की नहीं होती जो अक्सर हमारा समय व्यर्थ करती है लेकिन इस जानकारी की सच्चाई और विश्वसनीयता को लेकर सवाल उठते ही रहते हैं। गलत सूचनाएं और अफवाहें तेजी से फैलती हैं। इसका कारण है कि ये अक्सर मनोरंजक या पक्षपात से भरी होती हैं। इन सूचनाओं से समाज पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। गलत सूचनाओं के कारणों, प्रभावों और इससे निपटने के कई तरीके है जो निम्नवत हैं:

गलत सूचनाएं कई कारणों से फैलती हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख कारण हैं:

☛ **सोशल मीडिया:** ये देखा गया है कि कुछ असामाजिक तत्व सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल करके गलत सूचनाएँ फैलाते हैं जिनका उद्देश्य समाज में अशांति का माहौल बनाना एवं लोगों की भावनाएँ आहत करना होता है। कुछ व्यक्ति अपने निजी स्वार्थ के लिए भी किसी व्यक्ति-विशेष या संस्था के खिलाफ अफवाह सर्कुलेट करते हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर जानकारी की जांच किए बिना उसे शेयर करना आम बात है। सोशल मीडिया की पहुंच और प्रभाव के कारण गलत सूचनाएं तेजी से फैलती हैं और इसका प्रभाव व्यापक होता है। न जाने कितनी बार इन माध्यमों का दुरुपयोग असामाजिक तत्व आपकी व्यक्तिगत जानकारी को जानने में करते है तथा फिर आपकी सोशल मीडिया प्रोफ़ाइल को हैक कर लेते है। इन सबका दुरुपयोग आपके बैंक खाते की जानकारी प्राप्त करने के लिए भी करते है जिससे वित्तीय नुकसान भी हो जाता है। युद्ध की स्थिति में भी सोशल मीडिया का दुरुपयोग किया जा रहा है। विरोधी राष्ट्र को नीचा दिखाने एवं झूठी तस्वीरें एवं अफवाहें फैलाने में वर्तमान में इसका अत्यधिक दुरुपयोग हो रहा है। इसके अलावा महामारी के दौरान भी सोशल मीडिया का दुरुपयोग अफवाहें फैलाने में देखा गया है।

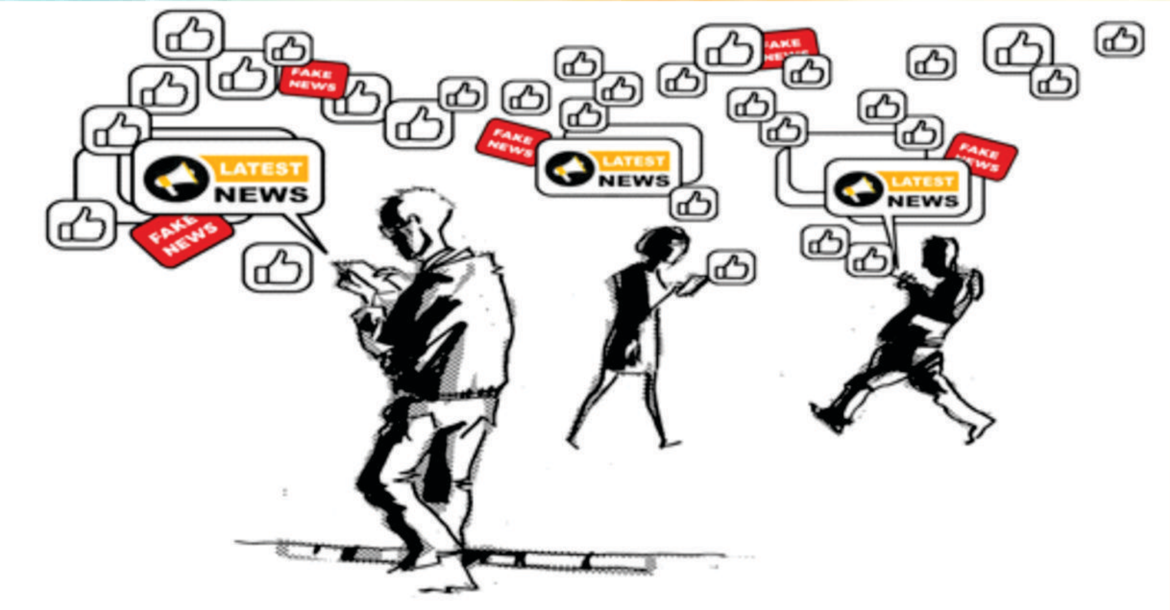

- **पक्षपातपूर्ण मीडिया:** कुछ मीडिया आउटलेट्स अपनी विचारधारा के अनुसार खबरें पेश करते हैं। इससे पाठकों को एकतरफा जानकारी मिलती है। ये भी देखा जाता है कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर किसी राष्ट्र की मीडिया अन्य राष्ट्र की मीडिया के खिलाफ उन्हें नीचा दिखने के लिए केवल नकारात्मक जानकारी अपने देशवासियों से साझा करती है। इस एकतरफा जानकारी के कारण पाठक अक्सर गलत सूचनाओं के शिकार हो सकते हैं। युद्ध एवं महामारी की स्थिति में भी एक गलत खबर काफी नुकसानदायक सिद्ध हो सकती है। इजराइल-गजा संघर्ष के दौरान भी कई बार ऐसी गलत सूचनाओं के प्रसार के कारण कई निर्दोषों की जानें गई हैं।
- **अज्ञानता:** कई लोग जानकारी की जांच किए बिना उसे मान लेते हैं। अशिक्षा के कारण कई बार लोग अंधविश्वास को भी बढ़ावा देते हैं। काफी बार ऐसा भी होता है कि किसी सही सूचना को लोग तोड़-मरोड़ के पेश करते हैं जिससे गलत सूचना का प्रसारण होता है। किसी बीमारी के बारे में गलत अफवाहें फैलाने से भी अफरातफरी का माहौल बंता है। कई बार आपकी अशिक्षा एवं अज्ञानता का फायदा उठाकर भी धोखेबाज़ लोग आपके पहचान पत्र या फोन नंबर आदि का दुरुपयोग करके आपको वित्तीय नुकसान पहुंचाते हैं।

गलत सूचनाओं के प्रभाव

- सामाजिक तनाव: गलत सूचनाएं सामाजिक तनाव, धार्मिक तनाव और हिंसा को बढ़ावा दे सकती हैं। इससे समाज में अशांति फैल सकती है और लोगों की जान जोखिम में पड़ सकती है एवं संपत्ति का नुकसान हो सकता है। गलत सूचनाएँ अफवाहों को बढ़ावा देती हैं जिससे किसी व्यक्ति-विशेष या संस्था की प्रतिष्ठा को भी ठेस पहुंचती है। इससे विश्वसनीयता का संकट भी उत्पन्न हो जाता है। इस तरीके के तनाव से लोग अकसर किसी क्षेत्र से पलायन भी कर सकते हैं। ये समाज में एक गहरी छाप छोड़ते हैं जिससे उबरने में बहुत समय लग सकता है। हाल के दिनों में भारत एवं पाकिस्तान के बीच युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो गयी थी जिसमें हमने देखा है कि कैसे भारत को हुए नुकसान को बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया गया जिससे समाज में असमंजस का माहौल बना।
- वित्तीय नुकसान: देखा जाता है कि गलत सूचना के कारण अकसर लोग गलत वित्तीय इनवेस्टमेंट कर लेते है। कई बार ऐसे धोखेबाज़ लोग आपको सोशल मीडिया के विभिन्न प्लैटफ़ार्म पर एक ग्रुप बना लेते हैं जिसमें वो आपको भी जोड़ लेते हैं। तरह-तरह के वित्तीय लाभ का लालच देकर वे आपको अपने जाल में फाँसने का काम करते हैं। शुरू में वे आपको कुछ लाभ भी पहुँचाते है परंतु आपका विश्वास जीतने के बाद वे आपको बहुत ज्यादा वित्तीय नुकसान में डाल कर फरार हो जाते हैं। इससे आपको के पारिवारिक जीवन पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है एवं आपका एवं परिवार का भविष्य खराब हो सकता है।
- जन स्वास्थ्य: गलत स्वास्थ्य-जानकारी से लोगों की सेहत खराब हो सकती है। इससे लोगों को गंभीर मानसिक बीमारियों का खतरा हो सकता है और समाज में बदनामी, उनकी जान को जोखिम में भी डाल सकती है। आपकी व्यक्तिगत जानकारी का गलत इस्तेमाल करके धोखाधड़ी भी की जा सकती है, जिससे न केवल आपकी बल्कि आपके परिवार की भी मानसिक अवस्था खराब हो सकती है। हमने कोविड महामारी के दौरान देखा कि कैसे इस महामारी के बारे में गलत सूचनाएँ विभिन्न माध्यमों से लोगों को मिलीं जिससे कई लोगों ने इसे गंभीरता से नहीं लिया और उन्हें जान से भी हाथ धोना पड़ा और इसके अलावा संक्रमण में भी बढ़ोत्तरी हो गई। गलत डायग्नोसिस से भी लोगों को जान से हाथ धोना पड़ गया। इसके अलावा इलाज संबंधी उपायों जैसे कि टीका लेने के खिलाफ भी लोगों में असमंजस की स्थिति उत्पन्न हुई जिससे आम लोगों के स्वास्थ्य को बहुत नुकसान पहुंचा।
- राजनीतिक अस्थिरता: गलत सूचनाएं राजनीतिक अस्थिरता को बढ़ावा दे सकती हैं। इससे सरकार के प्रति आम लोगों में विश्वास की कमी हो सकती है और राजनीतिक अस्थिरता बढ़ सकती है। राजनीतिक

अस्थिरता किसी भी राष्ट्र के लिए एक बड़ी विपदा हो सकती है। इससे समाज में अफरा-तफरी का माहौल उत्पन्न हो सकता है। वर्तमान समय में विश्व में विभिन्न देशों के बीच युद्ध का माहौल बना हुआ है। ऐसे में गलत सूचनाएँ आग में घी का काम करती हैं। इससे समाज में अव्यवस्था फैलती है। हमने देखा है कि कितनी बार ऐसे स्थिति का दुरुपयोग तख़्तापलट एव सरकार गिराने के लिए भी किया गया है। अगर किसी राष्ट्र की बागडोर ऐसे में तानाशाहों के हाथ में आ जाए तो वे राष्ट्र की संपत्ति अपने व्यक्तिगत उपभोग में इस्तेमाल करते हैं। अव्यवस्था को इस्तेमाल करके किसी कमजोर राष्ट्र या उनके किसी क्षेत्र को आतंकी भी अपने कब्जे में ले सकते हैं एवं संपत्ति या सैन्य साजो-समान का इस्तेमाल विश्व में आतंक फैलाने के लिए कर सकते हैं।

गलत सूचनाओं से निपटने के तरीके:

जानकारी की जांच: किसी भी जानकारी को मानने से पहले उसकी जांच करें। इससे हम गलत सूचनाओं के शिकार होने से बच सकते हैं। एकाधिक स्रोत के जरिये किसी भी जानकारी का निस्पंदन करें। अखबार में किसी खबर को देखने के बाद यह अवश्य देखे की उसका स्रोत क्या है। भारत सरकार की प्रेस इन्फोर्मेशन ब्यूरो गलत सूचनाएँ अक्सर फैक्ट-चेक करके उन्हें प्रसारित करती है ताकि सार्वजनिक लोकाचार बना रहे। भारत एवं पाकिस्तान के बीच हाल में हुए युद्ध में भी सही खबर प्रसारित करने एवं गलत सूचनाओं के खंडन करने में इसने प्रभावी भूमिका निभाई। इसके अलावा विश्व स्वास्थ्य संगठन के द्वारा प्रसारित रिपोर्ट हम किसी महामारी के दौरान उपयोग में ला सकते है।

- ☛ विश्वसनीय स्रोतों का उपयोग: विश्वसनीय स्रोतों से जानकारी प्राप्त करें। इससे हमें सटीक और विश्वसनीय जानकारी मिल सकती है। किसी भी सूचना को एक से अधिक स्रोत से जान लेना एक अच्छा उपाय है। इसके अलावा हमें अपने मित्रों एवं परिवार से भी किसी भी सूचना के बारे में चर्चा समय-समय पर करनी चाहिए। विश्व स्वास्थ्य संगठन, संयुक्त राष्ट्र संगठन, प्रेस इन्फोर्मेशन ब्यूरो जैसे भरोसेमंद संस्था एवं एजेंसी द्वारा प्रसारित खबर एवं रिपोर्ट का ही भरोसा करना चाहिए।
- ☛ सोशल मीडिया पर सावधानी: सोशल मीडिया पर जानकारी शेयर करने से पहले उसकी जांच करें। किसी भी अकस्मात ग्रुप में जुड जाने पर उससे तुरंत ही बाहर निकलना एवं उसको रिपोर्ट करना चाहिए। केवल आधिकारिक स्रोत से मिले हुए निर्देश पर ही अमल करना चाहिए। जानकारी के अभाव में हमें किसी विशेषज्ञ से जानकारी ले लेनी चाहिए। इससे हम गलत सूचनाओं को फैलने से रोक सकते हैं।

गलत सूचनाएं एक बड़ा खतरा हैं और हमें इसके प्रति सावधान रहना होगा। जानकारी की जांच और विश्वसनीय स्रोतों का उपयोग करके हम गलत सूचनाओं से निपट सकते हैं और एक सूचित समाज का निर्माण कर सकते हैं। हमें सोशल मीडिया पर सावधानी बरतनी होगी और जानकारी शेयर करने से पहले उसकी जांच करनी होगी।

गलत सूचनाओं से निपटने के लिए हमें एक संयुक्त प्रयास करना होगा। सरकार, मीडिया और आम जनता को मिलकर काम करना होगा और गलत सूचनाओं के खिलाफ लड़ना होगा। हमें जानकारी की जांच और विश्वसनीय स्रोतों का उपयोग करने के महत्व को समझना होगा और इसका प्रचार करना होगा।

*****

क्या इतना बुरा हूँ मैं माँ

श्रीजिता नाग, सहायक लेखा अधिकारी

'बाहर कितनी सुंदर बारिश हो रही है! साथ में अगर माँ होती तो कितना अच्छा होता!'

जुलाई का महीना, दिनभर बारिश! पर बबलू के साथ इस बारिश का आनन्द लेने वाला कोई नहीं है, क्योंकि उसके माता-पिता दोनों नौकरी करते हैं और ऑफिस जाने के बाद इस तीन हजार स्क्वैर फीट के घर में बबलू अकेला रहता है और उसकी देखभाल के लिए एक दादी अम्मी हैं। बबलू की माँ एक वकील है। जब भी बबलू की माँ सुबह ऑफिस जाने के लिए घर से निकलती है तो बबलू हर दिन जिद करता है कि वह भी साथ में जाएगा, गाडी में माँ के पास बैठेगा और जैसे ही माँ अपने ऑफिस पहुंच जाएगी तो माँ का बैग वह ले के जाएगा, माँ को काम करते हुए देखेगा। पर हर बार माँ उसे समझाती है कि "रात को आकर मैं तुम्हें सब कुछ बताऊंगी कि क्या क्या हुआ ऑफिस में"। फिर माँ उसे गले लगा कर काले रंग की मर्सिडीज में उसकी नम आँखों के सामने से गायब हो जाती है।

उस दिन देर रात तक बबलू जगा रहा, आँखों का पानी तो सूख गया पर नींद नहीं आयी। ना जाने कब भगवान को बच्चे पर तरस आई और उसने माँ के बना ही इस बच्चे को नींद आ गई। अगले दिन सुबह माँ ऑफिस के लिए जल्दी निकल गई, माँ से बबलू की मुलाकात नहीं हुई लेकिन उन्होंने रात में एक बडी खिलौना गाडी, जो बबलू चला पाए खरीद कर लाई। बबलू के पिता एक प्रसिद्ध व्यापारी हैं। वह घर में कम और दुबई में ज्यादा रहते हैं। "बाबा क्या मुझे भूल गए हैं दादी माँ?" बबलू कभी–कभी ऐसा पूछ लेता है तो दादी माँ कहती हैं:- "अगर भूला होता तो तुम्हारे लिए क्या इतना सारा गिफ्ट हर महीने भेजता?"

बबलू के पास इस बात का कोई जवाब नहीं था— ठीक वैसे ही जैसे पहली बार बारिश होने पर बारिश की बूंदें सूखी जमीन को छूते ही गायब हो जाती है। इन सब के बीच ही घनघोर वर्षा के बीच बबलू को पेड़ों के पत्तों में अचानक एक हलचल दिखाई दी। "कौन है वहां? कौन है? बबलू ने जोर से आवाज लगाई पर आवाज सुन कर ऐसा लग रहा था कि वह डर से नहीं बल्कि उत्सुक्ता से पूछ रहा हो। बबलू के घर में एक बडी सी बालकनी है, यहां बबलू के सारे खिलौने रखे हुए हैं यहीं से खडा होकर बबलू दिनभर बारिश देख रहा था। ठीक उसी के सामने आँगन में एक पीपल का पेड़ भी था बबलू उस पेड़ में स्थित पक्षी के एक घोंसले को देख रहा था, तभी पत्तों के बीच से एक लड़के की झलक देख कर बबलू चकित हो गया। उस लड़के की उम्र भी बबलू जितनी ही होगी पर कद-काठी में बबलू से थोड़ा छोटा है, उसने एक पीला पैंट पहन रखा है जो पूरी तरह बारिश में भीग चुका है। पैंट के अलावा उसने और कुछ नहीं पहना है और वह डाल पर ऐसे लटक रहा था जैसे जंगल का टार्जन हो। बबलू ने मोबाइल में टार्जन की कहानी देखी है परन्तु आज मानो आँखों के सामने देख रहा हो।

"ए लड़का, क्या चाहिए तुझे? क्यों यहां पेड़ पर चढ़ा है?" दादी माँ ने डांटते हुए कहा "चल निकल यहां से। फिर यहाँ आया न तो दरबान को बता दूँगी"।

लड़का डगमगा के भागने लगा जैसे कोई लंगूर हो। दादी माँ ने कहा- "बबलू बेटा! तुम्हारे खिलौने चुराने के लिए आया होगा। चौकन्ना रहना पड़ेगा"।

बबलू के सारे दोस्त इस लड़के से बहुत अलग है ऐसा लड़का उसने कभी नहीं देखा, जो इतनी बहादुरी से पेड पर चढ सकता है। बबलू ने तुरंत अपनी सबसे मनपसंद खिलौना गाड़ी को बालकनी के बाहर रख दिया और अगले दिन के इंतजार में जल्दी सो गया। पता नहीं क्यों आज रात बबलू खुश था, वह आज माँ के लिए भी नहीं रोया। उसको खुश देखकर दादी माँ भी खुश थी। दोपहर के तीन बजे बबलू के खिलौना को देखने कोई नहीं आया पर रात में जब बबलू सो रहा था तो किसी ने उसकी गाड़ी को उठाया, जिसे उसने अपने हाँथ से बांध कर सोया था। बबलू तुरंत उठ गया वह भाग कर बैलकनी की तरफ गया और देखा उस पीपल के पत्तों में हलचल हो रही थी।

"स्को– नाम क्या है तुम्हारा? कौन हो तुम? रोओ मत – कुछ नहीं कहूँगा"। बबलू ने कहा

अंधेरे पत्तों के बीच से आवाज आई "जादू"।

जादू पास की बस्ती में रहता है। उसकी माँ लोगों के घर में काम करती है। जादू स्कूल भी जाता है। उसकी माँ शाम तक काम से लौट के आती है। फिर जादू जाकर माँ की गोद में छिप जाता है, दिन भर की सारी बातें करता है। फिर माँ रोटी पकाती है और वह पढ़ता है। सोने के समय जादू माँ के सर पर नरम हाथों से जादू की छड़ी घुमा देती है और माँ और बेटा दोनो सो जाते हैं। कभी-कभी जादू भी माँ के साथ काम पे चला जाता है मदद करने। पर दादी माँ की बात भी सही थी- जादू ने ऐसा खिलौना पहले कभी नहीं देखा था इन खिलौनो को देखने के लिए ही वह पेड़ पे चढ़ जाता था। "क्या हम दोनों दोस्त बन सकतें हैं?" बबलू ने पूछा और जादू ने जवाब दिया "हाँ"। इस प्रकार बबलू को एक नया दोस्त मिल गया जिसके साथ वह खेल सकता था, बातें कर सकता था। दोपहर को दादी माँ के सो जाने के बाद बबलू और जादू दोनों बालकनी मे खूब खेलते हैं, मजे करते हैं।

कुछ दिन बाद जादू बबलू को अपना घर दिखाने ले गया। पहली बार बबलू इस तरह किसी के घर जा रहा था वह बहुत खुश था। जादू बबलू को अपनी दुनिया में ले गया। उसे अपनी माँ से मिलाया और अपने कुछ दोस्तों से भी मिलाया जो जादू के घर के पास ही रहते थे। दिन पर दिन दोनों की मित्रता गहरी होती गई। दोनों एक साथ खूब मजे करते। बबलू भी अब खुश रहने लगा था मानों उसके जीवन में जो रिक्ति थी, जादू के सानिध्य ने उसे पूरा कर दिया।

देखते ही देखते साल का अंतिम समय आ गया। बबलू के स्कूल में एक वार्षिक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ था। इस कार्यक्रम में अच्छे नम्बर पाने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया जाता था। इस बार बबलू का रिजल्ट पहली बार बहुत अच्छा हुआ था। उसे परीक्षा में प्रथम स्थान मिला था इसके लिए उसे मेडल भी दिया जाएगा और वह मेडल बबलू को उसकी माँ स्टेज पर सबके सामने पहनाएगी। यही सोच कर बबलू बहुत खुश हुआ और जादू ने भी तालियां बजाई। फिर जादू ने कहा "काश माँ को गर्वित करने का ऐसा मौका मुझे भी मिलता। कोई बात नहीं, इसे देखो माँ ने तुम्हारे

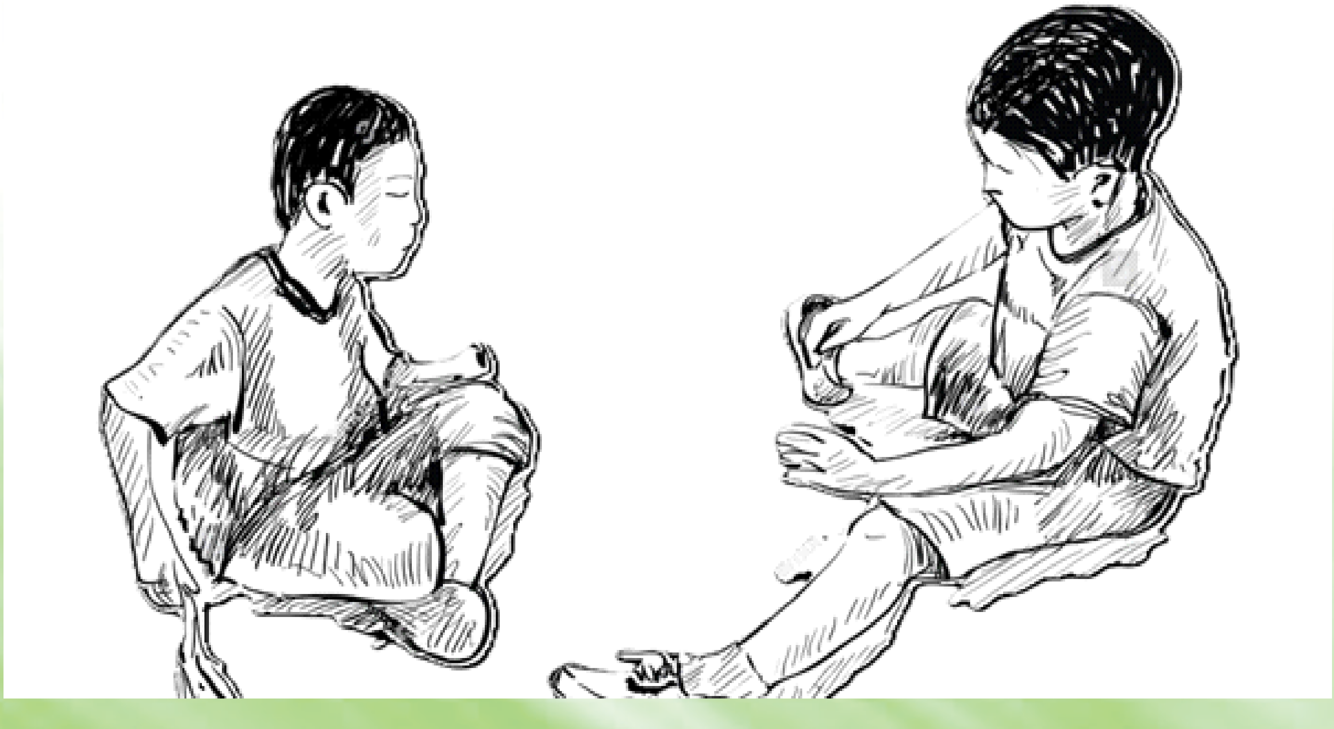

लिए क्या भेजा – नाडु (एक मिठाई), इस खुशखबरी के लिए''।

स्कूल हॉल में सारे बच्चे और उसके माता पिता आ गये हैं। कुछ ही देर में वार्षिक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी शुरू हो जाएगा। स्कूल के कुछ बच्चे देशभक्ति गीत के माध्यम से कार्यक्रम की शुरूआत करेंगे और उसी के बाद पुरस्कार वितरण का कार्यक्रम शुरू होगा। एक मशहूर साहित्यकार को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया है। वह भी पहुँच गये हैं सिर्फ बबलू दिखाई नहीं दे रहा है। बबलू अंतिम हॉल के कोने में अंतिम पंक्ति में बैठा था। उसका चेहरा उदास था, आँखे नम थीं, खुशी और उत्सुकता मानो गायब ही हो गई थी। निर्जीव की तरह वह कोने में बैठा रहा जिसका कारण यह था कि उसकी माँ आज के कार्यक्रम में नहीं आई थी। कार्यक्रम के एक दिन पहले ही माँ फोन करती है और कहती है ''बेटा! मै शहर से बाहर हूँ मुझे बहुत जरूरी काम है, कल आ नहीं पाउंगी, पर चिंता मत करो तुम्हारे लिए सबसे अच्छा गिफ्ट खरीदकर लाऊँगी''।

माँ की बात सुनकर बबलू बहुत रोया, गुस्से में घर की चीजें तोड़ डाली, खाना नहीं खाया और दादी से भी बात नहीं की। अपनी नाराजगी जाहिर करने के लिए बबलू जो-जो कर सकता था उसने सब कुछ किया ताकि उसकी माँ इस कार्यक्रम में आए पर माँ नहीं आ पाई। इसके बाद बबलू ने अपनी माँ से कुछ नहीं कहा और सोने चला गया।

पुरस्कार वितरण के क्रम में कुछ देर बाद बबलू का नाम बुलाया गया और साथ में उसकी माँ को भी बुलाया गया। बबलू मेडल लेने नहीं जाना चाहता था। लेकिन कुछ समय बाद ही उसे हाँथ में मेडल लिए एक महिला दिखाई दी। बबलू खुश हो गया प्रसन्नता उसके चेहरे पर दिख रही थी खुशी से उसकी आँखों से आँसू निकल रहे थे। ''माँ आई है''। कहता हुआ बबलू कुदा और दौड़ते, भागते, गिरते-पड़ते हॉल में पहुंचा। माँ को देखा। माँ उसके लिए हाथ में मेडल लिए खड़ी थी। माँ खड़ी है, स्टेज के बीच में बांह फैलाए बबलू की तरफ, उनके चेहरे पर खुशी साफ झलक रही थी, आखिरकार गर्व से उन्होंने बबलू को मेडल पहनाया और तालियाँ बजने लगीं। यह वही माँ थी जिससे बबलू कुछ दिनों पहले मिला था जिसे जादू भी माँ बुलाता है, जो मां बस्ती में रहती है।

*****

''हिंदी ही एक भाषा है जो भारत में सर्वत्र बोली और समझी जाती है।''

– डॉ. जार्ज ग्रियर्सन

संयोग

सचिन प्रसाद, कनिष्ठ अनुवादक

"टिफिन पैक कर दिया है, इसे पहले बैग में रख लो नहीं तो भूल जाओगे। ट्रेन कितने बजे की है? इस बारिश को भी अभी ही आना था। सच में जब मुसीबत आती है तो चारों तरफ से आती है। एक तो पहले भी देर हो चुकी है और ये बारिश"- रोहन की माँ ने कहा। सावन का महीना, दोपहर का समय, तेज बारिश के बीच रोहन हाथ में छाता और कंधे पर बैग लिए सड़क पर ई-रिक्शा का इंतजार कर रहा था। इतनी तेज बारिश में एक भी गाड़ी या कैब सड़क पर नहीं दिख रही थी। रोहन एक परीक्षा देने दिल्ली जा रहा था। दो घंटे बाद उसे सियालदह से दिल्ली के लिए ट्रेन पकड़नी थी। उसके मन में एक ही चिंता थी कि कहीं उसकी ट्रेन न छूट जाए। रोहन की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। उसके पिताजी एक जूट मील में काम करते थे, जिससे घर की जरूरतें भी मुश्किल से पूरी होती थीं। अत: ये नौकरी ही रोहन और उसके परिवार को इस आर्थिक संकट से बाहर निकाल सकती थी। इतने वर्षों की मेहनत के बाद मेन्स की परीक्षा देने का अवसर जो मिला था। उसकी तैयारी भी अच्छी थी और यह मौका वह इस तरह गंवाना नहीं चाहता था। पंद्रह मिनट के इंतजार के बाद उसे एक रिक्शा मिला और वह कल्याणी स्टेशन के लिए रवाना हुआ जहाँ से वह लोकन ट्रेन के द्वारा सियालदाह पहुँचता।

बारिश के कारण लोकल ट्रेनें भी देरी से चल रही थीं और रोहन की चिंता और भी गंभीर होती जा रही थी कि कहीं उसकी ट्रेन न छूट जाए। संयोग से स्टेशन पहुँचते ही उसे सियालदह के लिए लोकल ट्रेन मिल गई। ट्रेन में बैठते ही उसने घड़ी को ओर देखा और उसकी चिंता थोड़ी कम हुई क्योकि अभी उसके पास दो घंटे का समय था और सियालदाह पहुँचने में एक घंटा पन्द्रह मिनट का समय लगता है। वह आराम से दिल्ली के लिए ट्रेन पकड़ सकता था। पर यह राहत ज्यादा देर के लिए नहीं थी। ट्रेन की पटरियों के मध्य जल भराव के कारण ट्रेन भी धीरे-धीरे चल रही थी।

अपराह्न 4.45 बजे ट्रेन सियालदह स्टेशन के एक नम्बर प्लेटफॉर्म पर पहुंची। ट्रेन के रूकते ही रोहन ट्रेन से उतरकर दौड़ते हुए बारह नम्बर की प्लेटफॉर्म की ओर भागने लगा। वहाँ उसकी ट्रेन राजधानी एक्सप्रेस पहले से लगी हुई थी और ट्रेन के रवाना होने में सिर्फ पाँच मिनट का समय बचा था। शुक्रवार का दिन था और साथ ही ऑफिस टाइम इसलिए स्टेशन पर भीड़ भी बहुत थी। लोग कार्यालय से अपने घर जा रहे थे। इस भीड़ को भेदते हुए रोहन अंतत: प्लेटफॉर्म नंबर बारह पर पहुंचा। रोहन के प्लेटफॉर्म पर पहुँचते ही ट्रेन खुल गई और दौड़ते हुए वह अंतत: एक डिब्बे में चड़ गया। पर वह अपने डिब्बे में नहीं चढ़ा था फिर भी वह खुश था क्योंकि वह ट्रेन में चढ़ चुका था। थोड़ा रूक कर पानी पीने के पश्चात वह अपने सीट की ओर बढ़ने लगा। रोहन का टिकट भी आर ए सी (रिजर्वेशन अगेन्स्ट कैंसीलेशन) का था। अपनी सीट के पास जाकर उसने देखा कि सीट पर एक वयस्क व्यक्ति बैठे हुए हैं। रोहन ने उन्हें बताया कि यह मेरी भी सीट है पर वे मानने को तैयार ही नहीं थे। टिकट भी दिखाने पर बात नहीं बन रही थी तब दोनों में बहस शुरू हो गई जो टी.टी. के आने के बाद रूकी। अंततः रोहन ने राहत की साँस ली। सबसे पहले उसने घर पर फोन कर के बताया कि वह ट्रेन में बैठ चुका है।

दो घंटे बाद ट्रेन दुर्गापुर पहुंची। जो दो चार सीटें खाली थीं वे भी भर गईं। रोहन कोई पुस्तक पढ़ रहा था तभी एक जानी-पहचानी आवाज में किसी ने उसे बुलाया। वह समझ नहीं पा रहा था कि यह आवाज किसकी है। उतने में ही एक लड़की उसके सामने आई और कहा- "पहचान रहे हो या भूल गए"? तभी रोहन ने उस लड़की को देखा और अपनी बाईं ओर की सीट पर बैठी उसकी माँ को देखा और उन्हें देखते ही उसका चेहरा खिल उठा। आश्चर्यचकित होकर उसने कहा "अंजली तुम। इतने वर्षों बाद हम मिले और मिले भी तो ऐसे अचानक एक ट्रेन में। तुम्हे कैसे भूल सकता हूँ मैं" रोहन ने कहा।

अंजली रोहन की पड़ोसी थी। दोनों एक ही स्कूल में एक ही कक्षा में पढ़ते थे और एक-दूसरे को बचपन से जानते थे। उनकी दोस्ती इतनी गहरी थी कि दोनो साथ खेलते, साथ स्कूल जाते। एक-दूसरे के घर दोनों का आना-जाना लगा रहता। फिर अचानक अंजली के पिताजी का स्थानांतरण किसी दूसरे राज्य में हो गया और उच्च माध्यमिक परीक्षा खत्म होते ही अंजली फिर किसी उसी राज्य में चली गई। उसके लगभग सात वर्षों के बाद आज दोनों मिले हैं। रोहन ने अंजली की माँ को प्रणाम किया और फिर दोनों एक दूसरे का हाल-चाल पूछने लगे। रोहन ने पूछा- "क्या आप लोग दुर्गापुर में रहती हैं"। माँ ने जवाब दिया "हाँ, पिछले ही वर्ष अंजली के पिताजी का स्थानांतरण दुर्गापुर के एक शाखा कार्यालय में हुआ है। तभी से हम यहां एक सरकारी क्वाटर में रहते हैं।" माँ ने फिर रोहन से पूछा- तुम कहाँ जा रहे हो बेटा? रोहन ने जवाब दिया- "दिल्ली जा रहा हूँ एक परीक्षा देने।"

रोहन- "और आप लोग?

माँ- "हम भी दिल्ली ही जा रहें है अंजली की भी परीक्षा है।

रोहन– "परीक्षा केंद्र टी.सी.एस., 23 पृथ्वीराज रोड, कस्तूरबा भवन, दिल्ली है क्या"?

माँ – मुझे तो नहीं पता बेटा। अंजली को पता होगा"।

अंजली– हाँ वहीं हैं।

माँ– तब तो अच्छा ही हुआ। तुम दोनों साथ जा सकते हो परीक्षा देने।

थोड़ी देर की बातचीत के पश्चात खाना खाने का समय हो गया। तीनो ने फिर साथ में भोजन किया। थोड़ी देर बाद माँ सो गई लेकिन रोहन और अंजली की तो मानो बातें ही खत्म नहीं हो रही थीं। इतने वर्षों बाद जो दोनो मिले थे। वे पुराने दिनों की स्मृतियों को याद कर एक दूसरे को बता रहे थे, एक दूसरे को चिढ़ा रहे थे।

अंजली– तुम्हे याद है जब हमने कक्षा छह में रामायण का मंचन किया था?

रोहन – "हाँ वो मैं कैसे भूल सकता हूँ। मंचन के समय मैं डायलॉग ही भूल गया था। मुझे मंच के कोने से लोग डॉयलॉग बता रहे थे"।

अंजली – "और फिर भी तुम याद नहीं कर पा रहे थे।"

रोहन – "अरे! मैंने तो रामजी के रोल के सभी डॉयलॉग याद कर रखे थे और मुझे लक्ष्मण जी का रोल मिल गया था इसलिए लेकिन तुम तो लीड रोल में भी नहीं थी। लेकिन मैने तो कम से कम मंचन तो किया।"

बातें करते-करते न जाने कब रात के एक बज गए पता ही नहीं चला। सुबह जल्दी उठना भी था क्योंकि सुबह ही ट्रेन के दिल्ली पहुँचने का समय था। फिर दोनों सो गए। पर रोहन को नींद ही नहीं आ रही थी। एक अजीब से एहसास ने मानों रोहन की नींद छीन ली हो। उसका मन हल्का लग रहा था, मानों वह फिर से स्कूल में पढ़ने वाला विद्यार्थी बन गया हो। न कोई चिंता, न कोई डर, न करीयर की चिंता, न परिवार के प्रति दायित्वबोध, सब जैसे छुट्टी पर चले गए हों। गाने सुनते-सुनते रोहन को कब नींद आ गई पता नहीं चला।

"बेटा उठो, कुछ ही देर में हम दिल्ली पहुँचने वाले है। जल्दी से फ्रेश हो जाओ। अंजली की माँ की आवाज सुनकर रोहन उठा। सुबह के लगभग दस बज रहे थे। उसे आश्चर्य हुआ कि वह इतनी देर तक सोता कैसे रह गया। साधारणत: वह सात बजे तक उठ जाता था। परीक्षा की तैयारी के मध्य वह इतनी बेफिक्री से बहुत दिनों बाद सोया था, जो उसके चेहरे पर भी दिख रही थी। थोड़ी देर बाद करीब 11

बजे ट्रेन नई दिल्ली स्टेशन पर पहुँची। वे लोग अपना सामान लेकर ट्रेन से उतरे और फिर यह तय हुआ कि पास की किसी दुकान में रूक कर नाश्ता करना है, फिर होटल जाना है।

नाश्ता करने के बाद दोनों अपने-अपने होटल की ओर जाने लगे। दोनों के होटल पन्द्रह मिनट की दूरी पर थे और यह तय हुआ कि दोनों परीक्षा साथ में देने जाएंगे। अगले दिन समय से पहले ही रोहन अंजली के होटल पहुँच गया और दोनों साथ परीक्षा देने गए। परीक्षा समाप्त होने के पश्चात रोहन ने यह तय किया कि कहीं आस-पास घूम लिया जाए क्योकि कल सुबह ही उसकी ट्रेन थी। और तुम्हारी ट्रेन कब है"? रोहन ने पूछा। अंजली ने कहा- मेरी ट्रेन तो दो दिन बाद की है। माँ ने यह तय किया कि दिल्ली जा रहे हैं तो कुछ दिन दिल्ली घूम भी लेंगे।

फिर दोनों पास ही स्थित लोधी गार्डेन गए। गार्डेन में उगे रंग-बिरंगे ट्यूलिप के फूल, चिड़ियों की चहचहाहट, तालाब के किनारे बैठे प्रेमी जोड़े, स्कूल यूनिफॉर्म में आए लड़के-लड़कियां, टहलते लोग और गिटार बजाते हुए गाना गाते हुए लड़के आदि दोनों को पुराने दिनों की स्मृतियों में ले गए, जब वे दोनों ट्यूशन के बहाने इसी तरह घूमने चले जाया करते थे। रोहन ने कहा- वो कितने अच्छे दिन थे। पर तुम अचानक गायब हो गई। ट्रांसफर के बारे में भी नहीं बताया और ना ही कभी कॉल किया और ना ही मेसेज। मैं महीनों तक तुम्हें फोन करने की कोशिश करता रहा पर शायद तुमने फोन नम्बर भी बंद कर लिया था। ऐसा क्यों किया तुमने? अंजली बोली- पिताजी का ट्रांसफर मेरे लिए बहुत कष्टदायी रहा। अपना घर, परिवार, मित्र, स्कूल, शहर छोड़कर किसी अन्य शहर में जाना, वहाँ फिर से नई शुरूआत करना, खुद को एडजस्ट करना मेरे लिए आसान नहीं था। मैं तो जैसे डिप्रेशन में चली गई थी। इसीलिए शायद मैं अपने अतीत से भागती रही। रोहन ने पूछा- तुम्हें पता था न हमारा रिश्ता दोस्ती से बढ़कर था। तुम्हें एक बार भी मुझसे बात करने का मन नहीं हुआ, बंगाल आने के बाद भी? नि:शब्द अंजली तालाब की ओर देखती रही और कुछ न कह सकी।

कुछ देर बाद अंधेरा होने लगा था और दोनों अपने-अपने होटल के लिए निकल पड़े। होटल पहुँचकर रोहन ने अलार्म लगाया और जल्दी सो गया क्योकि अगली सुबह छह बजे की ट्रेन थी। अगले दिन अलार्म बजने से पहले ही अंजली का फोन आया। – सो रहे थे क्या? उठो जल्दी वरना ट्रेन छूट जाएगी और हां अच्छे से जाना और घर पहुँच कर मुझे बता देना। इसके बाद दोनों का एक दूसरे के प्रति प्रेम और भी गहरा होता चला गया। वे दोनों फिर पहले की तरह एक दूसरे से मिलने-जुलने लगे।

कुछ महीनों के बाद उस परीक्षा का रिजल्ट भी आ गया और रोहन का नाम इस बार भी मेरिट लिस्ट में नहीं आया। अवसाद से भरे रोहन को समझ नहीं आ रहा था कि अब क्या करे। अब तो उसके परिवार के साथ उसके प्रेम का भविष्य भी इसी एक रिज्लट के भरोसे था। वह कभी अपनी काबिलियत पर प्रश्न चिह्न खड़ा करता, कभी अपनी मेहनत पर तो कभी अपनी किस्मत पर। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे? फिर से तैयारी करे या फिस किसी प्राइवेट कम्पनी में कार्य करे? फिर उसे याद आया कि अंजली के पिताजी ने उससे क्या कहा था- तुम अपने भविष्य की चिंता करो, मुझे तो यह अंधकारमय लगता है। तुम दुनिया के साथ कदम से कदम मिलाकर कैसे चल पाओगे, कैसे अंजली को खुश रख पाओगे? ना ही तुम्हारे पास कोई अच्छी नौकरी है, ना ही कोई व्यवसाय और ना ही समृद्ध परिवार से हो? उधर अंजली भी ना चाहते हुए रोहन का साथ नहीं दे पा रही थी। उसने पिताजी समेत पूरे परिवार को मनाया पर कोई हल न निकल सका। उसके मन में आया कि वह भाग जाए पर कुल-मर्यादा, घर-परिवार की इज्जत आदि जैसे विचार ने उसे असमंजस में डाल दिया था।

यही बातें रोहन के मन मस्तिष्क में घर कर गई थीं और उसने भी ठान लिया था कि अब सरकारी नौकरी हासिल कर के ही रहेगा। उसे यह समझ में आ रहा था कि सरकारी नौकरी ही एक ऐसा ब्रह्मास्त्र है जिसके सहारे एक निम्न मध्यमवर्गीय परिवार का लड़का हर युद्ध जीत सकता है, उसकी सारी कमियाँ नजरअंदाज की जा सकती हैं। तभी रोहन ने दृढ़ निश्चय किया और फिर से तैयारी शुरू की।

रॉय बाबू मेंरा पेंशन अभी तक क्यों नहीं आ रहा है? किसी ने सवाल किया। रॉय बाबू बोले- "आमी जानी ना। फाइल अधिकारी के पास है, शायद जमा किए गए दस्तावेजों में कुछ कमी होगी। आप पेंशन अधिकारी के पास जाकर इसका विवरण ले सकतें है। "चलिए पिताजी, कमरा नम्बर तीन में पेंशन अधिकारी के पास चलकर पता करते है।" अंजली ने कहा। सर मेरा पेंशन.......... कहते-कहते अंजली के पिताजी रूक गए। जैसे उन्होंने कोई भूत देख लिया हो। रोहन को उस कुर्सी पर बैठा देख दोनों आश्चर्यचकित थे। अंजली भी अचानक इस तरह रोहन से मिलकर नि:शब्द हो गई थी। कुछ कह नहीं पाई, बस नजरें झुकाए मूर्तिवत खड़ी रही। रोहन ने कहा- आपका कार्य कुछ दिनों में हो जाएगा। अंजली के पिताजी धन्यवाद कहते हुए बोले- बेटा! तुम तो इन पाँच वर्षों में बिल्कुल बदल गए हो और बाहर चले गए। बेटा शब्द सुनकर रोहन के मन में यह विचार आया कि मेरिट लिस्ट में आया हुआ तुम्हारा एक नाम तुम्हारी जीवन की नाकामियों को हमेशा के लिए दफन कर देता है।

*****

कर्म लौट कर आया

गौरव कुमार, लेखाकार

कार की सीट पर सीटबेल्ट लगाए हुए पूरी तरह से चौकन्ना और एसी ऑन होने बाद भी पसीने से लथपथ, स्टीयरिंग को तेजी से दाएं-बाएं घुमाते कार को नियंत्रित करने की कोशिश करते शंभु की आंखे चौड़ी हो गईं और धड़ाम की आवाज के साथ गाडी एक पेड से टकरा गई। स्टीयरिंग से सर टकराकर लहूलुहान हो गया था। गाड़ी के बाएं हिस्से में ज्यादा नुकसान हुआ था जहां कोई बैठा नहीं था। दरवाजे को जोर का धक्का देकर शंभु जैसे-तैसे बाहर निकला और रुमाल से बहते हुए खून को रोकने और साफ करने की कोशिश की। गाडी की हालत पर तरस खा रहा था कि पीछे की तरफ सडक पर किसी व्यक्ति को पड़ा हुआ पाया। शंभु जल्दी से उस व्यक्ति के पास पहुँचा तो घबरा गया। वह व्यक्ति सचमुच बहुत घायल था, खून से सना हुआ। पैरों में न जूते थे, न ही शरीर पर ढंग के कपड़े। शंभु ने उस व्यक्ति की साँस देखी थोड़ा सुकून मिला कि वह अभी जिंदा है। शंभु भागकर अपनी गाडी के पास पहुंचा और अपना फोन ढूँढने लगा....जो ड्राइवर सीट के पास मैट पर पड़ा मिला। फोन से तुरंत प्राथमिक चिकित्सा केंद्र को अपनी स्थिति की सूचना दी और दूसरे व्यक्ति के बारे में बताने ही वाला था कि उसकी आँखों के सामने अंधेरा छाने लगा। फोन हाथ से गिर गया और शंभु किसी सूखे पत्ते की तरह जमीन पर गिर पड़ा।

शंभु की आँख खुली तो चारों तरफ सफेद दीवार सा कमरा दिखा जिसकी खिड़कियों पर नीले परदे पड़े थे और उसे सब धुंधला दिखाई दे रहा था। चारों ओर अजीब सी खामोशी थी जिसके बीच मशीनों की आवाजें सुनाई दे रही थीं। धीरे-धीरे शंभु अपने शरीर को महसूस कर रहा था। उसका बदन टूट रहा था और उसे ऐसा लगा कि किसी ने पाँचवीं मंजिल से उसे फेंक दिया हो। सर दर्द में उसे लगा कि किसी ने भारी पत्थर उसके सर पर रख दिया हो। शंभु की कराह सुनकर कमरे का दरवाजा खुला और एक नर्स अंदर आई और उसने एक इन्जेक्शन दिया जिसके बाद शंभु सो गया। जब शंभु को होश आया तब भी उसे दर्द महसूस हो रहा था लेकिन उसे परिवार वालों से मिलने की इजाजत मिल गई।

शम्भु आज बहुत दिन बाद अपने परिवार वालों से मिलेगा। वह इसी बारे में सोच रहा था कि कमरे का दरवाजा खुला और अपनी पत्नी को उसने अंदर आते देखा। उसकी आँखों में आँसू थे। उसे बस एक धुंधली याद थी। हल्की नीली साड़ी, आँखों पर चश्मा चढ़ा हुआ। थोड़े प्रयास के बाद शम्भु ने अपनी पत्नी ज्योति को पहचान लिया। उसके पीछे शंभु के माँ-बाप बहुत बूढ़े लग रहे थे। तभी एक सोलह साल की किशोरी ने प्रवेश किया। शंभु उसे पहचान नहीं सका। तभी डॉक्टर भी आया और उसने शंभु को अपने परिवार वालों को पहचानने को कहा और उनके नाम पूछे जिसके ठीक जवाब शंभू ने दिए। डॉक्टर संतुष्ट हुआ और परिवार वाले खुश थे। लेकिन शंभू उस लड़की को न पहचान सका। वह ज्योति से कुछ पूछना चाहता था लेकिन उसने शंभु को चुप करा दिया। शंभु ने सोचा कि शायद वह ज्योति की रिश्तेदार होगी जो मदद के लिए आई होगी। डॉक्टर ने जांच करवाके उसे दो दिन तक अपनी निगरानी में रखा। । इन दो दिनों में उसकी पत्नी ज्योति हॉस्पिटल में रुकती और दिन में उसके पिताजी रहते। वह लड़की ज्योति के साथ आती और कुछ देर बाद चली जाती थी।

अब शंभु को अस्पताल से छुट्टी मिल रही थी। वह अब दुनिया के सबसे सुखी लोगों में से एक था। वह चल सकता था लेकिन चाल में हल्की सी लड़खड़ाहट थी। अभी भी उसके दिमाग में कुछ प्रश्न थे जिनका वह जवाब ढूंढ रहा था। डिस्चार्ज आदि के बाद ज्योति उसके साथ निकली। बाहर कैब इंतजार कर रही थी। कैब देखकर शंभु ने सोचा कि शायद बहुत महंगा अस्पताल है जो एसी कार से घर तक भेजेगा। ज्योति ने हँसते हुए कहा कि ये कार हमने किराए पर ली है। पूरे रास्ते ऊंची-ऊंची खूबसूरत इमारतें थीं। शंभु को लगा कि वह विदेश में तो नहीं हैं। ज्योति के जवाब से पहले ही उसका फोन बजा। शंभु के पिताजी का फोन था। उन्होंने मिठाई खरीदने का आदेश दिया था।

जब वे घर पहुंचे तो शंभु को समझ में आया कि यह घर तो उसका नहीं है, जहां वह पहले रहा करता था। उसने बेचैनी में ढेर सारे सवाल पूछने शुरू किए। सब कुछ इतना कैसे बदल गया। अचानक वह लड़खड़ाया लेकिन उसे ज्योति ने संभाल लिया। शंभु ने गौर किया कि ज्योति के बाल सफेद हो गए थे जिसपर उसने डाई की थी। अब परिवार वालों ने शंभु को सारा सच बताने का निर्णय लिया। ज्योति ने उसे बताया कि वह पिछले तेरह सालों से कोमा में था और छह माह पहले ही उसके शरीर में थोड़ी हरकत हुई। ज्योति ने कहा- दुनिया तेरह साल आगे जा चुकी है। अब 2025 चल रहा है। शंभु अभी भी अपने अतीत में था। उसे यकीन नहीं हुआ। उसने शीशे में अपना चेहरा देखा और खुद को समझने की कोशिश की तभी वही लड़की सीढ़ियों से उतरते हुए नीचे आई जो अस्पताल में आती थी और ज्योति से बोली- माँ, मैं अपनी दोस्त के यहाँ जा रही हूँ और वहाँ से सीधे अपने घर जाऊंगी। ज्योति ने सहमति में सर हिलाया। अब शंभु ज्योति को घूरते हुए देख रहा था। एक के बाद कई सवाल उसने ज्योति से पूछ डाले। तुम उसकी माँ कैसे, और दूसरा घर... क्या तुमने दूसरी शादी कर ली है? उसके सवाल ज्योति को चाकू से ज्यादा तेज लग रहे थे, जैसे कोई वार पर वार किए जा रहा हो। शंभु को लगा कि वह हॉस्पिटल गया और ज्योति की प्राथमिकता बदल गई।

शंभु को अंदाजा भी नहीं था कि जिंदगी ने ज्योति को कितने दर्द दिए और कैसे उसने उन सबका सामना किया। बस उसे यह चिन्ता खाए जा रही थी कि ज्योति ने दूसरी शादी कैसे कर ली और एक बेटी है? शंभु ज्योति को ताने मारता रहा यद्यपि उसके माँ-बाप ने रोकने की कोशिश की लेकिन उसे किसी की कोई बात नहीं सुननी थी। ज्योति बोली- तुम वो शंभु नहीं जिसे मैंने जाना था। अब यहाँ मेरा कोई काम नहीं। अपनी दवाइयाँ समय पर लेते रहना...अलविदा। दुख, उदासी और गुस्से से ज्योति अपने घर पहुंची जहां वह पिछले छह माह से रह रही थी। अकेलेपन में वह बिखर पड़ी। शंभु के माता-पिता ने बाद में उसे सारी बात बताई तो वह दुखी मन से अपने आप को कोसने लगा। शंभु को पता चला कि उसके एक्सीडेंट के बाद वहाँ सबसे पहले ज्योति ही पहुंची थी। वहाँ शंभु और उस व्यक्ति के अलावा एक बच्ची भी थी जो न जाने कैसे बच गई थी और बेहोश थी। एम्बुलेंस से तीनों को वह अस्पताल ले गई लेकिन बच्ची का बाप न बच सका और शंभु कोमा में चला गया। उस बच्ची का और कोई नहीं था। चूंकि एक्सीडेंट में शंभु की ही गलती थी इसलिए अपने अपराधबोध को दूर करने के लिए ज्योति ने उस बच्ची की कस्टडी पुलिस से मांगी। जांच से पता चला कि एक्सीडेंट से पहले किसी ने शंभु की ब्रेक में छेड़छाड़ की थी।

दुर्घटना में मृत व्यक्ति ही ने ये हरकत की थी क्योंकि उसे एक पुरानी घटना का बदला लेना था। दुर्घटना से पहले वह व्यक्ति किसी

गैराज में एक मकैनिक था जहां काम करते हुए उसपर एक कार गिर गई और वह अपाहिज हो गया। गैराज कंपनी ने उसे निकाल दिया। शंभु की इन्श्योरेन्स कंपनी में ही इस व्यक्ति का बीमा था। इसके चक्कर में रोज वह बीमा कंपनी का चक्कर लगाता था लेकिन शंभु उसे टालता रहता था। और फिर ये दुर्घटना हुई। जिस दिन दुर्घटना हुई उस दिन शंभु से उस व्यक्ति का भयानक झगड़ा हुआ था। उसने खुन्नस में अमित की कार की ब्रेक में गड़बड़ी कर दी और उसका परिणाम सामने था। उसका कर्म लौट कर वापस आया था। शंभु ये सब जानकार सदमे में था। उसे अपनी पत्नी पर भरोसा हो गया लेकिन उसे समझ में नहीं आया कि ज्योति अलग क्यों रहती थीं? शंभु के माता-पिता ने बताया कि जब दो-तीन माह में बच्ची की जिम्मेदारी किसी ने नहीं ली तो ज्योति ने विधिवत गोद ले लिया, जिसका हम सभी ने विरोध किया था। हमें लगा कि हम किसी ऐसे व्यक्ति के बच्चे को कैसे पाल थे जिसने हमें मारने की कोशिश की थी। ज्योति ने तुम्हारी गलती सुधारने के लिए उस बच्ची के साथ रहने का फैसला किया। कुछ दिन यहीं रही फिर स्पेन चली गई और अपनी डॉक्टरी की प्रैक्टिस शुरू की। जब उसे पता चला कि तुम्हें होश आया है तो छह माह पहले ही वापस आई है। आते ही तुम्हारी देखभाल में जुट गई। बहुत कहने-सुनने पर यहाँ आना-जाना शुरू किया था। हमने उससे माफ करने को कहा तो उसने हमें माफ कर दिया। तुमने उसके साथ बहुत गलत किया है। शंभु अपने माँ-बाप के साथ ज्योति के घर के लिए निकल पड़ा।

वहाँ पहुंचते ही पता चला कि एक घंटे पहले ही ज्योति अपनी बेटी के साथ एयरपोर्ट निकल गई थी। वापस जाने के क्रम में शंभु लड़खड़ा गया। एयरपोर्ट पर पहुँचने पर उसे अंदर नहीं जाने दिया गया क्योंकि उसके पास दस्तावेज नहीं थे। शंभु के माता-पिता अंदर गए तो उन्हें ज्योति और उसकी बेटी दिख गए। उन्होंने ज्योति से वापस चलने का अनुरोध किया। वे बोले- शंभु तुम्हें लेने आया है। ज्योति मना करना चाहती थी लेकिन उसकी बेटी बोल पड़ी- क्या! पापा आए है? चलिए मम्मी, पापा से मिलते हैं और दादू के साथ रहेंगे फिर। जब वे सब बाहर आए तो शंभु शर्मिंदगी और पछतावे में खोया पड़ा था। तभी उसकी बेटी ने आकर उसे प्यार से जब पापा कहा तो उसने भरी आँखों से उसे गले लगा लिया। अब उसका पश्चाताप जैसे पूरा हो रहा था। शंभु ने बेटी से उसका नाम पूछा तो उसने कहा- स्मिता, लेकिन माँ मुझे खुशी कहती है। सभी हँस पड़े। ज्योति की आँखों में खुशी के आँसू थे।

*****

"हिंदी सीखे बिना भारतीयों के दिल तक नहीं पहुँचा जा सकता।"

– डॉ. लोथर लुत्से

साइबर फ्रॉड से बचना है, तो शक करना सीखिए

अनुज साव, लेखाकार

टीआरएआइ(TRAI) आपके सभी मोबाइल कनेक्शन अगले एक घंटे में ब्लॉक कर देगी, इस बारे में अधिक जानना चाहते है, तो शून्य दवाएं, वह संदेश मिलते ही मैं समझ गया कि साइबर अपराधी लाइन पर है। फोन इंटरनेशनल नंबर से आया था और टीआरएआइ तो बार-बार कहता है कि हमारे नाम से आने वाले फोन कॉल पर विश्वास न करें, तो मैंने फोन काट दिया और नंबर ब्लाक कर दिया। यही आपको भी करना चाहिए।

साइबर अपराध को ऐसे अपराध के रूप में परिभाषित किया जाता है जहां कंप्यूटर अपराध का माध्यम होता है या अपराध करने के लिए एक उपकरण के रूप में प्रयोग किया जाता है। इसमें अवैध या अनधिकृत गतिविधियां शामिल हैं, जो विभिन्न प्रकार के अपराध करने के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाती हैं। साइबर अपराध में अपराधों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है जो व्यक्तियों, संगठनों के साथ-साथ सरकारों को भी प्रभावित कर सकता है।

साइबर क्राइम बहुत तरीकों का हो सकता है। मसलन किसी की वेबसाइट या ईमेल एकाउंट या क्लाउड या कोई अन्य वेब अकाउंट्स को हैक करना, किसी को किसी चीज़ का लालच देकर उसकी निजी जानकारी चुरा लेना इत्यादि। इन सभी प्रकार के अपराधों को अलग-अलग नाम से जाना जाता है जैसे- हैकिंग, साइबर हमले, चैटवॉट क्राइम्स, साइबर ताकझांक या निगरानी करना, फिशिंग (लालच दे कर अपने जाल में फसाना), चाइल्ड एब्यूज, फिरौती, इंटरनेट फ्रॉड आदि। एक बात ध्यान रखने योग्य है कि साइबर वर्ल्ड में अपराध करने के तरीके हर रोज बदल सकते हैं लेकिन अपराध करने के मुख्यतः तीन कारण ही होते हैं-

1. मौद्रिक लाभ हासिल करना
2. किसी का डेटा चुराना
3. किसी की ख्याति खराब करना या बरबाद करना।

विश्व में हुए कुछ प्रमुख साइबर हमले के उदाहरण:

1. वानाक्राइ रैनसमवेयर हमला (2017): यह एक वैश्विक रैनसमवेयर हमला था जिसने 150 से अधिक देशों में 200,000 से अधिक कंप्यूटरों को प्रभावित किया। हमलावरों ने पीड़ितों से बिटकॉइन में पैसे की मांग की ताकि वे अपने डेटा को वापस पा सकें। हमला विंडोज ऑपरेटिंग सिस्टम की एक कमजोरी का फायदा उठाकर फैलता था जिसे MS17-010 कहा जाता है।

   वानाक्राइ हमले के प्रभाव: हमले के कारण अनुमानित 4 अरब डॉलर का आर्थिक नुकसान हुआ। कई व्यवसायों और संगठनों को अपने संचालन को रोकना पड़ा या धीमा करना पड़ा। कुछ देशों में स्वास्थ्य सेवाएं प्रभावित हुईं और अस्पतालों को अपने संचालन को रोकना पड़ा।

2. एक्वीफैक्स डेटा ब्रीच (2017): एक्वीफैक्स डेटा ब्रीच एक बड़ा डेटा उल्लंघन था जो 2017 में हुआ था। यह उल्लंघन एक्वीफैक्स नामक एक क्रेडिट रिपोर्टिंग एजेंसी में हुआ था, जिसने 147 मिलियन से अधिक लोगों की व्यक्तिगत जानकारी को खतरे में डाल दिया।

   एक्वीफैक्स डेटा ब्रीच के प्रभाव: व्यक्तिगत जानकारी का दुरुपयोग हुआ जैसे कि पहचान की चोरी और वित्तीय धोखाधड़ी। एक्वीफैक्स की प्रतिष्ठा को काफी नुकसान पहुंचा और कंपनी को कई जांचों और मुकदमों का सामना करना पड़ा।

3. याहू डेटा ब्रीच (2013-2014): याहू डेटा ब्रीच एक बड़ा डेटा उल्लंघन था जो 2013 और 2014 में हुआ था। यह उल्लंघन याहू के उपयोगकर्ताओं की व्यक्तिगत जानकारी को खतरे में डाल दिया। यह उल्लंघन में पासवर्ड की सुरक्षा के लिए उपयोग किए जाने वाले हैशिंग एल्गोरिदम की कमजोरियों का फायदा उठाया गया था।

   याहू डेटा ब्रीच के प्रभाव: व्यक्तिगत जानकारी का दुरुपयोग, पासवर्ड की चोरी और याहू की प्रतिष्ठा को काफी नुकसान पहुंचा और कंपनी को कई जांचों और मुकदमों का सामना करना पड़ा।

4. स्टक्सनेट(2010): स्टक्सनेट (Stuxnet) यह एक कंप्यूटर वर्म था जिसने ईरान के परमाणु कार्यक्रम को निशाना बनाया।

5. सोनी पिक्चर्स डेटा ब्रीच (2014): यह एक बड़ा डेटा ब्रीच था जिसने सोनी पिक्चर्स के कर्मचारियों की व्यक्तिगत जानकारी और कंपनी के ईमेल को खतरे में

डाल दिया।

6. नॉटपेट्या रैनसमवेयर हमला (2017): यह एक रैनसमवेयर हमला था जिसने यूक्रेन और अन्य देशों में कई कंपनियों को प्रभावित किया।

मौजूदा दौर में प्रचलित कुछ साइबर ठगी

1. डिजिटल अरेस्ट, जिसमे आपको किसी अपराध के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है।
2. एटीएम फ्रॉड, जिनमे अपराधी आपसे ही आपके क्रेडिट कार्ड बैंक खाते आदि का नंबर हासिल कर लेता हैं।
3. आपका पुराना इंश्योरेंस कवर मैच्योर हो गया है जिसका भुगतान किया जाना है, ऐसी सूचना में बहुत ही आकर्षण ऑफर देने का स्कैम, फर्जी एंटीवायरस इंस्टॉल करने का स्कैम, फर्जी साइबर करेन्सी में निवेश से करोड़ों कमाने का लालच देकर स्कैम आदि

साइबर अपराधों से निपटने के लिए किये जाने वाले उपाय :

साइबर सुरक्षा जागरूकता अभिमान : सरकारों को विभिन्न स्तरों पर साइबर घोखाधड़ी के संबंध में साइबर सुरक्षा जागरूकता अभियान चलाने, मजबूत अद्वितीय पासवर्ड एवं सार्वजनिक वाई-फाई का उपयोग करने आदि में सावधानी बरतने की आवश्यकता है।

साइबर बीमा : ऐसी साइबर बीमा पॉलिसियाँ विकसित की जानी चाहिए जो विभिन्न व्यवसायों और उद्योगों की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप हों एवं साइबर घटनाओं से होने वाले नुकसान के खिलाफ वित्तीय कवरेज प्रदान करें।

डेटा संरक्षण कानून : डेटा को नई मुद्रा कहा जाता है, इसलिए भारत में एक सख्त डेटा सुरक्षा संरचना की आवश्यकता है। इस संदर्भ में यूरोपीय संघ का सामान्य डेटा संरक्षण विनियमन और भारत का व्यक्तिगत डेटा संरक्षण विधेयक, 2019 सही दिशा में उठाए गए कदम हैं।

साइबर फ्यूजन सेंटर- सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों के बीच वास्तविक समय में खतरे की खुफिया सूचना साझा करने की सुविधा प्रदान करने के लिए क्षेत्रीय साइबर फ्यूजन सेंटर स्थापित किये जाएँ। पूर्वानुमानित खतरा विश्लेषण के लिए उन्नत मशीन लर्निंग प्रणालियों को लागू किया जाए। बड़ी साइबर घटनाओं से निपटने के लिए त्वरित तैनाती में सक्षम एक केंद्रीकृत घटना प्रतिक्रिया दल का गठन किया जाए।

क्लाउड सुरक्षा: भारत में डिजिटल स्पेस को संरक्षित करना, सभी क्लाउड सेवा प्रदाताओं के लिए कठोर अनुपालन आवश्यकताओं के साथ एक राष्ट्रीय क्लाउड सुरक्षा ढांचा स्थापित किया जाए। क्लाउड में संग्रहित सभी डेटा के लिए अनिवार्य एन्क्रिप्शन लागू किया जाए, ताकि वैसी कमजोरियों को दूर किया जा सके जो कि एयर इंडिया डेटा उल्लंघन जैसे मामले में उजागर हुई थीं। सार्वजनिक क्लाउड सेवाओं में खतरे की निगरानी करने और उन पर प्रतिक्रिया देने के लिए एक क्लाउड सुरक्षा परिचालन केन्द्र का सृजन किया जाए।

डीपफेक से रक्षा: भारत में संचालित सभी प्रमुख सोशल मीडिया प्लेटफार्मों के लिए संख्त के कंटेंट सत्यापन प्रोटोकॉल लागू किये जाए। चुनाव जैसे महत्वपूर्ण समय के दौरान वायरल डीपफेके की समस्या से निपटने के लिए एक त्वरित प्रतिक्रिया दल का गठन किया जाए।

साइबर योद्धा पहल: भारत को साइबर सुरक्षा पेशेवरों की गंभीर कमी को दूर करने के लिए एक व्यापक साइबर योद्धा पहल शुरू करनी चाहिए। इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालयों के साथ साझेदारी के माध्यम से विशिष्ट साइबर सुरक्षा पाठ्यक्रम विकसित करना, राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा छात्रवृत्ति कार्यक्रम की स्थापना करना और साइबर रिजर्व बिल का गठन करना शामिल हो सकता है। कर्मचारी साइबर सुरक्षा प्रशिक्षण में निवेश करने वाली कंपनियों को कर प्रोत्साहन प्रदान करने से कार्यबल को और मजबूती मिलेगी।

यदि कोइ साइबर अपराध घटित हुआ तो मुझे अपराधी के बारे में जानकारी कैसे प्राप्त होगी-

यदि कोई व्यक्ति आपको गलत तरीके से इमेल करता है या सोशल मीडिया पर आपके साथ बदसलूकी या धमकी देता है तो उस व्यक्ति के आईपी एड्रेस पर इस बात का पता लगाया जा सकता है कि वह जिस नेटवर्क का इस्तेमाल कर रहा है यह नेटवर्क किसके नाम से जारी किया गया है लेकिन, अगर कोई शातिर अपराधी जो कि तकनीक में माहिर हो वह कभी भी अपने डायरेक्ट आईपी एड्रेस का इस्तेमाल नहीं करेगा ऐसे में आप इस बात का पता नहीं लगा सकते वास्तव में आप के साथ यह घटना कैसे हो रही हैं।

'मैं साइबर अपराध को कैसे रोकूँ?

यदि आपको लगता है कि आपके साथ किसी ने साइबर अपराध किया है, तो आपको इस बारे में तुरंत निकटवर्ती थानाधिकारी से संपर्क कर संपूर्ण घटनाक्रम की जानकारी देनी चाहिए।

इससे बचने के लिए निम्न काम कर सकते है-

1. आपको अपने बैंक खातों से जुड़े ईमेल एड्रेस का इस्तेमाल किसी अन्य जगह नहीं करना चाहिए।

2. अपको अपने मोबाइल नंबर से अनावश्यक रूप से किसी वेब एप्लीकेशन या मोवाइल एप्लीकेशन से लॉगइन नहीं करना चाहिए।

3. आपके पास आने वाले अनावश्यक मैसेजेस में आए लिंक पर कोई क्लिक नहीं करना चाहिए कापको अपने मोबाइल या लैपटॉप को कोई सार्वजनिक वाईफाई से कनेक्ट नहीं करना चाहिए। ये कहता तो हम सब ने सुना होगा "अनजान फल न खाएं"।

4.आपको ओपन सोर्स वाली किसी एप्लीकेशन का सॉफ्टवेयर का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

5. आपको जहा तक हो सके अपना बैंक अकाउंट नंबर किसी के साथ तबतक शेयर नहीं करना चाहिए जब तक आप सामने वाले व्यक्ति को वास्तविक तौर पर जानते पहचानते नहीं हो।

6. अपने कंप्यूटर पर हमेशा ओरिजिनल शॉफ्टवेयर का इस्तेमाल करें।

7. अपने ब्राउज़र की समय समय पर उपडेट करे और कुकीज को क्लीयर करे।

8. सेकंड हैंड मोबाइल का इस्तेमाल करने से बचे।

साइबर हमलों से सावधान रहने के लिए शक करे और सतर्क रहे जिससे आपको फ़ायदा मिल सके

साइबर हमलों से बचाव के लिए सतर्कता के फायदे

1. जानकारी की सुरक्षा: सतर्क रहने से आप अपने व्यक्तिगत और संवेदनशील जानकारी की सुरक्षा कर सकते हैं।

2. खतरों की पहचान: सतर्क रहने से आप साइबर खतरों की

पहचान कर सकते हैं और उनसे बचाव कर सकते हैं।

3. साइबर अपराधों से बचाव: सतर्क रहने से आप साइबर अपराधों जैसे कि फ़िशिंग, मैलवेयर, और ऑनलाइन धोखाधड़ी से बचाव कर सकते हैं।

4. निजता की सुरक्षा: सतर्क रहने से आप अपनी निजता की सुरक्षा कर सकते हैं और अपने व्यक्तिगत जीवन को सुरक्षित रख सकते हैं।

साइबर क्राइम के अनगिनत ट्रिक हैं, कोइ भी चर्चा, कोइ भी संदेश, कोइ भी फोन कॉल, कोइ भी एप आपका बैंक खाता या मोबाइल वालेट खाली कर सकता है, याद रखिए आपका डाटा कॉन्टेक्ट, फोटोग्राफ आइडेंटिटी आदि की तो बात ही क्या है। कंप्यूटर और मोबाइल में ताजा अपडेट इस्तेमाल करना। हर जगह बहुत कठिन पासवर्ड रखना, किसी अनजान फाइल को डाउनलोड न करना, अंधाधुंध किसी भी लिंक पर क्लिक न करना, संदेह परख कान्टैक्ट को ब्लॉक करना, किसी को ओटीपी या दुसरी सूचना न देना, फोन में दूरसंचार कंपनी या ट्रू कॉलर आदि की पहचान बताने वाली सेवा सक्रिय करना आदि कुछ बुनियादी सावधानिया है - जानकारी जागरूकता और सतर्कता अनजान लोगों और लुभावने डरावने संदेश पर शक करना सीखिए, भले ही आप वर्चुअल दुनिया में उनके संपर्क में आए या असली दुनिया में।

साइबर सुरक्षा को मजबूत करने के लिए सरकार और निजी क्षेत्र दोनों को शामिल करते हुए एक सहयोगी दृष्टिकोण की आवश्यकता है। इसके लिए स्पष्ट विनियामक ढाँचे, बढ़ी हुई नीतिगत प्रोत्साहन और मजबूत सार्वजनिक-निजी भागीदारी पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। इसके अतिरिक्त, स्वदेशी साइबर सुरक्षा समाधानों को बढ़ावा देना, खुफिया जानकारी साझा करना और साइबर सुरक्षा कार्यबल को बेहतर बनाना भी महत्वपूर्ण है।

*****

नचिकेता-यम संवाद

संजय कुमार, डी.ई.ओ

कठोपनिषद में यम और नचिकेता का संवाद भारतीय दर्शन की एक गहन और प्रेरणादायक कथा है, जिसमें आत्मा, मृत्यु, जीवन एवं सांसारिक मोह-माया और मोक्ष के रहस्यों पर विहार किया गया है। यह संवाद कठ शाखा के कृष्ण यजुर्वेद से संबंधित उपनिषद में वर्णित है और मुक्तिमार्ग में इसे ज्ञान की प्राप्ति का एक उत्कृष्ट प्रस्तुति कहा गया है।

इस कथा के अनुसार प्राचीन काल में एक महान ऋषि हुआ करते थे जिनका नाम वाजश्रवस था। वे बहुत ज्ञानी थे। उनके एक पुत्र था जिसका नाम नचिकेता था। नचिकेता बहुत कुशाग्र बुद्धि और चंचल स्वभाव का बालक था। साथ ही साथ वह बहुत जिज्ञासु भी था। एक बार की बात थी जब महर्षि वाजश्रवस ने स्वर्ग की प्राप्ति हेतु विश्वजीत यज्ञ का आयोजन किया था जिसके पूरा होने पर उन्हें दान का कार्य संपन्न करना था। दान देते समय उन्होंने केवल बूढ़ी गायों को दान में दिया जो कि दूध नहीं देती थीं और बीमार थीं। उनके पुत्र नचिकेता को यह सब देखकर मन ही मन गुस्सा आ रहा था। उसने अपने पिता से कहा- दुग्धहीन, बूढ़ी और बीमार गायों को दान में देकर आप कैसे पुण्य प्राप्त करेंगे? महर्षि वाजश्रवस को मालूम था कि नचिकेता बार-बार वही प्रश्न पूछेगा, जैसा कि उसका स्वभाव था। जब नचिकेता को अपने पिता से कोई जवाब नहीं मिला तब उसने अपने पिता से फिर कहा- जब इन बीमार गायों को दान करने से आप को पुण्य प्राप्त होगा तो मैं अभी बालक हूँ, आप मुझे क्यों नहीं दान कर देते हैं? इससे आपको बहुत पुण्य प्राप्त होगा एवं मरणोपरांत स्वर्ग की भी प्राप्ति होगी। बार-बार पूछने से महर्षि वाजश्रवस ने क्रोधित होकर अपने पुत्र से कहा- मैं तुम्हें यमराज को दान-स्वरूप देता हूँ। चूंकि ये शब्द यज्ञ में दान के समय कहे गए थे इसलिए नचिकेता को इसे पूरा ही करना था। यद्यपि महर्षि वाजश्रवस को अपनी गलती का एहसास हुआ तो उन्हें बहुत पश्चाताप हुआ लेकिन अब दुखी होने का कोई अर्थ नहीं था। दुखबोध में ही उन्होंने नचिकेता को यमराज के पास जाने की अनुमति दी लेकिन नचिकेता बहुत ही खुश था।

अब नचिकेता यमराज के पास पहुँचा तो संयोग से वह अपने महल से बाहर थे। इस कारण नचिकेता को तीन दिवस और तीन रात्रि तक महल के बाहर ही प्रतीक्षा करनी पड़ी। पहरेदार इन सब घटनाओं को देख रहे थे। उन्हें उस छोटे से बालक पर दया आ रही थी। उन्होंने नचिकेता से आग्रह किया कि तुम अपने माता-पिता के पास वापस लौट जाओ परंतु नचिकेता टस-से-मस नहीं हुआ। वह हठी और सत्यनिष्ठ बालक था। उसने कहा- जब तक मैं महाराज यम से मिल नहीं लेता हूँ, तब तक वापस नहीं जाऊंगा।

अंततः जब तीन दिन के बाद यमराज लौटे और द्वार पर एक बालक को देखकर द्वारपालों से पूछा- यह मासूम और अबोध बालक कौन है? तब द्वारपाल ने पूरी घटना कह सुनाई। यमराज को बहुत आश्चर्य हुआ और उन्होंने प्रसन्न होकर नचिकेता को तीन वरदान मांगने को कहा। ऐसा उन्होंने अतिथि सेवा न कर पाने के लिए किया। नचिकेता ने पहला वर माँगा कि जब वह लौटे तो उसके पिता का क्रोध शांत हो और वह उसे स्वीकार करें। दूसरे वर में उसने जिज्ञासा की कि क्या देवी-देवता स्वर्ग में अजर-अमर रहते हैं तो यमराज ने उसे अग्निज्ञान दिया जिसे नचिकेताग्नि भी कहा जाता है। तीसरे वरदान में नचिकेता ने पूछा- हे यमराज, मैंने सुना है कि आत्मा अजर-अमर है। मृत्यु और जीवन के बीच चक्र चलता रहता है। परंतु आत्मा न कभी जन्म लेती है न कभी मरती है। इस जीवन और मृत्यु का क्या रहस्य है? इस प्रश्न पर यमराज चौंक गए और बोले- वत्स, यह प्रश्न मत पूछो। इसके बदले तुम अथाह धन-संपदा ले लो। लेकिन नचिकेता अपने प्रश्न पर अडिग रहा और यमराज को झुकना पड़ा।

यमराज-नचिकेता संवाद

नचिकेता: किस तरह से शरीर से ब्रह्म का ज्ञान व दर्शन होता है?

यम: मनुष्य रूपी शरीर, दो आँख, दो कान, दो नाक, एक मुख, ब्रह्मरंध्र(सिर का मध्य भाग), नाभि, गुदा और शिश्न मिलाकर कुल ग्यारह दरवाजों वाले नगर की तरह है जो कि ब्रह्मनगर ही है। वह मनुष्य के हृदय में है। इस रहस्य को समझकर जो मनुष्य ध्यान और चिंतन करता है उसे किसी प्रकार का दुख नहीं होता है ऐसा करने वाले मनुष्य को जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति मिल जाती है।

नचिकेता: क्या आत्मा मरती है या मारती है?

यम: आत्मा न मरती है, न मारती है, वह अजर-अमर है।

नचिकेता- किस हृदय में परमात्मा का वास माना जाता है?

यम: मानव हृदय को ब्रह्म पाने का वास माना जाता है। मनुष्य ही परमात्मा को पाने का अधिकारी है। उसका हृदय अंगूठे की माप का है इसलिए ब्रह्म को अंगूठे के आकार का माना गया है। अतः व्यक्ति मानता है कि दूसरे व्यक्ति में भी उसी परमात्मा का वास है और वह घृणा से दूर रहता है।

नचिकेता: आत्मा का स्वरूप क्या है?

यम : शरीर नश्वर है परंतु जीवात्मा का नाश नहीं होता है। आत्मा का सुख-दुख, भले-बुरे कोई मतलब नहीं होता है। यह अनादि, अनंत और दोष-रहित है। यह नित्य, अजन्मा एवं अविनाशी है।

नचिकेता: यदि कोई व्यक्ति आत्मा-परमात्मा के ज्ञान को नहीं जानता तो उसे कैसे फल भोगने पड़ते हैं?

यम: जिस प्रकार बारिश का पानी एक ही होता है लेकिन वह जमीन पर आने के बाद एक जगह नहीं रुकता उसी प्रकार एक ही परमात्मा से जन्मे देव, असुर और मनुष्य भी भगवान को अलग-अलग मानते हैं और पूजा करते हैं। सभी को अपने कर्मों के अनुसार फल भोगने पड़ते हैं। मनुष्य के जीवन में दो मार्ग हैं- एक श्रेय यानि कल्याण का मार्ग और दूसरा प्रेय यानि प्रिय वस्तुओं का मार्ग। ज्ञानी व्यक्ति केवल श्रेय का ही चुनाव करता है।

नचिकेता: आत्मा के प्रयाण के बाद शरीर में क्या रह जाता है?

यम: जब आत्मा निकल जाता है उसके साथ प्राण और इंद्रिय ज्ञान भी निकल जाता है। 'एतद्विदित्वा मुनयो मोदन्ते' किन्तु मनुष्य शरीर में पारब्रह्म रह जाता है जो हर चेतन और जड़ में विद्यमान है।

नचिकेता: मृत्यु के बाद आत्मा को क्यों और कौन सी योनियाँ प्राप्त होती हैं?

यम: अच्छे-बुरे कार्यों, शास्त्र, गुरु, संगति, शिक्षा और गुण के आधार पर पाप-पुण्य तय हैं। इन्हीं आधारों पर मनुष्य या अन्य योनियों में जन्म मिलता है। जो मनुष्य पापों में लीन रहते हैं तो उसे कीड़े-मकोड़े या अन्य जीव-जंतुओं में जन्म मिलता है।

नचिकेता: आत्मज्ञान और परमात्मा का स्वरूप क्या है? इस प्रश्न के उत्तर में यमराज ने नचिकेता को 'ॐ' के प्रतीक के रूप में ब्रह्म-स्वरूप बताया। साथ ही बताया कि अविनाशी प्रणव यानि 'ॐकार' ही परमात्मा का स्वरूप है। यह परमात्मा को पाने के आश्रयों में सर्वश्रेष्ठ एवं अंतिम है। सभी वेदों में यही रहस्य है। जगत में परमात्मा के इस नाम व स्वरूप की शरण लेना ही सही उपाय है।

नचिकेता को मोक्ष की प्राप्ति

नचिकेता जो आत्मज्ञान के लिए जिज्ञासु और दृढ़ था उसने यमराज के उपदेश को भलीभाँति आत्मसात किया। अंततः उसे ब्रह्मविद्या का बोध हुआ और उसने मृत्यु से परे सत्य को जाना। नचिकेता द्वारा प्राप्त ज्ञान आज भी प्रासंगिक है। सत्य सदैव ही प्रासंगिक होता है और पूरा ब्रह्मांड उसी पर आधारित होता है। एक भारतीय कवि डॉ. कुमार विश्वास ने अपनी एक कविता 'है नमन उनको' में नचिकेता के बारे में लिखा है-

'कि नर्क में तुम पूछना अपने बुजुर्गों से कभी,/ उनके माथे पर हमारी ठोकरों का ही बयां है

सिंह के दांतों से गिनती सीखने वालों के आगे/ शीश देने की कला में क्या अजब है क्या नया है

जूझना यमराज से आदत पुरानी है हमारी/उत्तरों की खोज में फिर एक नचिकेता गया है।

*****

बेरोजगारी- एक अभिशाप

शिवम सिन्हा, आशुलिपिक

आज हमारे देश में बेरोजगारी बहुत बड़ी समस्या बन गई है। जिस देश में बेरोजगारी इतनी बढ़ जाए तो वो देश उतनी उन्नति नहीं कर सकता। सरकार को युवाओं के लिए अवसर प्रदान करने चाहिए ताकि वे अपना सुंदर भविष्य बना सकें लेकिन देश में बेरोजगारी इतनी बढ़ गयी है कि बहुत लोगों के पास करने के लिए एक नौकरी तक नहीं है। अगर देश में लोग इतने अधिक होंगे तो जाहिर तौर पर सभी को नौकरी मिलना मुश्किल है। छोटी नौकरी भी समाप्त हो रही है। बेरोजगारी गरीबी को अधिक बढ़ा रही है। जब प्राकृतिक आपदाएं आती हैं तो सबसे अधिक गरीब लोग प्रभावित होते हैं। गरीबों को बचाने वाला कोई नहीं होता है। कुछ लोग हैं जो गरीबों की स्थिति में सुधार लाने के लिए उन्हें संस्थाओं के माध्यम से मदद करते हैं पर कुछ जगहों पर गरीब बच्चों के लिए निःशुल्क शिक्षा दी जा रही है। हाँलाकि यह सभी गरीबों को प्राप्त नहीं हो पा रही है। गरीबी रेखा से नीचे जीने वाले लोगों की हालत दयनीय है।

आजकल जीवन की हर चीज महंगी हो गई है और इन्हें खरीदने के लिए पैसे की जरूरत होती है। यदि हमारे पास पर्याप्त धन नहीं होता तो हमारी स्थिति कैसी होती इसका अनुमान लगाना भी मुश्किल है। धन, जीवन में महत्वपूर्ण है लेकिन इसे समझदारी से इस्तेमाल करना भी जरूरी है। सरकारी आंकड़ों के हिसाब से देश में आधे से अधिक नागरिक गरीबी रेखा से नीचे हैं, गरीबी की मार से परेशान लोगों को जब रोजगार प्राप्त नहीं होता है तो वे गैर-कानूनी कार्यों में लिप्त हो जाते हैं। गैर-कानूनी कार्य जैसे डकैती, लूटपाट, हत्या और अपहरण जैसे जुर्म करते हैं। कुछ लोग नशीले पदार्थों का सेवन करते हैं जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होते हैं। सरकार को इससे निपटने के लिए योजनाएं बनानी चाहिए जिससे गरीबों के पास धन आ सके और वे सुखी जीवन बिता सकें। धन के बिना व्यक्ति का जीवन बहुत कठिन हो जाता है। यदि किसी के पास पर्याप्त धन नहीं है, तो उसे जीवन की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने में परेशानी होती है। धन से हमें रोजमर्रा की चीजें खरीदने की सुविधा मिलती है जैसे अच्छा भोजन, अच्छी शिक्षा और एक आरामदायक जीवन। अगर हमारे पास धन होगा तो हम अपनी और अपने परिवार की आवश्यकताओं को अच्छे से पूरा कर पाएंगे।

धन का महत्व सिर्फ इसलिए नहीं है कि यह हमें भौतिक वस्तुएं देता है, बल्कि यह हमारे जीवन को आरामदायक और सुखमय बनाने में भी मदद करता है। जब हमारे पास पर्याप्त धन होता है, तो हम अपने जीवन को अच्छे तरीके से जी सकते हैं। जैसे बेहतर शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं, अच्छा स्वास्थ्य बनाए रख सकते हैं और जीवन में सुविधाएं और सुख पा सकते हैं। हालांकि, धन का केवल बाहरी दुनिया में ही महत्व है, प्यार, समय और सच्चे रिश्ते पैसे से नहीं खरीदे जा सकते। इन चीजों का हमारे जीवन में असली महत्व है। धन का केवल बाहरी जरूरतों को पूरा करने में ही योगदान होता है। इसलिए, धन और प्यार की तुलना नहीं की जा सकती। एक सफल जीवन जीने के लिए हमें धन और प्यार दोनों की जरूरत होती है।

आजकल, हमारे समाज में जीवन बहुत प्रतिस्पर्धी हो गया है। हर व्यक्ति चाहता है कि वह एक अच्छी नौकरी प्राप्त करे और अधिक धन कमाए। इसके लिए लोग अच्छे कॉलेजों से उच्च शिक्षा प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। इस प्रतियोगी दुनिया में, धन कमाने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। हर व्यक्ति अपने परिवार के सभी सदस्यों की जरूरतें पूरी करना चाहता है, और इसके लिए उसे अधिक धन की आवश्यकता होती है। खासकर उन परिवारों में जहां एक ही कमाने वाला सदस्य होता है, वहां धन की अधिक आवश्यकता होती है। परिवार के सभी सदस्यों को खाना, पहनना और अच्छे से रहना चाहिए और इसके लिए धन का होना

जरूरी है। समाज में अमीर लोग हमेशा सम्मानित होते हैं जबकि गरीब लोग अपना जीवन केवल दो वक्त का भोजन जुटाने में ही बिताते हैं। यह अंतर केवल धन के कारण होता है। धन के बिना जीवन बहुत कठिन हो सकता है। अगर किसी के पास पर्याप्त धन नहीं है, तो उसे हर कदम पर संघर्ष करना पड़ता है। यह संघर्ष उसके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर भी असर डाल सकता है। इस प्रकार, धन न केवल हमारी शारीरिक जरूरतों को पूरा करता है, बल्कि यह हमारे मानसिक सुख और संतुष्टि के लिए भी जरूरी है। धन भले ही हमें सुख, सम्मान और मानसिक शांति दे सकता है, लेकिन यह कभी भी सच्चे प्यार, देखभाल और रिश्तों की जगह नहीं ले सकता।

यह सत्य है कि धन और प्यार दोनों की जरूरत होती है लेकिन अगर एक को चुना जाए, तो प्यार और रिश्ते कहीं अधिक महत्वपूर्ण होते हैं। धन हमें जीवन में सुख-सुविधाएं प्रदान करता है, लेकिन यह हमारे जीवन के भावनात्मक पहलू को पूरा नहीं कर सकता। धन का उद्देश्य केवल भौतिक सुख-सुविधाएं प्राप्त करना नहीं होना चाहिए। हमें इसे समाज की भलाई के लिए और अधिक महत्वपूर्ण कार्यों के लिए भी इस्तेमाल करना चाहिए। यही कारण है कि हमें धन कमाने के साथ-साथ इसे सही तरीके से इस्तेमाल करने की कला भी सीखनी चाहिए। समाज में अमीर और गरीब के बीच का फर्क केवल धन के कारण होता है। यह फर्क समाप्त किया जा सकता है, अगर हम एक-दूसरे के साथ प्यार, सम्मान और मदद से पेश आएं। वह घर जहां धन की कमी होती है, वहां अकसर झगड़े होते रहते हैं। पति-पत्नी में तनाव, लड़ाई-झगड़े और समझौतों की कमी होती है। जब धन की कमी होती है तो परिवार के सदस्य एक-दूसरे से सम्मान से पेश नहीं आते। रिश्तेदार और पड़ोसी भी गरीब व्यक्ति से दूर रहने की कोशिश करते हैं क्योंकि वे डरते हैं कि कहीं वह व्यक्ति उनसे धन न मांग ले।

आजकल तो स्थिति यह हो गई है कि कई लोग गरीबों से दोस्ती तक नहीं करना चाहते। समाज में यह धारणा बन गई है कि गरीब व्यक्ति से दोस्ती करने का कोई फायदा नहीं है क्योंकि वह व्यक्ति अपने आर्थिक संकट के कारण किसी से भी मदद मांग सकता है। इस तरह, धन न केवल परिवारों में बल्कि समाज में भी रिश्तों में दरार डालने का कारण बन सकता है। धन जीवन का एक अहम हिस्सा है, लेकिन यह हमारी भावनात्मक और मानसिक जरूरतों को पूरा नहीं कर सकता। यह हमें बाहरी सुख-सुविधाएं देता है, जैसे अच्छा स्वास्थ्य, अच्छा खाना, शिक्षा और एक अच्छा जीवन। इसके अलावा, धन हमें शारीरिक और मानसिक शांति भी प्रदान करता है, जिससे हमें जीवन की कठिनाइयों का सामना करने की ताकत मिलती है। हालांकि, हमें यह समझना चाहिए कि धन केवल बाहरी चीजों को पूरा करने के लिए है। प्यार, समय और सच्चे रिश्ते जीवन का असली सार हैं। हमें धन कमाने के साथ-साथ अपने रिश्तों और भावनाओं का भी ख्याल रखना चाहिए। जीवन में संतुलन बनाए रखना जरूरी है। धन का महत्व है, लेकिन इसका सही उपयोग और समझदारी से खर्च करना कहीं अधिक जरूरी है।

धन हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, लेकिन यह हमें सब कुछ नहीं दे सकता। पैसे से हम बाहरी जरूरतों को पूरा कर सकते हैं, जैसे खाने-पीने, पहनने, और रहने की सुविधा लेकिन यह समय, सच्चा प्यार या देखभाल जैसी चीजें नहीं खरीद सकता। भारत देश के नागरिकों को धन की अभिलाषा है तो देश में गरीबी को दूर करने के लिए उन्हें शिक्षित करना ज़रूरी है। लोगो को सही दिशा में शिक्षित करना चाहिए ताकि उन्हें रोजगार के अवसर मिले। देश की कभी ना ख़त्म होने वाली महंगाई भी गरीबी का कारण है। सरकारें आईं और गईं मगर महंगाई वहीं खड़ी है। प्रति वर्ष डीजल, पेट्रोल के दाम बढ़ रहे है और सभी छोटे बड़े चीज़ों के दाम निरंतर बढ़ रहे हैं। सरकार इस पर नियंत्रण नहीं कर पा रही है। यह भी गरीबी का एक कारण है। गरीब मज़दूरों और किसानों के पास इतनी आमदनी नहीं होती कि वह इस महंगाई की मार को सहन कर सके। गरीबी एक ऐसी दर्दनाक स्थिति है जहाँ मनुष्य हर चीज़ के लिए बेबस और लाचार होता है। वह संसार की तीन ज़रूरी चीजों को पाने में असमर्थ है। वह है खाना, वस्त्र और मकान। पूरा दिन मज़दूरी करने के बाद भी भरपेट खाना उन्हें नहीं मिलता है। तेज़ धूप और तेज़ बारिश से बचने के लिए उनके पास एक छत नहीं होती है। सर्दी के दिनों में उन्हें तन ढकने के लिए कपड़े तक नसीब नहीं होते हैं।

गरीबों का परिवार अपने बच्चो को शिक्षा नहीं दिलवा पाता है। शिक्षा की कमी के कारण उनका मानसिक विकास नहीं होता है। उनके सोचने समझने की कोई शक्ति नहीं होती है। पर्याप्त भोजन ना मिलने के कारण उनका शारीरिक विकास नहीं हो पाता है।

हर रोज बढ़ती हुई देश की जनसंख्या 'गरीबी' बढ़ाने का प्रमुख कारण है। सरकार के पास इतनी योजनाएं नहीं है कि वह देश के सभी लोगों को मकान, खाना और शिक्षा जैसी चीज़ें प्रदान कर सके। जितनी जनसंख्या अधिक होगी, सभी प्रकार की सुविधाओं और संसाधनों में कमी आएगी। जनसंख्या वृद्धि की वजह से जो लोग गरीब या उससे भी निचले स्तर पर जी रहे हैं, उनके लिए ज़िन्दगी नरक से कम नहीं होती है। सरकार गरीबी को मिटाने की पूरी कोशिश कर रही है, मगर अभी भी बहुत कुछ करना बाकी है। गरीबी, देश की उन्नति में बहुत बड़ी बाधा है। गरीबी को मिटाने में कोई भी लोकप्रिय सरकार सफल नहीं हो पायी है। सरकार ने बच्चों को मुफ्त शिक्षा, गैस की सुविधा इत्यादि कार्य करने का प्रयास किया है लेकिन अभी भी हज़ारों चीज़ें करनी बाकी है।

*****

"भारत के बारे में वास्तविक ज्ञान प्राप्त करने के लिए हिंदी भाषा और साहित्य का अध्ययन अनिवार्य है।"

- प्रो0 मैकग्रेगर

मायका

राकेश भारती, वरिष्ठ अनुवादक

सत्तर साल की बूढ़ी दादी कंपकपाते हाथों से छड़ी संभालते हुए अपने मायके पहुँचकर रिक्शे से उतरीं। मायके आने की खुशी उनके चेहरे पर स्पष्ट दिखाई दे रही थी। कितने दिनों बाद वे अपने मायके आ रही थीं, उन्हें जैसे भूल गया हो लेकिन जब उन्होंने मायके में कदम रखा तो लगा कि जैसे यह कल की बात है। दरवाजे पर उन्होंने देखा- भतीजे के बच्चे आपस में खेल रहे थे, उन्हें देखकर दादी के चेहरे पर मुस्कान आ गई। बच्चे, बूढ़ों के लिए सहज आकर्षण सृजित करते हैं। वो मुस्कुराती हुई आगे बढ़ी। बच्चे उन्हें देखते ही खुशी से चिल्लाते हुए अन्दर भागे- बुआ दादी आ गई, बुआ दादी आ गई। बच्चों की आवाज सुनकर घर की बहुओं का चेहरा उतर गया। उनके चेहरे पर खुशी के बदले गुस्से के भाव दिखने लगे। बच्चों को बूढ़े जितने प्रिय होते हैं, बड़ों के लिए सामान्यतः उतने ही अप्रिय होते हैं। बूढ़ी दादी इसका अपवाद नहीं थीं। उनके आने से मायके का सारा माहौल जैसे कड़वा हो गया। बड़े भतीजे की बहू ने आवेश में कहा- इनको इस उम्र में भी मायके आने की लालसा खत्म नहीं होती। जब देखो तब आ जाती है मुँह उठाकर। ये खुद भी परेशान होती हैं और दूसरों को भी चैन से नहीं रहने देंगी। बड़ी की बातें सुनकर छोटी बहु भी बड़बड़ाने लगी- बेवजह आ जाती हैं परेशान करने। सत्तर साल की हो चुकी हैं, अब इस उम्र में भी इनको अपने घर में रहा नहीं जाता। क्या जरूरत है बेवजह यहाँ-वहाँ भटकने की। इन्हें तो अब एक जगह स्थिर रहकर आराम करना चाहिए। फिर भी देखो घूमने चली आई हैं।

ऐसा लग रहा था कि एक बूढ़े के प्रति आक्रोश का यह भाव बढ़ता ही जा रहा था। बूढ़ी दादी की भाभी यानि बहुओं की सास ने भी गुस्से में झल्लाते हुए कहा- अब महीनों पड़ी रहेंगी यहाँ। आती हैं तो जाने का नाम भी नहीं लेती हैं। बैठे-बैठे बातें बनाएंगी और ऊपर से तरह-तरह के आर्डर देती रहेंगी- ये बनाओ, वो बनाओ, ये अच्छा नहीं है तो वो अच्छा नहीं है। बहुओं की सास अपने बहुओं को सख्त हिदायत देते हुई बोली- इस बार कुछ अलग नहीं बनाना, जो सबके लिए बनेगा, वही खाना उन्हें भी देना फिर खाएं या न खाएं, और हाँ बच्चों को भी उनसे दूर ही रखना, भर दिन खाँसती रहती हैं, पता नहीं क्या रोग हो? उनका बिस्तर भी सबसे अलग बाहर बरामदे वाले कमरे में लगा देना।

बूढ़ी दादी जो दो साल बाद मायके आई थीं और वो खुशी से मुस्कुराते हुए घर के अन्दर आ ही रही थीं कि भाभी और उसकी बहुओं की बातें सुनते ही ठिठक कर रुक गईं, पाँव जैसे जमीन से चिपक गए हों। उन्हें समझ में ही नहीं आ रहा था कि क्या करें? जब अपने ही इस संसार में घातक दुख का कारण बनते हैं तो व्यक्ति का धीरज कचोट कर रह जाता है। क्या यह वही घर है, वही धरती है, जहां उन्होंने जन्म लिया था? बूढ़ी दादी को यकीन नहीं हो रहा था कि इसी घर में उनका खुशनुमा बालपन बीता था, जहां माँ-बाप का ढेर सारा प्यार उन्हें मिलता था। इसी भाई के साथ उनकी सैकड़ों यादें थीं। आज इस दुत्कार से उनकी हिम्मत ही नहीं हो रही थी कि वो आगे बढ़ें। उनकी आंखें भर आई। मायके आने की सारी खुशी गायब हो गई थी। उन्हें लगा जैसे पल भर में उनका वजूद दो कौड़ी का हो गया हो। वो अतीत की बातों को याद कर उसमें खोती चली गईं।

इसी घर में उनका सुख-दुखभरा बचपन बीता जिसमें हजारों बहुरंगी सपने थे। वही घर, वही आँगन था जहाँ उनके आने का इंतजार सबको रहता था। कितनी बार तो माँ, भाई को भेजती थी ससुराल से मुझे लिवा लाने को और जब मैं आती तो सब कितने खुश हो जाते थे। घर का माहौल ही बदल जाता था। मेरे आते ही माँ अपने गले से लगा लेती थीं और सभी भाई-बहन मुझसे आकर लिपट जाते थे। माँ प्यार से डाँटकर कहती- यह भी तुम्हारा ही घर है, हम सभी तुम्हारे अपने हैं। इसलिए जल्दी-जल्दी आया कर, ससुराल जाकर तो तू भूल ही जाती है सबको। लगे हाथ भाई-बहन भी शिकायत करने लग जाते थे- हाँ, दीदी, हमारा भी मन नहीं लगता है आपके बिना। इस बार आपको जल्दी नहीं जाने देंगे। वह हँस कर सबकी बातों का जवाब देतीं। माँ तरह-तरह के पकवान बनाने में जुट जाती थी, कभी ये खिलाती तो कभी वो खिलाती। कैसे खुशियों भरे दिन हुआ करते थे! एक-दो महीने तो ऐसे ही बीत जाते थे। जब वो ससुराल जाने लगतीं तो दो दिन पहले से ही भाई-बहन का चेहरा उतर जाता था। घर के सभी सदस्य उदास हो जाते थे। माँ रसोईघर में छुप-छुप कर रोया करती थी, पिताजी कुछ बोल तो नहीं पाते थे परंतु वो भी मन ही मन उदास हो जाते थे। जाने से पहले ही आने के दिन भी तय हो जाया करते थे। फिर वो सबसे विदा लेकर रोती-बिलखती ससुराल चली जाती थी। जिस दिन वो ससुराल जाती थी, उस दिन घर में मातम छा जाता था।

उन दिनों की सभी बातें आज एक-एक कर याद आ रही थीं। तब ये घर, ये आँगन, माँ-पिताजी, उनका प्यार, भाई-बहन, सहेलियाँ और बचपन का खेल, वो शरारतें और इन सब के निश्चिंत मन हुआ करता था जहां न कल की चिन्ता थी और न ही आज की परवाह। बचपन से जवानी तक भाई-बहन के साथ का वो सफर। यही घर, यही दहलीज तब भी थी, जब उसके आने की बाट महीनों से जोही जाती थी। जब मायके आए हुए कुछ महीने हो जाते थे तो माँ वहाँ से आने-जाने वालों लोगों से संदेश भी भिजवाया करती थी। कितनी फिक्र थी उसे! वो मन ही मन सोच रही थी कि यही घर यही दहलीज आज भी है, लेकिन कितना बड़ा फर्क आ गया है आज और बीते कल में।

बूढ़ी दादी सोच-विचार में ही डूबी हुई थीं कि लोग यह क्यों भूल जाते हैं कि मायका एक लड़की, एक स्त्री के लिए जीवन का वह महत्वपूर्ण हिस्सा है, वह छाँव है, जहाँ आकर वो अपना ठिकाना पाती है। मायका समय के साथ दूर भले हो जाता है, मगर उसकी खुशबू हमेशा एक स्त्री के दिल में बसती है। फिर उसे उम्र से क्या लेना

देना। हर उम्र में स्त्रियों को अपने मायके से, उस गाँव से, गलियों से और वहाँ के लोगों से प्यार और लगाव रहता है। चाहे वह सत्तर की हो या सत्रह की इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मायके आने के बाद वो अपनी सारी दुख तकलीफ भूल कर सिर्फ एक नवयौवना रह जाती है, जैसा कि वह जब गाँव को छोड़कर गई थी। मगर इतना सुंदर आश्रय उससे क्यूँ छीन लिया जाता है और मायका केवल कहने भर का रह जाता है?

याद आया कि माँ उसे विशेषतः सावन में बुलाती थी क्यूंकि बेटियों को सावन में बुलाना ये उस गाँव रिवाज भी था। उसकी सारी सहेलियाँ भी आती थीं। तब वो मायके आकर और सहेलियों का साथ पाकर चंचल हिरणी बन जाती थी। उसे ससुराल का तनिक भी ख्याल नहीं रहता था। दिन भर घूमना-फिरना तथा सहेलियों के संग बातें करना यही दिनचर्या हुआ करता था उन दिनों, और आज भी सावन में वो पुराने दिन को याद करके ही आयी थी कि चलो सबसे भेंट-मुलाकात कर लिया जाए। लेकिन यहाँ तो कुछ और ही देखने-सुनने को मिला। दिल की बातें दिल में ही रह गईं।

दादी का मन सभी की बातों से काफी व्यथित हो गया था, वह पलट कर वापस जाने ही वाली थी कि उन्हें अपने भाई की खुशियों भरी आवाज सुनाई दी- दीदी! आप कब आईं? और दरवाजे पर क्यूँ खड़ी हैं, अन्दर आइए न। भाई ने आगे बढ़कर सहारा दिया। दादी सबकुछ भूलकर भाई का हाथ पकड़ कर धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगीं। चलते-चलते उन्हें बीते कल की कुछ और बातें याद आ गईं। भाई दादी को आंगन में खाट पर बिठा कर सभी को आवाज देने लगे नाश्ता-पानी लाने के लिए और खुद दादी के पास बैठकर बातें करने लगे। इतने में नाश्ता आ गया। दादी नाश्ता कर आराम करने चली गईं। रात में खाना खाने के बाद, भाई ने कहा- अच्छा हुआ दीदी, आप आ गई तो। आपके आने से ऐसा लग रहा है हम पुराने दिनों में लौट आए हैं। देखिए बहुत दिनों बाद आई हैं आप, इसलिए जल्दी नहीं जाने देंगे हम आपको। आप यहाँ आराम से जब तक मन करे रहिए। ये बातें सुनकर दादी का चेहरा उतर गया। कुछ देर पहले की बातें याद आ गई। मगर वह कुछ नहीं बोलीं। फिर उन्हें भाई के प्यार की परवाह भी तो थी।

इधर भाभी और बहुओं के कान भी खड़े हो गए थे कि कहीं बुढ़िया महीने भर रहने की बात न बोल दे। दादी पहले तो कुछ दिन रहने का सोच कर तो आई थीं, क्यूंकि बगल के गाँव में उनकी छोटी बहन भी रहती थी। उससे भी उन्हें मिलना था, लेकिन अब उन्होंने अपना इरादा बदल लिया और कहा- नहीं, सुबह ही मैं निकल जाऊंगी। भाभी और बहुओं ने दादी की सुबह जाने की बात सुनकर राहत की सांस ली और खुश हो गईं कि चलो इस बार तो ये बला जल्दी ही टल जाएगी। मगर दादी की अगली सुबह ही चले जाने की बातें सुनकर भाई दुखी हो गए। उन्होनें कई बार दादी से कुछ दिन रुकने का अनुरोध किया। मगर दादी कुछ देर पहले वाले वाकये को याद कर अपने फैसले पर अड़ी रहीं। पुराने रिश्तों का मोल उस चांदी के जैसा हो गया था जो दिन-प्रतिदिन अपनी चमक खोती ही जा रही थी।

सुबह नाश्ते के बाद भाभी जल्दी से साड़ी ले आई थी दादी को पहनाने के लिए, उन्हें डर था कि कहीं भाई की बातों को सुनकर बुढ़िया अपना इरादा न बदल ले। भतीजा कहीं से एक रिक्शा ले आया था। साड़ी देखकर दादी को एक बार फिर से माँ की याद आ गई। आज साड़ी लाई गई थी तो उन्हें जल्दी यहाँ से भगाने के लिए और उन दिनों माँ साड़ी छिपाती फिरती थी बेटी को एक दिन और रोकने के लिए। वो कपड़े खरीद कर भी कहती थीं कि आज कपड़े नहीं खरीद पाए, कल कपड़े खरीदेंगे तब बिटिया की विदाई होगी। बूढ़ी दादी ने आंसू छिपाते हुए भाभी के हाथ से साड़ी लेकर पहन ली और फिर सभी से विदा लेकर बाहर निकल गईं। ऐसा लग रहा था जैसे पहाड़ सा भार उनके सर से उतर गया हो। फिर भी अपनों से दूर रहने का दुख तो था ही। अपमान की भावना मधुर से मधुर रिश्ते को दीमक की तरह खा जाती है। ऐसा ही आज उनके साथ हुआ जब माँ-बाप नहीं रहे।

रिक्शे में बैठने से पहले बूढ़ी दादी ने सब पर एक नजर डाली। फिर देखने लगीं उस घर को, दरवाजे को, गाँव को, गलियों को और दरवाजे पर कई दशकों से खड़े उस पेड़ को जिसके छाँव तले खेल

कर उनका सारा बचपन बीता था। दादी सबसे नजर बचाकर दरवाजे पर की एक मुट्ठी मिट्टी उठा कर आँखों से लगाकर देखने लगीं। उस मिट्टी में उन्हें अपने माँ-बाप की परछाई दिख रही थी। अपने भाई-बहनों के नन्हें पैरों की छाप दिख रही थी, जहां वो आगे-आगे दौड़ रही थीं और पीछे से भाई-बहन उन्हें पकड़ने के लिए भाग रहे थे।

इसी दरम्यान उनकी आंखों से आंसू की दो बूंदे गिरकर हथेली की मिट्टी में समा गईं। जैसे आंसू भी आत्मसात कर रही हो बीते दिनों के पल को। दादी को ध्यान आया तो चौंक कर आंसू पोछने लगीं और मिट्टी को आंचल में बांध कर रिक्शे में बैठ गईं। रिक्शा वाला उन्हें लेकर गंतव्य की ओर चल पड़ा।

धीरे-धीरे सब छूटने लगे थे, भाई, मायका, गाँव-घर सब कुछ। दादी सोचने लगीं- दुनिया के लिए भले ही वो सत्तर साल की हो गई हैं और अब उनका मायके आने का कोई औचित्य नहीं बनता, लेकिन वो ये क्यूँ भूल जाते हैं कि मायका एक स्त्री के लिए कभी अतीत नहीं होता बल्कि उसका आधार होता है। मायका स्त्री के लिए एक आरामगाह होता है, जहां वो दुनिया से थककर कुछ देर सुस्ताने चली आती है। मायका सुनहरी यादों का एक खूबसुरत एहसास होता है, जिसे उम्र से कोई लेना देना नहीं होता है। मायका एक छाँव होती है, खुशबू होती है और स्त्री के अस्तित्व और आत्मा का पहला ठिकाना होता है। उसके वजूद का निर्माण स्थल होता है जिसे याद करके ही वो सबसे मिलने, अपने निर्माण स्थल को देखने आती है। फिर क्यूँ लोग उसे उम्र से जोड़कर अतीत की बेकार वस्तु और बेकार बातें बना देते हैं। मायका तो बस मायका होता है।

रिक्शा गाँव के अंतिम छोर को पार कर रहा था। दादी ने अंतिम बार उन राहों को देखा, जहाँ वो कभी दिन में कई बार आती-जाती थीं और अब वहाँ वर्षों बाद आना भी गवारा नहीं होता लोगों को। ऐसा लग रहा था कि आज सचमुच एक बेटी हमेशा के लिए अपने गाँव, अपने स्नेही लोगों के लिए परायी हो गई थी। दादी की आंखे एक बार फिर भर आईं। रुख फेर कर दादी अपने गंतव्य की ओर जाने वाली सड़क को देखने लगीं। रिक्शा पूरी गति से अपने गंतव्य की ओर चला जा रहा था।

*****

भरोसा

अमित कुमार, वरिष्ठ लेखाकार

सच कहूँ तो भरोसा शब्द, तीन अक्षरों से बना एक ऐसा शब्र है जिसमें जीवन का आरंभ और अंत दोनों ही समाहित होता है। यह जीवन का एक मूल मंत्र है जिसे हमलोग जानते हुए भी कहीं न कहीं नजरअंदाज करते रहते हैं। इसी से संबंधित कुछ प्रसंग याद आ रहा है जिसे मैं अपने शब्दों में आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ। मैं बिहार के सुदूर क्षेत्र के एक शहर का रहने वाला हूँ। मेरी प्रारंभिक शिक्षा हिंदी माध्यतम से बिहार के सरकारी स्कूसल में प्रारंभ हुई जहां से हमें ज्ञान अर्जित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वहाँ से मेरे जीवन का एक नया अध्याय आरंभ हो रहा था। स्कूल में वैसे तो बहुत कम सुविधाएं थीं परंतु जो कुछ भी था वही मेरे लिए बहुत हुआ करता था क्योंकि जीवन की कुछ गाथाएं ऐसी हैं जिसे मैं आज भी अपने दिल में सजों कर रखा हूँ। वहीं से मुझे प्रेरणा का स्रोत मिलता रहता है। आज चाहे मैं जिस भी मुकाम को हासिल कर लूँ परंतु वे जीवन के कुछ पल जो हमे अंधकार से प्रकाश की ओर ले आए हैं, वे सुनहरे पल मेरी ताकत और उर्जा का मुख्य केंद्र हैं जो मुझे अपने जीवन के प्रारंभ से अंत तक मान-मर्यादा और सम्मान को बरकरार रखने में मेरी मदद करते रहेंगे।

'भरोसे' के बारे में मुझे कुछ भी पता नहीं हुआ करता था। मुझे इसी 'भरोसे' से समय-समय पर कुछ न कुछ सीखने का अवसर मिलता रहता था। आज मुझे ये तो याद नहीं है कि मुझे किसने 'भरोसा' शब्द के शाब्दिक अर्थ को समझाया या बतलाया था परंतु इस 'भरोसे' का एहसास तो आज भी होता है। मैं जब छोटा था तो उस समय मुझे पढ़ाई–लिखाई में मन नहीं लगता था। मैं दिन-रात खेलने-कूदने में लगा रहता था, मानों मेरा जीवन तो सिर्फ और सिर्फ खेलकूद के लिए ही बना हो। यह सब देखकर मेरे पिताजी को मुझपर बहुत गुस्सा आता था। वे सोचते रहते कि मेरा पुत्र कैसा है जिसका पढ़ने-लिखने में मन ही नहीं लगता, सिर्फ और सिर्फ खेलकूद में ही लगा रहता है? मेरे पिताजी सोचते रहते थे कि स्थिति ऐसी भी नहीं है कि उसे किसी प्राइवेट स्कूल में पढ़ा–लिखा सकूँ। मेरे लिए वे हमेशा चिंतित रहते थे क्योंकि नए माहौल और पढ़ाई–लिखाई के प्रति मेरी उदासीनता और सरकारी स्कूलों की शिक्षा को लेकर भी कहीं न कहीं सभी के मन में एक सवाल बना रहता है। आम धारणा ये है कि सरकारी स्कूलों में तो एजुकेशन सिस्टरम बहुत ही खराब रहता है। फिर भी मेरे पास सरकारी स्कूल में पढ़ने के अलावा और कोई उपाय भी तो नहीं रह गया था। आगे कुछ भी अंजाम हो, उसका सामना मुझे ही करना था।

इन्हीं सब मुद्दों को सोचकर मेरे पापा उस समय हमेशा टेंशन में रहा करते थे। परंतु इस बात से मुझपर कोई फर्क नहीं पड़ता था क्योंकि मुझे तो उस समय यह सब पढ़ाई-लिखाई का काम बेकार सा लगता था। परंतु फिर भी मैं कुछ कर नहीं सकता था। मुझे पिताजी जबरदस्ती स्कूल भेज ही दिया करते थे। मुझे उस समय कुछ भी पता नहीं था कि स्कूल क्यों जाना है, स्कूल जाकर मुझे क्या करना है? ये तो मैं उस समय नहीं समझता था परंतु समय पर तैयार होकर स्कूल जरूर चला जाता था। वहाँ ऐसे ही बैठकर दिन काट लिया करता था, फिर वापस घर चला आता और फिर खेलकूद के पीछे पड़ जाता था। मानो यही मेरे जीवन का मूल मंत्र बना हुआ था। बस इसी तरह से बचपन के मेरे दिन कट जाते थे। पिताजी मुझसे खुश नहीं थे लेकिन मेरी माँ को मुझसे बहुत ही प्यार और स्नेह था। मैं चाहे पढ़ाई करता या नहीं करता था, मेरी माँ मुझे बहुत सपोर्ट किया करती थी। पता नहीं मुझे ये समझ क्यों नहीं आता था, परंतु दिल को बहुत सकून मिलता था। ऐसा लगता था कि दुनिया की सारी खुशिया माँ ने मेरे लिए ला रखी हों। मैं उस समय भी इस भरोसे और प्यार को नहीं समझ सकता था। लेकिन जो कुछ होता था, बहुत ही अच्छा लगता था।

माँ के प्यार और भरोसे के बारे में सोचकर मैं भी बहुत खुश रहा करता था। परंतु न तो मैं अपने आप को, न ही मेरे पापा मुझे समझ पा रहे थे कि आखिर मैं आगे जीवन में क्या करूंगा? माँ के मुझपर भरोसे को देखकर मेरे पापा को बहुत तकलीफ होती रहती थी कि तुम तो

अपने बेटे का मन बढ़ा रही हो, वैसे भी उसे खेलकूद के अलावा और कुछ नहीं दिखाई देता और न ही वह हमारी परिस्थिति को समझ सकता है। मेरी माँ हमेशा पापा को दिलासा देती थी कि आज नहीं तो कल वह अपने आप को समझ लेगा। उसे समझ में आएगा कि जीवन जीने के लिए हमारे परिवेश में खेलकूद से कुछ नहीं होने वाला, न तो उसका कोई मूल्य है। समय पर वह इस बात को खुद ही समझ लेगा, आप बेकार में चिंता किया करते हैं। परंतु पापा की सोच तो अपनी जगह बिल्कुल ठीक थी। उन्हें भी मुझसे बहुत प्यांर था परंतु वे कभी इसे साझा नहीं किया करते थे। हालात के मारे होने के कारण वे अपने आपमें कहीं न कहीं अंदर से ही घुटते रहते थे। मुझे इस बात को उस समय कोई एहसास तक नहीं था।

धीरे-धीरे स्कूली पढ़ाई जैसे-तैसे कर चलती रही। डेली रूटीन में किसी तरह दिन काटने का काम चलता रहता था परंतु एक बात की मुझे हमेशा बहुत खुशी रहेगी कि मैं किसी क्लास में फेल नहीं हुआ। मुझे यह पता भी नहीं था कि सरकारी स्कूल की पढ़ाई की संरचना ऐसी ही थी कि उसमें कोई फेल नहीं होता था, वह आगे की क्लास में पहुँच जाता था। मुझें तो इस बात से खुशी होती थी कि मैं मेहनत के बगैर आगे बढ़ता चला जाता था। जो मेहनत मुझे करनी चाहिए थी, उस मेहनत से तो मैं बहुत कतराता रहता था, परंतु पापा के डर से पढ़ाई कर लिया करता था। परंतु क्या पढ़ता, क्या नहीं, ये भी समझ उस समय नहीं होती थी। पिताजी कुछ भी पूछते तो मैं उस सवाल का सही से जवाब भी नहीं दे सकता था। मेरी एक विशेषता बहुत अच्छी थी, जो मुझे भी पता नहीं थी कि मैं जो कुछ भी पढ़ता, जितना पढ़ता, किसी को बता नहीं सकता था परंतु मेरे मन के किसी कोने में पड़ा रहता था। उसे मैं उसे बोलने के स्थान पर लिख सकता था।

देखते-देखते समय बीतता चला गया और समय नजदीक आ गया जब स्कूली पढ़ाई पूरी हो रही थी और समय था मैट्रिक की परीक्षा का। वर्ष 2002 मुझे आज भी याद आता है, जब पापा मुझे मैट्रिक की परीक्षा के समय भी खेलकूद करते हुए पकड़े थे। उस समय बहुत मार पड़ी लेकिन मैं ढीठ का ढीठ ही रहा। मैं उस समय अपने पापा के प्यार को नहीं समझ सकता था। मेरे पापा ने तो यहाँ तक कह दिया कि ये तो मैट्रिक की परीक्षा में निश्चित फेल होगा। ये कोई स्कू ल की पढ़ाई नहीं है कि पढ़ाई की या नहीं की और पास हो जाएगा। परंतु मैं वैसे का वैसा ही था। परीक्षा के समय मैं अपने पापा के डर के मारे थोड़ी पढ़ाई-लिखाई कर लिया करता था परंतु उतना नहीं जितनी होनी चाहिए था। जब मैट्रिक की परीक्षा हुई और परीक्षा परिणाम आया तो मैं उस दिन घर के कोने मे भाग गया था क्यों कि मुझे लग रहा था कि आज भी पापा के हाथों से पिटाई होने वाली है। परंतु जब परीक्षा-परिणाम घोषित हुआ और पेपर में मेरा अनुक्रमांक मिला तो पूरे मोहल्ले में मेरे बारे में चर्चा होने लगी।

मैं मैट्रिक की परीक्षा द्वितीय श्रेणी से पास हो गया हूँ, ये बात जानकार तो पापा भी आश्चर्यचकित हो गए। उन्हें विश्वास नहीं था कि नालायक बेटा मैट्रिक की परीक्षा द्वितीय श्रेणी से पास हो गया। मैं तो घर अंदर छिपा हुआ था। जब मुझे मेरे पापा ने जोर–जोर से आवाज लगाई तो मुझे लगा कि आज वो दिन वापस आ गया है, जब फिर से पिटाई होने वाली है। यह सोचकर मैं चुपचाप से छिपा ही रहा। शोरगुल के कारण मैं ज्यादा ही डरा हुआ था। फिर भी जब मैं अपने पापा की आवाज सुनकर घर के अंदर से बाहर आया तो बहुत डर लग रहा था। मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि घर में और मोहल्ले में इतनी भीड़ क्यों लगी हुई है? मुझे उस समय इस बात का एहसास नहीं था कि मैट्रिक की परीक्षा का आगे के जीवन में बहुत बड़ा महत्व होता है। यह वो परीक्षा है जिसके पास होने के बाद कई सारे रास्ते् खुलते चले जाते हैं। सच कहूँ तो मैं इस बात को उस समय तक नहीं जानता था। परंतु वर्ष 2002 की इस मैट्रिक परीक्षा के परिणाम के बाद इसके महत्व का पता चला।

मैं तो इस बात से खुश था कि आज पापा के हाथों से मार खाने से बच गया हूँ। मेरे पापा बहुत खुश थे। आखों में खुशी के आँसू लिए जब सभी के सामने मेरे पापा ने अपने प्यार को मुझपर दर्शाया तो उस समय मुझे उसका महत्व समझ में नहीं आया, परंतु मेरे माँ के भरोसे को मैं आज भी याद करता रहता हूँ। जब माँ ने पापा को कहा था कि आप चिंता न करें, वह मैट्रिक की परीक्षा जरूर पास कर लेगा। यह बात माँ ने उस समय कही थी, जब सबको ये लगा था कि उसका बेटा दिन भर इधर-उधर खेल कूद में लगा रहा करता था। चाहे कोई भी खेल हो, सच है कि मेरा समय खेल में ही बीतता था। आज भी मैं माँ के भरोसे को याद करता रहता हूँ। मुझे लगा कि मैं पापा की खुशियों के लिए ऐसा तो कर ही सकता हूँ।

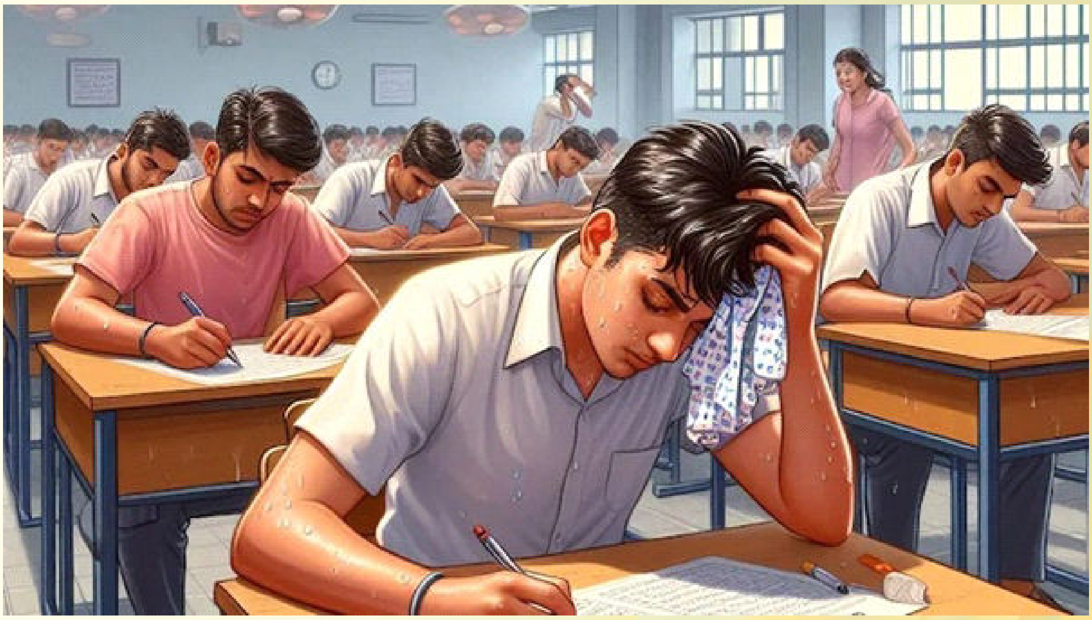

उसके बाद पापा ने आगे की पढाई के लिए कॉलेज में मेरा प्रवेश कराया और आशीर्वाद के रूप में अपना प्यार दिया। इस बात से मुझे बहुत ही खुशी मिली; मानों मेरे सामने भगवान आ गए हों। मैंने भी सोचा कि अपने पापा की खुशी के लिए कुछ न कुछ तो अच्छा कर ही सकते हैं। मैं भी अपनी पढाई-लिखाई में समय देने लगा परंतु मेरी एक परेशानी हमेशा से थी, वह मुझे परेशान करने लगी। मैं पढाई में अपना पूरा समय नहीं दे पाता था; समय होने पर भी मैं पढ़ाई को समय नहीं दे पाता था। कुछ देर के बाद पढ़ने में मेरा मन ही नहीं लगता था। इस बात को मेरे पापा ने भी समझ लिया था कि मेरा बेटा जितना समय पढ़ाई में देता है वही काफी है क्योंकि इतने पर भी मेरे बेटे का परीक्षा परिणाम अच्छा होता है। पापा उसके बाद से मुझे पढ़ने को लेकर कुछ नहीं कहते थे। बस कहते कि बेटा बड़ा होकर तुम्हे कुछ अच्छा करना है, मेरी तरह तुम्हें मजदूरी नहीं करनी है। अच्छे से पढ़ोगे तो जीवन में तुम कुछ अच्छा कर सकोगे। इस बात को पापा हमेशा कहा करते थे कि कॉलेज में प्रवेश तो हो गया है लेकिन आगे पढ़ाई-लिखाई की सामर्थ्य मुझमें नहीं है। मैं तुम्हें अच्छी सुविधाएं नहीं दे सकता हूँ।

मुझे भी धीरे–धीरे समझ में आने लगा था कि और कुछ नहीं तो मेरे पापा और माँ तो हमेशा ही मेरी भलाई के बारे में ही सोचते हैं। वे अब मुझपर अपने आप से ज्या़दा भरोसा करते हैं। अब मुझे भरोसे का अर्थ समझ में आया कि आखिरकार किसी के प्रति भरोसा क्यों और कैसे होता है। मुझे भी अब अपने आप पर भरोसा होने लगा था कि मैं भी जीवन में कुछ न कुछ तो जरूर हासिल करूंगा परंतु क्या करूंगा ये तो मुझे पता नहीं था। ईश्वर पर अपनी आस्था होने के कारण बाकी बातों को मैंने नियति पर ही छोड़ दिया। मैंने दृढ़ निश्चय किया कि अब मैं परिणाम की परवाह किए बिना अपनी मेहनत को जारी रखूँगा, मंजिल मुझे जिस ओर ले जाएगी, उसी ओर बढ़ता जाऊंगा। देखते-देखते मैंने इंटरमीडिएट उत्तीर्ण किया, स्नातक एवं अर्थशास्त्र विषय से स्नातकोत्तर की उपाधियाँ प्राप्त की। इसके तुरंत बाद ही प्रथम प्रयास में प्री.पी.एच.डी. परीक्षा भी पास कर ली। इस दौरान मेरा आत्मविश्वास भी बढ़ता गया जिसके परिणामस्वरूप मैंने विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं को पास किया जिसमें मुख्यतः बैंकिंग, बिहार कर्मचारी चयन आयोग इत्यादि द्वारा आयोजित परीक्षाएं शामिल थीं। मैंने पीएच.डी. के लिए भी प्रवेश-परीक्षा उत्तीर्ण की और आज मैं अनुसंधानरत हूँ।

माँ-पापा का मुझमें जो भरोसा था उसके कारण ही मैंने कई तरह के कौशलपूर्ण क्षेत्रों जैसे कंप्यूटर आदि में प्रशिक्षण भी प्राप्त किया। इस भरोसे ने मुझे इतनी शक्ति दी जिससे मैं जीवन में शिक्षा के महत्व को समझ सका। मुझपर किए गए अपने इसी भरोसे की वजह से जीवन में आज एक सम्मानपूर्ण और अच्छा लक्ष्य हासिल कर सका। इस यात्रा में मैं लोगों को याद करता हूँ तो दोस्तों के साथ पास-पड़ोस के लोग और शिक्षण-संस्थानों के शिक्षक आदि का ध्यान हो आता है। संघर्ष भरे वे दिन याद आते हैं जब मेरी दुनिया में खेल और शिक्षा के बीच द्वन्द्व सा चलता रहता था। आज मैं दोनों का सम्मान करता हूँ लेकिन शिक्षा से मिले आत्मविश्वास के लिए मैं अपने ऊपर किए गए माँ-पापा के उस भरोसे को हमेशा याद रखता हूँ जो उन्होंने मुझपर तब किया जब मुझे इसकी सर्वाधिक जरूरत थी। आज भी वह भरोसा सतत कायम है, दृढ़, चट्टान की तरह।

*****

दीघा जगन्नाथ धाम के दर्शन

सुनीता राउत, एमटीएस

बचपन से भक्ति और पूजा-पाठ के माहौल में पली-बढ़ी होने के कारण मैं विभिन्न मंदिरों, तीर्थस्थलों आदि पर दर्शन, पवित्र स्नान आदि के लिए जाती रहती हूँ। अभी हाल ही में पश्चिम बंगाल के पूर्वी मेदिनीपुर जिले में अपने समुद्र तट के लिए प्रसिद्ध दीघा में एक नवीन और भव्य जगन्नाथ मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा हुई है। दो-तीन साल से जब मुझे पता चला है कि दीघा में नया मंदिर बन रहा है तो मैं बहुत उत्साहित थी कि जैसे यह मंदिर श्रद्धालुओं के दर्शन हेतु खुलेगा तो मैं जल्दी से जल्दी दर्शन करने जाऊँगी। मैं पुरी में प्रतिष्ठित जगन्नाथ मंदिर में भी दर्शन कर चुकी हूँ इसलिए बहुत उतावलापन महसूस हो रहा था।

श्रद्धालुओं के दर्शन हेतु मंदिर का उद्घाटन और प्राणप्रतिष्ठा 30 अप्रैल 2025 को पूरी हुई तो मै भी दीघा जगन्नाथ धाम में भगवान जगन्नाथ, उनके भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा के दर्शन के जल्दी से जल्दी करना चाहती थी। मैंने दीघा जाने के लिए कार्यक्रम बनाया।

दीघा जगन्नाथ धाम, भगवान जगन्नाथ को समर्पित एक हिंदू मंदिर है, जो पश्चिम बंगाल के पूर्वी मेदिनीपुर जिले के तटीय शहर दीघा में स्थित है। इस मंदिर में भगवान विष्णु के एक रूप भगवान जगन्नाथ, भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा के साथ विराजमान हैं। यह मंदिर हिंदुओं की वैष्णव परंपरा के लिए पवित्र है और इसे ओडिशा के पुरी स्थित प्रसिद्ध जगन्नाथ मंदिर के आधार पर ही बनाया गया है। समुद्र तट पर पहले से ही स्थित पुराने जगन्नाथ मंदिर के स्थान पर एक नया मंदिर बनाने की बात चल रही थी लेकिन पर्यावरण की समस्या के कारण वहाँ मंदिर नहीं बन सका। बाद में, दीघा रेलवे स्टेशन के बगल में मंदिर निर्माण के लिए भूमि का चयन किया गया। मंदिर में एक भव्य शिखर हैं और यह मंदिर बाहर से मंगाए गए संगमरमर से किया गया है जो खुले आसमान में अलग-अलग समय में बहुत सुंदर लगता है। जैसे कि शाम को अलग सुंदरता, रात में दूधिया लाइट की रोशनी में अलग सुंदरता दिखती है।

जबसे इस मंदिर का निर्माण शुरू हुआ तो पुरी मंदिर के बहुत सारे लोग और बहुत श्रद्धालु खुश नहीं थे, लेकिन मुझे लगता था कि इससे पुरी के जगन्नाथ मंदिर के महत्व पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। मेरा जैसे श्रद्धालु तो दीघा में भी दर्शन करेंगे और पुरी के जगन्नाथ मंदिर में भी दर्शन करने जाएंगे। मैंने तो ये भी सोचा कि जो लोग दीघा के समुद्र तट पर घूमने और नहाने जाते हैं, अब वे भी समय निकाल कर मंदिर में दर्शन के लिए जरूर आएंगे।

मैंने सपरिवार दीघा जगन्नाथ धाम दर्शन के लिए 20 जून 2025 की बस की बुकिंग करवा ली थी। दीघा पहले भी जा चुकी हूँ लेकिन इस बार मन में नया उत्साह था। इस बार भक्तिभाव से सराबोर हम सभी बहुत खुश था। कोलकाता के धर्मतला बस स्टॉप से करीब बारह बजे रात को हमारी दीघा यात्रा प्रारंभ हुईं। दीघा के लिए बस यात्रा चार से पाँच घंटे की आरामदायक यात्रा होती है। रात को मन में दीघा जगन्नाथ धाम के प्रति तरह-तरह के भक्तिभाव उमड़ रहे थे। ऐसा इसलिए था क्योंकि पहली बार हम एक नूतन भव्य मंदिर में दर्शन के लिए जा रहे थे। सुबह पाँच बजे ही बस ने हमें दीघा स्टेशन के बस स्टॉप पर पहुँचा दिया। दीघा पहुंचकर मन में अलग ही प्रसन्नता हो रही थी। घर के लोग भी बहुत खुश थे। हम वहाँ से अपने होटल में गए। चेक इन के बाद सभी ने नाश्ता किया और उसके बाद सबने थोड़ा आराम किया क्योंकि सबका यही मन था कि शाम की मद्धम रोशनी में दीघा जगन्नाथ धाम के दर्शन करेंगे। संयोग बहुत अच्छा था कि बरसात के मौसम में भी हमारी इस यात्रा में बारिश नहीं हुईं। बारिश न होने से हम बेफिक्र होकर वहाँ दर्शन कर सकते थे और घूम सकते थे।

जब से दीघा में इस मंदिर में दर्शन शुरू हुआ है, भक्तों और पर्यटकों की भीड़ और बढ़ गई है। मंदिर सुबह सात बजे से ग्यारह बजे तक शाम को चार बजे से आठ बजे तक ही दर्शनार्थियों के लिए खुलता है। ये बात हमें मालूम थी इसलिए शाम को हम उत्साहपूर्वक समय से निकले। हमारे सामने था, समंदर को स्पर्श करता हुआ भव्य दीघा जगन्नाथ धाम मंदिर। मंदिर में भगवान जगन्नाथ, उनके भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा के दर्शन के लिए हम सब कतारबद्ध हो गए और अपनी बारी का इंतजार करने लगे। ऐसा लग रहा था जैसे हम संगमरमर की दुनिया में आ गए थे। हम इस मंदिर की भव्य बनावट से आश्चर्यचकित रह गए। धीरे-धीरे हमारी बारी आई और हमने श्रद्धापूर्वक मंदिर में भगवान जगन्नाथ, उनके भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा के दर्शन के किए। मन भक्तिभाव में डूब गया। चारों तरफ भक्तों और श्रद्धालुओं के शोर के बीच मुझे बड़ी शांति का अनुभव हो रहा था। मुझे पुरी मंदिर की भी याद हो आई। दर्शन के बाद हम सबने मंदिर प्रांगण से बाहर आकर भव्य मंदिर परिसर की बनावट को देखा। भव्यता और बडे आकार का यह दिव्य-स्थल हमारे मन को श्रद्धापूर्ण बना रहा था। वहाँ से हमने स्थानीय बाजार से कुछ खरीददारी की और बाहर ही खाना खाया और फिर होटल आ गए।

अगले दिन हमने आस-पास के कुछ अन्य मंदिरों का दर्शन किया और शाम को हम दीघा बीच घूमने के लिए गए। खुले, दूर तक फैले हुए सागर को देखकर मन में सहज कौतूहल हो रहा था। यहाँ बहुत सारे लोग आस-पास के शहरों से और देश के अन्य भागों से घूमने के लिए आते हैं। घूमने के बाद हम होटल आ गए। अगले दिन 23 जून 2025 को हमारी वापसी की बस थी। हम वहाँ से कोलकाता वापस आ रहे थे तो मन में जगन्नाथ धाम मंदिर का श्रद्धापूर्ण वातावरण और दीघा के अन्य दृश्य मन पर छाए हुए थे। बस ने हमें धर्मतला बस स्टॉप पर छोड़ा और वहाँ से हम घर वापस आ गए।

*****

जीवन एक यात्रा, शरीर एक वाहन

नीरज कुमार पाण्डेय, सहायक लेखा अधिकारी

शरीर एक वाहन है, आत्मा उसका चालक,
जीवन की राहों पर, चलता है ये रथ नायक
कभी घोड़ा तेज़ दौड़े, कभी धीमा हो जाए,
पर अंत में यह देह, धूल में मिल जाए।

पक्षी उड़ता है नभ में, मछली तैरे जलधार,
हर जीव का अपना मॉडल, अपनी विशिष्ट आकार।
हाथी भारी वाहन है, चींटी सूक्ष्म रथ,
सबका एक ही उद्देश्य - पूर्ण करना जीवन-पथ।

हमने भी पाया यह तन, सोच और चेतना से भरा,
ना केवल जीवित रहने को, पर अनुभव करने की कला।
प्रेम, पीड़ा, प्रश्न और प्रकाश -
ये सब आत्मा के अनुभव का इतिहास।

जानो जानो, खुद को जानो,
तुम अपनी, शक्ति पहचानो।
तुमसे यह संसार बना है,
तुमपे यह संसार टिका है।

जाने न दो, जीवन को तुम, इसी प्रकार,
लाओ बदलाव और करो ज्ञान का विस्तार।
जीवन में कुछ लक्ष्य बनाओ,
उन्हें पाने में जीवन को बिताओ।

जीवन की है, यह एक कहानी,
है सफल, जिसने हार नहीं मानी।
हर मोड़ पर मिलती है नई सीख,
जो जागा भीतर, वही है सही राही और शिक्षार्थी।

तो मत देखो केवल तन को, रूप या गति से माप,
देखो भीतर बैठा राही - जो देता है हर जवाब।
वाहन बदलेगा, मार्ग भी नए होंगे हर बार,
पर जो चलाता है उसे जानना - यही है सच्चा सार।

आपके पत्र

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
त्रिपुरा, कुंजवन, अगरतला- 799 006

संख्याः हिन्दी अनुभाग/ पत्रिका प्रतिक्रिया/2025-26/39 दिनांकः 05.06.2025

सेवा में,

कार्यालय, महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, 2 गवर्नमेंट प्लेस वेस्ट,
कोलकाता, पश्चिम बगांल,
पिन - 700001

विषयः पत्रिका के 30वें अंक की प्राप्ति पर प्रतिक्रिया के संबंध में।

महोदय/ महोदया,

उपर्युक्त विषयांतर्गत उल्लेखनीय है कि आपके द्वारा प्रकाशित हिन्दी गृह-पत्रिका **'(वन्दे मातरम)'** की प्रति प्राप्त हुई है जिसे हम सहर्ष स्वीकार करते हैं। पत्रिका की साज-सज्जा और विन्यास अत्यंत आकर्षक बन पड़ा है जिसके लिए आपको साधुवाद। पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनायें अतीव ज्ञानवर्धनीय, प्रेरक और समयानुकूल तथा प्रासंगिक हैं।

आगे, आपसे यही आशा करते हैं कि आप इसी प्रकार इस पत्रिका का प्रकाशन निरंतर जारी रखेंगे और राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार और बढ़ावा देने में अपनी महती भूमिका द्वारा सदैव सभी को अभिप्रेरित भी करते रहेंगे। इन्हीं कामनाओं के साथ संपादक मण्डल सहित समस्त पत्रिका परिवार को धन्यवाद एवं बहुत-बहुत बधाई।

सादर, धन्यवाद !

भवदीय,

व. लेखापरीक्षा अधिकारी/राभा (परामर्शदाता)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार,
लेखापरीक्षा (II),पश्चिम बंगाल
सीजीओ कॉम्प्लेक्स (5वी मंजिल), डीएफ-ब्लॉक,
सेक्टर-I
सॉल्ट लेक सिटी
कोलकाता - 700 064

Supreme Audit Institution of India
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL,
AUDIT (II),
WEST BENGAL
CGO COMPLEX (5TH FLOOR), DF-BLOCK,
SECTOR-I
SALT LAKE CITY
KOLKATA – 700 064

संख्याः- हिंदी कक्ष/पत्रिका पावती/08 दिनांकः- 17/04/2025
No.H.C./P. P/

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी), पं.ब,
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, 2 गवर्नमेंट प्लेस वेस्ट, कोलकाता-700001
To,
The Assistant Director (O. L)
Office of the Accountant General (A & E), W.B,
Treasury Building, 2 Government place West,
Kolkata-700001

विषय: कार्यालयीन हिंदी गृह पत्रिका 'वन्दे मातरम्' के 30वें अंक के प्रतिभाव प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित **'वन्दे मातरम्' के 30वें अंक की ई-पत्रिका** की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है। साथ ही साथ पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है। कविताएं और लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। इनमें से जो रचनाएँ अति उत्तम लगी वो हैं- अंडमान यात्रा, अनोखी दोस्ती, विकास, मित्रता तथा उजाले की ओर आदि।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्जवल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिये बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय,

सहायक निदेशक (राजभाषा)/ हिंदी कक्ष

Phone: (033) 2337-4916; FAX: (033) 2334-7854, E-mail: agauwestbengal2@cag.gov.in

---

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
(केन्द्रीय व्यय),
ऑडिट भवन, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट,
नई दिल्ली–110002

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL
OF AUDIT (CENTRAL EXPENDITURE),
AUDIT BHAWAN, INDRAPRASTHA ESTATE,
NEW DELHI-110002

सं.रा.भा.अ/2-9/प्रशंसा पत्र/2024-25/195 दिनांक: 16.07.2025

सेवा में

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक.)
पश्चिम बंगाल, ट्रेजरी बिल्डिंग, 2 गवर्नमेंट प्लेस वेस्ट,
कोलकाता, पश्चिम बंगाल – 700 001.

विषय- हिन्दी गृह पत्रिका "वन्दे मातरम्" के 30वें अंक के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय के ई-मेल दिनांक 08.04.2025 द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा हिंदी ई-पत्रिका के **"वन्दे मातरम्"** के 30वें अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट आरती वर्मा का "डिजिटल अरेस्ट-एक कॉल का खेल", तापसी आचार्य का "दारू ब्रह्म", सुभाष चंद्र मंडल का "क्या हफ्ते में 70 घंटे काम करना सेहतमंद है?", अनिल कुमार का "प्रेरणा की स्याही" एवं सचिन प्रसाद का "सोशल मिडिया: बच्चों के संदर्भ में" बहुत ही ज्ञानवर्धक लेख है।

इसके अतिरिक्त सत्यम कुमार की "जिंदगी का तो यही आलम है" एवं संध्या कुमारी की "ये नववर्ष हमें स्वीकार नहीं" कविता पठनीय हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक–मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय

सहायक निदेशक (राजभाषा)

दूरभाष /Telephone :91-11-23702422, फैक्स / Fax : 91-11-23702271, ई-मेल /E-mail : dgace@cag.gov.in

---

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), तमिलनाडु,
361, अन्ना सलाई, तेनामपेट, चेन्नई- 600 018
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A & E), TAMILNADU,
361, ANNA SALAI, TEYNAMPET, CHENNAI- 600 018
वेबसाइट/Website: https://cag.gov.in/ae/tamil-nadu ई-मेल/Email: agaetamilnadu@cag.gov.in
IVRS Phone No.: 044-24325050, टेलीफ़ोन नं/Phone No.: 044-24324500, फैक्स नं/Fax No.: 044-24320562

सं. हिंदी कक्ष/ Hindi Cell /प्र.प./A.L/2024-25/2514 दिनांक: 25.04.2025

सेवा में, सहायक निदेशक (राजभाषा) कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी), पश्चिम बंगाल, ट्रेजरी बिल्डिंगस, 2 गवर्नमेंट प्लेस वेस्ट, कोलकाता - 700001	To, Assistant Director (Official Language) Office of the Accountant General (Accounts & Entitlement), West Bengal, Treasury Buildings, 2 Government Place West, Kolkata - 700001

विषय: आपकी पत्रिका हेतु प्रतिभाव पत्र – संबंधी

महोदय/ महोदया,

आपके कार्यालय की अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका 'वंदे मातरम्' के 30वें अंक की ई-प्रति इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्त हुई है। पत्रिका में सम्मलित सभी रचनाएँ सराहनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिंदी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। इस अंक में प्रकाशित डिजिटल अरेस्ट - एक कॉल का खेल, हिंदी, शारदा सिन्हा - लोक गीतों की सरस्वती, मानवाधिकारों की महत्ता, सोशल मीडिया के प्रभाव, मित्रता, मेरा गाँव का सफर, बेबस बाप, वंदे मातरम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार में विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सृजनात्मक मंच प्रदान करने में आपकी इस पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया,

सहायक निदेशक (राजभाषा)

आपके पत्र

हिंदीकक्ष/समीक्षा/4-10/2023-24/ I/973545/2025

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) पंजाब एवं
यू.टी., सेक्टर-17ई, चंडीगढ़ -160017
OFFICE of ACCOUNTANT GENERAL (A & E) PUNJAB &
U.T., Sector-17E, CHANDIGARH - 160017
फोन (Phone): 0172- 2702906, 2703117
2709576, फैक्स – 0172 - 2702286
ई-मेल(E-mail)- agaepunjab@cag.gov.in

सं.- हिंदी कक्ष/पत्रिका समीक्षा/2-10/24-25/ 64 दिनांक- 14. 05.2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
ट्रेजरी बिल्डिंग, 2, गवर्मेंट प्लेस (वेस्ट),
पश्चिम बंगाल, कोलकाता- 700001

विषय - हिंदी गृह पत्रिका 'वंदे मातरम' के 30वें अंक की समीक्षा ।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका **'वंदे मातरम' के 30वें** अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अति मनोहर एवं आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र भी अति मनमोहक हैं।

पत्रिका में श्री कौशल कुमार, सहायक लेखा अधिकारी की रचना **चाह मुस्कुराहट की,** श्री चंद्रशेखर भगत, पर्यवेक्षक की रचना **'दो कविताएं'**, तथा श्री राकेश भारती की रचना **'जल संरक्षण शपथ ग्रहण'** विशेष रुप से प्रशंसनीय है।

पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने हेतु संपादकीय परिवार ने पूर्ण प्रयास किए है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

यह पत्र उप महालेखाकार (प्रशा.) महोदया के अनुमोदन से जारी है।

भवदीय

Digitally signed by
Rakesh Ranjan Mishra
Date: 14-05-2025
सहायक निदेशक (राजभाषा)

1

File No. हिंदीकक्ष/समीक्षा/4-10/2023-24/ (Computer No. 276756)
Generated from eOffice by RAKESH RANJAN MISHRA, RRM(AD-OL-RBH), ASSISTANT DIRECTOR (OFFICIAL LANGUAGE), AG-(A&E)-PUNJAB on 14/05/2025 12:29 pm

---

हि.अ./ले.प./प्रतिभाव/2021-22/37 I/959351/2025

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
बिहार
वीरचंद पटेल मार्ग, पटना 800001

Indian Audit & Accounts Department
Office of the Principal Accountant General (Audit)
Bihar
Birchand Patel Marg, Patna-800001.

पत्रांक-हि.अ./ले.प./प्रतिभाव/2021-22/37/ दिनांक- .05.2025

सेवा में,

सहायक निदेशक(राजभाषा)
महालेखाकार(लेखा एवं हक),पश्चिम बंगाल,
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, 2, गवर्मेंट प्लेस(पश्चिम),कोलकाता-700001

विषय : ई-पत्रिका "वन्दे मातरम्" के 30वें अंक का प्रतिभाव।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित अर्ध वार्षिक गृह पत्रिका "वन्दे मातरम्" के 30वे अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ हार्दिक आभार। पश्चिम बंगाल के सुप्रसिद्ध सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक आयोजन - गंगासागर मेला को प्रतिबिंबित करती हुई पत्रिका का मुखपृष्ठ पाठकों को पहली नजर में आकर्षित करती है। श्री अरुण कुमार जी का आलेख "हिंदी" एक भाषा के रूप में हिंदी के विकास से लेकर राजभाषा हिंदी बनने के सफर को बखूबी आरेखित करता है।

पत्रिका में संकलित अन्य रचनाएँ यथा श्री आशीष कुमार जी की "मानवाधिकारों की महत्ता", "सुस्मिता सरकार की आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की चुनौतियाँ" रेवती रंजन पोद्दार जी की "चलो एक बार फिर से", सुश्री तापसी आचार्य(बसाक) जी की "दारू ब्रह्म" तथा श्री अतुल कुमार जी की "क्या हफ्ते में 70 घंटे काम करना सेहतमंद है?" नाना प्रकार के विषयों पर आधारित सुरूचिपुर्ण रचनाएं है।

कविता खंड में श्री चंद्रशेखर भगत जी की "दो कविताएं" अनुठी और प्रशंसनीय है।

सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोतर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

भवदीय,

Digitally signed by
Shankara Nand Jha
Date: 02-05-2025
16:51:29
ASSISTANT DIRECTOR
सहायक निदेशक(राजभाषा)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) मेघालय, शिलांग
एम.जी.रोड, सचिवालय हिल्स, गवर्नर हाउस के सामने, पिन-793001

OFFICE OF THE PR. ACCOUNTANT GENERAL (A&E) MEGHALAYA, SHILLONG
MG Road, Secretariat Hills, Opposite to Governor House, PIN-793001

संख्या/हिंदीप्रकोष्ठ/35/पत्रिका से संबंधित सराहना/2021/111 दिनांक:23.06.2025

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (प्रशासन हिंदी सेल),
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक)
पश्चिम बंगाल, कोलकाता - 700 001.

विषयः- अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका - **'वंदे मातरम्'** के 29वें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय/ महोदया,

उपर्युक्त विषय पर पत्र सं. पीएजी.ए.ई. डब्ल्यू.बी./02/05/वं.मा./14/2024-25/177 दिनांक 15.10.2024 द्वारा आपके कार्यालय की अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका - **'वंदे मातरम्'** के 29वें अंक की ई-प्रति इस कार्यालय को प्राप्त हुई है, एतद् धन्यवाद। पत्रिका का बाह्य आवरण बहुत ही सुन्दर एवं आकर्षक है। पत्रिका में प्रकाशित समस्त लेख एवं रचनाएं ज्ञानवर्धक, प्रेरक एवं सराहनीय है। पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल, लेखकों एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई।

आपके अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका - **'वंदे मातरम्'** के अग्रिम अंक तथा इसके निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया,

सहायक निदेशक (राजभाषा)

स/हिंदीअनुभाग/वाह्यपत्रिकाओंपरप्रतिक्रिया//2022-23 I/944736/2025

कार्यालय- महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र, नागपुर
O/o the Accountant General (Audit)-II, Maharashtra, Nagpur-440001

सं.हिंदी अनुभाग/प्रतिक्रिया/20/2025-26/जा.क्र. दिनांक: 17/04/2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय- महालेखाकार (ले. एवं हक.)
पश्चिम बंगाल, कोलकाता-700001

विषय:- हिंदी वार्षिक पत्रिका "वंदे मातरम्" के 30वें अंक की प्रतिक्रिया के संबंध में ।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "वंदे मातरम्" के 30वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद । पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं, उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर निम्नलिखित रचनाएँ उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं ।

क्रं	नाम एवं पदनाम (श्री/सुश्री)	रचनाएँ
1.	जितेंद्र शर्मा, स.ले.अ.	हमारा नया संसद भवन
2.	अरुण कुमार, सहायक निदेशक (राजभाषा)	हिंदी
3.	सुमित कुमार बर्णवाल, एम.टी.एस.	सोशल मीडिया के प्रभाव
4.	अंकित कुमार झा, लेखाकार	नोटिफ़िकेशन

पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

(वरिष्ठ उप महालेखाकार/ प्रशासन के अनुमोदन दिनांकित 17 /04/2025 से जारी)

भवदीया,

Digitally signed by
Priyanka B. Goswami
Date: 17-04-2025
12:55:01
सहायक निदेशक (राजभाषा)

'लेखापरीक्षा भवन', डाक थैली क्र.220, सिविल लाइंस, नागपुर – 440001 'Audit Bhavan', Post Bag No.220, Civil Lines, Nagpur - 440001

दूरभाष/Telephone - 0712-2564506 to 2564508 Website : cag.gov.in/ag/nagpur/en e-mail : agaumaharashtra2@cag.gov.in

ऐतिहासिक ट्रेजरी बिल्डिंग्स के एजी बंगाल कार्यालय परिसर में भारतीय लेखापरीक्षा & लेखा विभाग के प्रमुख भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री के. संजय मूर्ति, विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ।

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता– 700 001